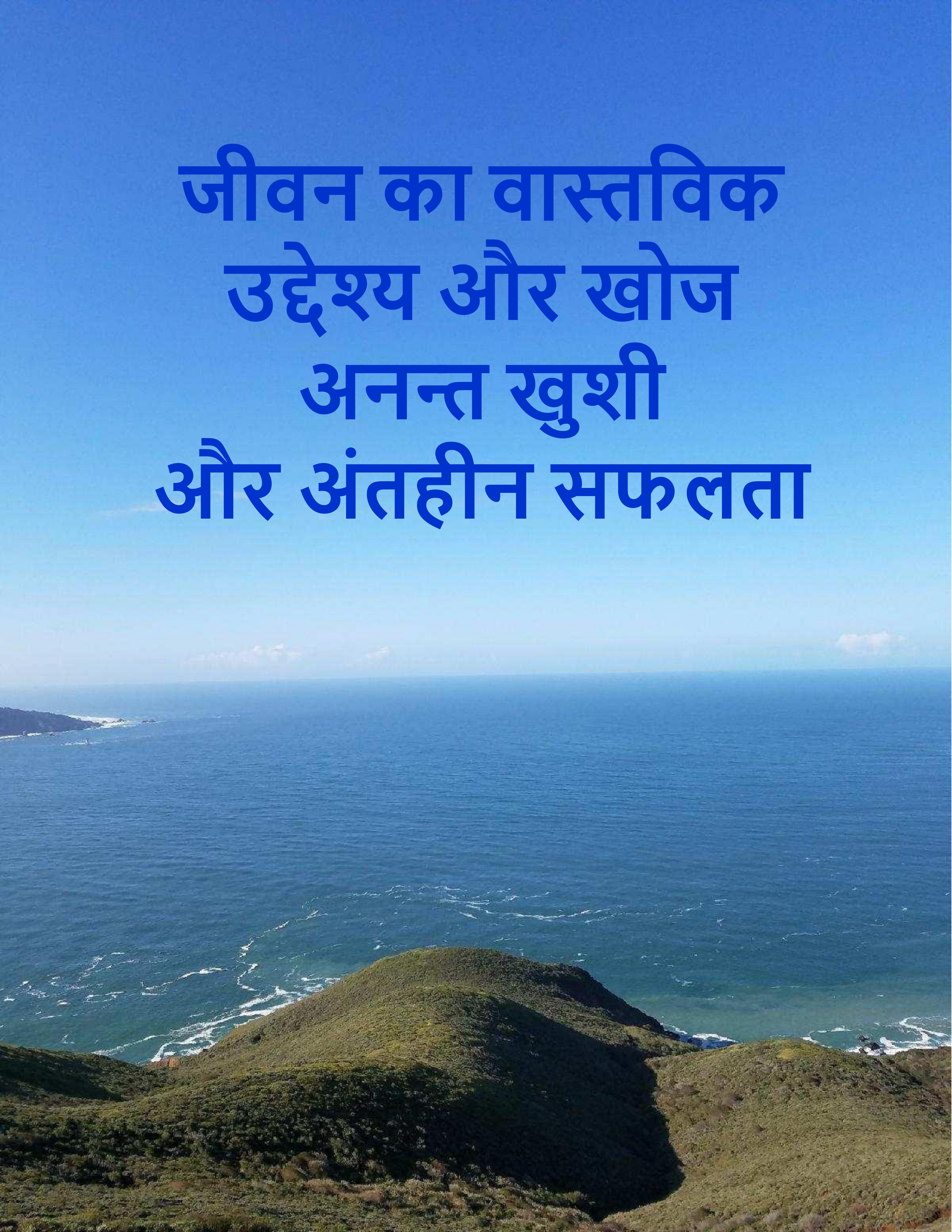
जीवन का वास्तविक उद्देश्य और खोज अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता



जीवन का वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की खोज

संपूर्ण मानव सभ्यता के महानतम विचारकों और पुनरुद्धारियों में से एक - इमाम अबू हमीद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (1058-1111 ई.) के कालातीत कार्यों से संकलित

पहला संस्करण: सितंबर 2017
दूसरा संस्करण: जून 2021

पावती

डॉ. मुहम्मद अहमद हाशमी (1929 - 2014 ई.) को इमाम ग़ज़ाली के ज्ञान और आध्यात्मिकता के कालातीत खजाने से इस ग्रंथ के संकलन को प्रेरित करने और मार्गदर्शन करने के लिए, जो मानवता के प्रति उनके प्रेम और इसकी भलाई और लाभ की उत्कट इच्छा से उत्पन्न होता है।

سَنُرِيهِمْ ءَايَـٰتِنَا فِى ٱلْـَٔافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ
يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ

"हम उन्हें ब्रह्मांड के सबसे दूर तक और उनकी अपनी आत्माओं के भीतर अपने संकेत दिखाएंगे, जब तक कि यह उनके सामने स्पष्ट रूप से प्रकट न हो जाए कि यह सत्य है।

(कुरान, अध्याय 41, श्लोक 53)

सामग्री

सारांश

अनादि काल की शुरुआत से, मानवता अपने अस्तित्व और उद्देश्य के मूलभूत प्रश्नों से जूझ रही है। "मैं कौन हूँ?", "मैं कहाँ से आया हूँ?", "मैं कहाँ जा रहा हूँ?", "मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है?", और "सच्ची अनन्त खुशी और सफलता क्या है?" जैसे प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर नहीं मिले हैं। आंतरिक शांति जिसे प्राप्त करने के लिए कोई तरसता है, अस्तित्व के इन मूलभूत प्रश्नों के आसपास के रहस्य को खोलने के लिए इधर-उधर घूमता है। इन प्रमुख प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास पूरे मानव इतिहास में किया गया है, लेकिन सत्य की खोज को पूरी तरह से संतुष्ट करने की सीमा तक नहीं, जिस पर मनुष्य के आंतरिक और बाहरी अस्तित्व की भलाई निर्भर है।

यह ग्रंथ अस्तित्व के इन मूलभूत प्रश्नों के उत्तर देने के लिए एक मार्ग प्रदान करता है, स्पष्टीकरण से शुरू होता है लेकिन निश्चितता की आंतरिक आंख के साथ अनुभव के माध्यम से सभी को आंतरिक बोध के लिए आमंत्रित करने के साथ समाप्त होता है, और उस प्रक्रिया में, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के मार्ग को रोशन करता है। इसके अतिरिक्त, यह ग्रंथ स्वाभाविक रूप से इस्लाम पर प्रवचन में जुड़ा हुआ है, जो आधुनिक समय में अपनी विशाल आध्यात्मिक शिक्षाओं, सामान्य प्रचलित भौतिकवाद, और सच्चे ज्ञान और आध्यात्मिक महत्वाकांक्षा की कमी या अनुपस्थिति के कारण अपने अनुयायियों की सामान्य अज्ञानता के कारण केवल एक अनुष्ठानिक बाहरी स्तर तक कम हो गया है। इस स्थिति का परिणाम नीचे की ओर प्रक्षेपवक्र है, जो मानव उपलब्धि के शिखर के लिए प्रयास करने के अपने वास्तविक संदेश की सुंदरता को अस्पष्ट करता है। इसे केवल उन ऊंचे आदर्शों पर वापस जाकर ही उलटा किया जा सकता है जो पूरी मानवता के लिए स्थापित किए गए थे। पूरी मानवता को लाभ पहुंचाने के लिए आशाओं, आकांक्षाओं और आत्माओं को ऊपर उठाने के लिए प्रवचन के इस स्तर को उसके उच्चतम स्तर तक बढ़ाना अनिवार्य है, जहां यह वास्तव में है।

यह ग्रंथ, इस्लाम के बेहतरीन प्रतिपादकों में से एक और पूरी मानवता के लिए इसकी आध्यात्मिक शिक्षाओं से प्रेरित है, जो मानव जाति का एक रत्न है, इस्लाम और उसकी आध्यात्मिक शिक्षाओं पर प्रवचन को उठाता है जहां वे हैं - मानव उपलब्धि के उच्चतम संभव स्तर तक - आध्यात्मिक उदगम के शिखर तक, जो बदले में शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय की ओर ले जाता है। सांसारिक संसाधन सीमित हैं, जिससे उनके अधिग्रहण, शत्रुता और परिणामी मानवता के सामने आने वाली उथल-पुथल के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा होती है। हालाँकि, दिव्य प्रेम का सागर, जो अपने प्राप्तकर्ताओं की आध्यात्मिक उत्कृष्टता में प्रकट होता है, अपनी विशालता से एक बूंद को कम किए बिना, हर समय के लिए मानवता की पहली और आखिरी की आंतरिक जरूरतों को पूरा करता है। जिस तरह आकाश को रत्ती भर भी कम नहीं होता जब पूरी मानवता सुखदायक राहत और शांति पाने के लिए उसे देखती है, उसी तरह दिव्य उदारता के सागर से रत्ती भर भी कम नहीं होती है, जहां से शाश्वत सुख और अंतहीन विजय की नदियाँ बहती हैं, यदि पूरी मानवता अपनी पूरी क्षमता से इसका हिस्सा ले।

यह ग्रंथ पाठकों को महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाने और मानव उपलब्धि के शिखर की ऊंचाइयों तक पहुंचने की चुनौती देता है, जीवन में सच्चे उद्देश्य और दिशा की कमी के कारण निराशा और कम उपलब्धि की गहराई में डूबने के बजाय, सांसारिक के प्रति अवचेतन समर्पण और सामान्य के साथ संतोष। यह ग्रंथ, अपनी प्रगति के रूप में तीव्रता में प्रकट होता है, मनुष्य की संभावित और वास्तविक क्षमता और मूल्य की कला को दर्शाता है, जो बदले में अमर अनंत काल के जीवन में शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाता है। मानव शरीर, मन और बुद्धि की सीमाएं, समय और स्थान के आयामों की बाधाओं में फंसी हुई हैं, इसके दिल और आत्मा की ऊंचाई से, एक बार इसे पकड़ने वाली बेड़ियों से मुक्त होने के बाद, मुआवजे से अधिक हैं। यह ग्रंथ व्यक्ति को शाश्वत सुख और कभी न खत्म होने वाली सफलता के अथाह सागर की ओर ले जाता है, जो व्यक्ति को शाश्वत आनंद के मार्ग पर मजबूती से आगे बढ़ाता है, जागरूकता और आध्यात्मिक रोशनी के नए पहले से अज्ञात रास्ते खोलता है और शाश्वत सत्य के उदय में परिणत होता है। यह उस विषय के एक मास्टर लेखक के रत्नों के माध्यम से पूरा किया जाएगा जिसे पूरी मानव सभ्यता ने कभी भी उत्पादित किया है।

प्रस्तावना

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु

इस प्रदर्शनी का उद्देश्य मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जानना है, उस उद्देश्य को कैसे प्राप्त किया जाए, और किसी के जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के प्रयास के लाभों को जानना है। यह जानना महत्वपूर्ण है क्योंकि ये प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। इन प्रमुख प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए, हम पूरे मानव इतिहास के सबसे महान विचारकों, पुनरुद्धारियों और आध्यात्मिक मार्गदर्शकों में से एक - इमाम अबू हमीद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (1058-1111 ईस्वी) की पुस्तकों पर भरोसा करेंगे, जिन्हें अल-ग़ज़ाली के नाम से जाना जाता है।

इस प्रदर्शनी के तीन भाग हैं।

पहला भाग प्रश्नों से संबंधित है: हमारे जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? शाश्वत सुख क्या है? वास्तविक अनन्त सफलता क्या है? दोनों के बीच आपसी संबंध क्या है?

दूसरा भाग आंतरिक आध्यात्मिक पथ से संबंधित है जिसे हमें अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत आनंद को प्राप्त करने के लिए यात्रा करने की आवश्यकता है।

तीसरा भाग हमारे जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत आनंद की प्राप्ति के बारे में अधिक जानकारी और विस्तृत अध्ययन के स्रोतों से संबंधित है ताकि हम अपने जीवन के उद्देश्य और शाश्वत आनंद की प्राप्ति और प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकें।

<u>पहला भाग: मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य की व्याख्या और शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय की प्राप्ति</u>

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर को जानना है और इसके माध्यम से, ईश्वर के "*मारिफा*" या ज्ञानवाद को प्राप्त करना और उसके साथ एक घनिष्ठ आत्मिक संबंध विकसित करना है। केवल उसी के माध्यम से, एक मनुष्य शाश्वत आनंद, अर्थात्, शाश्वत सुख और अनंत विजय प्राप्त कर सकता है। यह प्रदर्शनी कुछ प्रारंभिक स्पष्टीकरणों के बाद यह पता लगाने के लिए कि ऐसा कैसे और क्यों है, इसमें गहराई से गोता लगाएगा।

क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

वा मा खलक्तु अल-जिन्ना वा अल-इंसा इल्ला ली याबुद्न

"मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल मेरी पूजा करने के लिए बनाया है। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

अब्दुल्ला बिन अब्बास (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो), पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के एक महान साथी, जो पैगंबर के साथियों में कुरान के सबसे महान विद्वानों में से एक थे, ने समझाया कि इस आयत में "*ली याबुदून*" या "मेरी पूजा के लिए" शब्द का अर्थ है "ली *यारिफून*" या "मेरे ज्ञान के लिए"। कुरान की इस आयत की यह व्याख्या, अन्य पुस्तकों के बीच, कुरान की प्रसिद्ध शास्त्रीय व्याख्या में पाई जा सकती है जिसे "*तफ़सीर जलालेन*" कहा जाता है। दूसरे शब्दों में इस पद का अर्थ है कि मनुष्य के सृजन का उद्देश्य ईश्वर को जानना, ईश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करना, ईश्वर की ज्ञान ("मारिफा") प्राप्त करना, और ईश्वरीय अंतरंगता और निकटता के उच्च आध्यात्मिक स्टेशन तक पहुंचना है। जब कोई इस उच्च आध्यात्मिक स्थान पर पहुंचता है, तो वह कभी न खत्म होने वाला धन, सच्ची आंतरिक शांति, हृदय का आराम, वास्तविक स्थायी सफलता और एक शाश्वत जीवन प्राप्त करता है जो कभी समाप्त नहीं होता है, दूसरे शब्दों में, वह शाश्वत आनंद प्राप्त करता है। तो यह शाश्वत आनंद (या शाश्वत खुशी) की परिभाषा है और इसे प्राप्त करने का तरीका ईश्वर को जानना और ईश्वर की सूक्ति ("*मारिफा*") को प्राप्त करना है। यह शाश्वत आनंद इस जीवन में शुरू होता है और इसकी पूर्णता और पूर्णता, मनुष्य को अमर बनाने वाले शाश्वत जीवन के रूप में, इस जीवन के बाद के जीवन में होती है।

आध्यात्मिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया जो इस्लाम का वास्तविक उद्देश्य है, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की निम्नलिखित परंपरा द्वारा समझाया गया है, जो "*हदीस*" या सहीह बुखारी *और* सहीह मुस्लिम *के रूप में जाने जाने वाले पैगंबर कथनों के संग्रह* से है:

उमर (ईश्वर उस पर प्रसन्न हो जो पैगंबर मुहम्मद के सहायक और सहयोगी थे): "एक दिन जब हम ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ बैठे थे, तो हमारे सामने एक व्यक्ति प्रकट हुआ जिसके कपड़े बहुत सफेद थे और जिसके बाल अत्यधिक काले थे; उस पर यात्रा के कोई निशान नहीं दिख रहे थे और हममें से कोई भी उसे नहीं जानता था। वह ऊपर चला गया और पैगंबर के पास बैठ गया। अपने घुटनों को अपने घुटनों पर टिकाते हुए और अपने हाथों की हथेलियों को अपनी जांघों पर रखते हुए, उन्होंने कहा: 'हे मुहम्मद, मुझे इस्लाम के बारे में बताओ'। ईश्वर के दूत ने कहा: '*इस्लाम इस* बात की गवाही देने के लिए है कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है और मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, प्रार्थना करने के लिए, जकात का भुगतान *करने* के लिए (जरूरतमंदों की आर्थिक मदद करने के लिए), रमजान के महीने में उपवास करने के लिए, और यदि आप ऐसा करने में सक्षम हैं तो घर [भगवान के घर यानी, मक्का में पवित्र पवित्रस्थान] की तीर्थयात्रा करने के लिए। उसने कहा, "तुमने ठीक कहा है", और हम उस पर चकित रह गए कि उसने (पैगंबर) से पूछा और कहा कि उसने सही बात की है। उसने कहा, 'तो फिर मुझे ईमान के बारे में बताओ। उन्होंने (पैगंबर) ने कहा: 'यह ईश्वर, उसके स्वर्गदूतों, उसकी पुस्तकों, उसके दूतों, अंतिम दिन पर विश्वास करना है, और ईश्वरीय नियति में विश्वास करना है, दोनों अच्छे और बुरे दोनों। उन्होंने कहा, 'आपने सही कहा है। उसने कहा: 'तो फिर मुझे एहसान के बारे में बताओ। उन्होंने (पैगंबर) ने कहा: "यह ईश्वर की पूजा करने के लिए है जैसे कि आप उसे देख रहे हैं, और जब तक आप उसे नहीं देखते हैं, फिर भी वास्तव में वह आपको देखता है। फिर उसने खुद को उतार लिया और मैं कुछ देर रुका रहा। फिर उन्होंने (पैगंबर) ने कहा: "हे उमर, क्या आप जानते हैं कि प्रश्न पूछने वाला कौन था? मैंने कहा: 'भगवान और उसके दूत सबसे अच्छी तरह जानते हैं'। उन्होंने (पैगंबर) ने कहा: 'वह *जिब्राएल* (महादूत जिब्रियल) थे, जो आपको अपना धर्म सिखाने के लिए (यानी मानव रूप में) आपके पास आए थे। (यह परंपरा से ली गई है *हदीस* [या पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं] संग्रह जिसे "*सहीह मुस्लिम*" कहा जाता है)।

इस्लामी विद्वानों के अनुसार, यह घटना पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मृत्यु से पैंतालीस दिन पहले हुई थी। उस समय तक, पूरे कुरान (इस्लाम की पवित्र पुस्तक जिसे ईश्वर द्वारा पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) का ईश्वरीय रहस्योद्घाटन 23 वर्षों की अवधि में पूरा हो गया था और कुरान की प्रसिद्ध आयतें यह कहते हुए प्रकट हुई थीं:

ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًا

"आज, मैंने आपके लिए दीन (यानी, ईश्वर का मार्ग) पूरा कर लिया है, आप पर अपना एहसान पूरा कर लिया है, और इसे (यानी, ईश्वर के मार्ग) 'इस्लाम' नाम दिया है। (कुरान, अध्याय 5, श्लोक 3)। इतिहास के इस मोड़ पर ईश्वरीय आज्ञा के साथ महादूत गेब्रियल का आगमन, यह सिखाने के लिए कि इस्लाम के तीन स्तर हैं जिन्हें इस्लाम या ईश्वर के प्रति समर्पण, *ईमान* या ईश्वर में विश्वास, और *ईश्वर का एहसान* या सूक्ति ("*मारिफा*") कहा जाता है, महत्वपूर्ण महत्व का है। *पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की* इस हदीस या परंपरा में, जिसे "*गेब्रियल की हदीस (पैगंबर कथन)" के रूप में भी जाना जाता है, महान मुस्लिम विद्वानों की व्याख्या के अनुसार, ईश्वर ने महादूत गेब्रियल (या* जिब्राएल) के माध्यम से पैगंबर मुहम्मद को बताया *कि इस्लाम में निम्नलिखित तीन स्तर हैं:*

एक. **इस्लाम:** इस्लाम के पहले स्तर को "इस्लाम" भी कहा जाता है और इसका संबंध शरीर से है और यह हमारे बाहरी जीवन को संचालित करने के लिए इस्लाम की शिक्षाओं का पालन करने को संदर्भित करता है, अर्थात, पूजा के बाहरी कार्य, लोगों के साथ व्यवहार, व्यक्तिगत और सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारियां, नैतिक और नैतिक शिक्षाएं आदि, सभी चीजें जो बाहरी आंखों से देखी जा सकती हैं। इस स्तर को इस्लाम का क्षैतिज आयाम माना जाता है और यह इस्लामी आस्था की नींव है।

दो. **ईमान**: इस्लाम के दूसरे स्तर को "*ईमान*" या <u>ईश्वर और विश्वासों में विश्वास और निश्चितता कहा जाता है</u> और इसका संबंध दिल से है और यह उन मान्यताओं को संदर्भित करता है जो एक मुसलमान को ईमानदारी से ज्ञान प्राप्त करके और इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करके जीवन के सभी मामलों में ईश्वर और उसके मार्गदर्शन में अपनी निश्चितता बढ़ाने के प्रयास के साथ-साथ ईश्वर में किसी के विश्वास को गहरा करने के लिए होना चाहिए जब तक कि ईश्वर में किसी के विश्वास को गहरा न किया जा सके परमेश्वर और उसके मार्गदर्शन के बारे में कोई संदेह नहीं बचा है। इस स्तर को इस्लाम का ऊर्ध्वाधर आयाम माना जाता है जो इस्लाम को इसकी ऊंचाई देता है।

तीन. **इहसान**: इस्लाम के तीसरे स्तर को "*ईहसान*" या <u>आध्यात्मिकता</u> कहा जाता है जो पैगंबर मुहम्मद के शब्दों का प्रतीक है: "ईश्वर की पूजा ऐसे करें जैसे कि आप उसे देखते हैं, और जब तक आप उसे अभी तक नहीं देखते हैं [एक जीवित शाश्वत चेतना है कि] वास्तव में वह आपको देखता है" और इसका संबंध आत्मा से है। इसका अर्थ यह है कि एक पूर्ण या सिद्ध मुसलमान या तो अपनी आत्मा की आंखों से ईश्वर की गवाही देने की स्थिति में है या [यदि कोई ऐसी उच्च आध्यात्मिक स्थिति तक पहुंचने में सक्षम नहीं है] तो वह सतत चिंतन की स्थिति में है कि वह हमेशा के लिए ईश्वर की दृष्टि में है। यह आध्यात्मिकता क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, ईर्ष्या, अहंकार, लालच, अन्याय, अधीरता, अहंकार, जातिवाद, कट्टरता, अतिवाद, आत्म-धार्मिकता, प्रतिशोध, कठोरता, अज्ञानता, कायरता, मनोरंजक बुरे विचारों, यश/नियंत्रण/शक्ति की लालसा, और सभी नकारात्मक लक्षणों और प्रवृत्तियों जैसे सभी बुरे गुणों से छुटकारा पाकर किसी की आत्मा को सुशोभित करने के ठोस प्रयासों के माध्यम से प्राप्त की जाती है; और प्रेम, धैर्य, कृतज्ञता, क्षमा, दया, करुणा, उदारता, विनम्रता, ईश्वर और सभी मनुष्यों के प्रति उनकी जाति, धर्म और राष्ट्रीयता के बावजूद, ईश्वर में विश्वास, ईश्वरीय

स्मरण, आंतरिक शुद्धता, सभी सकारात्मक लक्षण और प्रवृत्तियों को विकसित करके अपनी आत्मा को सुशोभित करना, परिणामस्वरूप ईश्वर के साथ एक अंतरंग संबंध विकसित करना और जीवन के सभी मामलों में ईश्वरीय सुरक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त करना।

इस स्तर को इस्लाम का तीसरा आयाम माना जाता है जो इस्लाम को इसकी गहराई और सुंदरता देता है। यह इस्लाम का उच्चतम स्तर है जिस तक पहुंचने के लिए व्यक्ति अपनी आत्मा के भीतर अंधेरे को पूरी तरह से समाप्त करके पूर्ण मानव क्षमता का एहसास करने का प्रयास करता है और परिणामस्वरूप ज्ञान का दिव्य प्रकाश प्राप्त करता है जिसमें जीवन के सभी सवालों के जवाब मिलते हैं जैसे कि "मैं कौन हूं?", "मैं कहां से आया हूं?", "मैं कहाँ जा रहा हूँ?", "जीवन का उद्देश्य क्या है?", "भगवान ने सब कुछ क्यों बनाया?", और "वास्तव में सच्ची खुशी और सफलता क्या है?"। यहीं पर ईश्वर के सच्चे साधक ईश्वर-प्राप्ति की स्थिति प्राप्त करते हैं, अर्थात ज्ञान, जो आध्यात्मिक उपलब्धि का शिखर है, जिसके परिणामस्वरूप पूर्ण आंतरिक शांति और एक अंतहीन आनंद प्राप्त होता है। दिलचस्प बात यह है कि इस्लाम का यह उच्चतम स्तर भी सबसे कम समझा जाता है।

इस्लाम के पहले स्तर का उद्देश्य, जिसे "*इस्लाम*" या "ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण" के रूप में भी जाना जाता है, एक व्यक्ति को शरीर या किसी के बाहरी अस्तित्व से संबंधित ईश्वर की पूजा और भक्ति के बाहरी कार्यों के माध्यम से ईश्वर के मार्ग पर लाना है। इस्लाम का दूसरा स्तर, जिसे "ईमान" या "ईश्वर में विश्वास और निश्चितता" के रूप में जाना जाता है, हृदय की निश्चितता और निश्चितता से संबंधित है। जब कोई व्यक्ति ईमानदारी से ईश्वर की पूजा करता है, उसके मार्ग का ज्ञान प्राप्त करता है, और ईश्वरीय पूजा में प्रयास करता है, तो ईश्वर के अस्तित्व में निश्चितता उसके हृदय में गहराई तक डूबने लगती है, जिसके परिणामस्वरूप हृदय में विश्वास की मिठास उत्पन्न होती है जो ईश्वर में एक अटल निश्चितता में बदल जाती है और इस प्रकार ईश्वर और उसके मार्गदर्शन में सभी संदेहों को दूर कर देती है। ईश्वर के इस मार्ग पर आगे बढ़ते हुए, कोई इस्लाम के तीसरे, उच्चतम और सबसे बड़े स्तर तक पहुंचता है, जिसे "ईहसान" के रूप में जाना जाता *है*, जिसे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा वर्णित किया गया है, "ईश्वर की पूजा करना जैसे कि आप उसे देखते हैं और यदि आप उसे नहीं देखते हैं तो [एक जीवित सतत जागरूकता है कि] वह वास्तव में आपको देखता है"। इसका मतलब है कि एक आध्यात्मिक यात्री, जिसने इतना ऊंचा आध्यात्मिक स्थान प्राप्त किया है, वह या तो "*मुशहादा*" या "*मुराकाबा*" की स्थिति में है। "*मुशहद*" या "ईश्वर की गवाही" का अर्थ "ईश्वर के अस्तित्व की गवाही" नहीं है क्योंकि इस तरह की गवाही जीवन के बाद के जीवन में होगी, जैसा कि ईश्वरीय पुस्तक द्वारा पर्याप्त रूप से कहा गया है, लेकिन इस सांसारिक जीवन में, "ईश्वर की गवाही" का अर्थ है "ईश्वर के गुणों और कार्यों को देखना"। ईश्वर के ऐसे गुण और कार्य इस ब्रह्मांड के प्रत्येक परमाणु के माध्यम से और उससे परे और "अस्तित्व" के सभी रूपों में बह रहे हैं और ईश्वर के ऐसे गुणों और कार्यों को इस जीवन में आत्मा की आंख के माध्यम से देखा जा सकता है। इसका पूरा विवरण इमाम ग़ज़ाली की पुस्तक "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" के माध्यम से सामने आ रहा है। ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (शांति उन पर हो), इस पैगंबर कथन में कहा गया है कि यदि आपके लिए भगवान की पूजा करना संभव नहीं है जैसे कि आप उसे देखते हैं तो आपको भगवान की पूजा करनी चाहिए जैसे कि वह आपको देखता है। इसका मतलब यह है कि यदि आपके पास "*मुशहादा*" या "ईश्वर की गवाही" करने की आध्यात्मिक क्षमता नहीं है, तो कम से कम "*मुराकाबा*" या "अपने दिल के माध्यम से आध्यात्मिक चिंतन" करें कि आप हमेशा के लिए भगवान की दृष्टि में हैं। इसका प्रमाण *हदीस* संग्रह "*सहीह मुस्लिम*" से एक अन्य हदीस *या पैगंबर कथन में पाया जा सकता है* जिसमें पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है कि "ईश्वर आपके चेहरे और आपके शरीर को नहीं देखता है, बल्कि वह आपके दिलों को

देखता है"। जब कोई मनुष्य अपने हृदय पर परमेश्वर की दृष्टि पर चिंतन करता है और महसूस करता है, तो वह न केवल बुरे कार्यों से बच जाएगा, बल्कि सभी बुरे विचारों को उसके हृदय में प्रवेश करने से भी रोक देगा, क्योंकि वह इस बात पर विचार करने की स्थिति में होता है कि परमेश्वर हर अवस्था को देख रहा है, बाहरी और आंतरिक, प्रकट और छुपा हुआ है, वह अंदर है और परमेश्वर उसके अस्तित्व के हर तंतु से पूरी तरह अवगत है।

महान मुस्लिम संतों (ज्ञानवादी, ईश्वर के अंतरंग और आध्यात्मिक गुरुओं) की शिक्षाओं से यह स्पष्ट है कि इस्लाम के उच्चतम स्तर तक पहुंचने के लिए जिसे "*ईहसान" के रूप में जाना जाता है* (यानी, ईश्वर की पूजा करना जैसे कि आप उसे देखते हैं और यदि आप उसे नहीं देखते हैं, तो वह वास्तव में आपको देखता है), जहां कोई ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान ("*मारिफा*") प्राप्त करता है जिसके माध्यम से वह शाश्वत आनंद प्राप्त करता है और उसके माध्यम से वह जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करता है, उपलब्धि के इस उच्चतम शिखर तक पहुंचने के लिए, यह जरूरी है कि व्यक्ति अपनी आत्मा को सभी बुराइयों और नकारात्मक प्रवृत्तियों और गुणों से मुक्त करके और इसे सभी सुंदर और सकारात्मक प्रवृत्तियों और गुणों से अलंकृत करके शुद्ध करे। किसी की आत्मा की शुद्धि के लिए इस तरह का शक्तिशाली आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष, आत्मा को सक्षम बनाता है, जो आध्यात्मिक स्टेशनों पर चढ़ने के माध्यम से ईश्वर की उपस्थिति में चढ़ने के लिए ईश्वर की ज्ञानता को प्राप्त करने का एकमात्र साधन और साधन है। मन, शरीर और बुद्धि जैसे अन्य मानवीय संकायों के विपरीत, आत्मा की कोई सीमा नहीं है और यह उन ऊंचाइयों तक पहुंचने में सक्षम है जिन तक पहुंचने में अन्य मानव संकाय असमर्थ हैं। इसलिए, मानव उपलब्धि के शिखर तक पहुंचना मन, शरीर और बुद्धि के माध्यम से नहीं बल्कि केवल आत्मा के माध्यम से संभव है, एक बार जब इसकी बेड़ियाँ और संयम, जो इसे दबाए रखते हैं, टूट जाते हैं।

आत्मा की बीमारियों, बुराइयों और सभी नकारात्मक प्रवृत्तियों को ठीक करने का तरीका इसे शुद्ध करने के लिए, कुरान और पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शिक्षाओं के प्रकाश में एक दृढ़ आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष करना है ताकि सभी आंतरिक बुराइयों को दूर किया जा सके जो किसी को ईश्वर के मार्ग से दूर करते हैं और सभी महान आंतरिक आध्यात्मिक गुणों को विकसित करते हैं जो व्यक्ति को ईश्वर की निकटता के लक्ष्य तक ले जाते हैं, अंतरंगता, और ज्ञान। आंतरिक बुराइयां, जो आत्मा के रोग हैं, को एक दृढ़ और ठोस आध्यात्मिक संघर्ष के माध्यम से दूर करने की आवश्यकता है। आत्मा की इन आंतरिक बुराइयों या रोगों में शत्रुता, घृणा, ईर्ष्या, क्रूरता, उत्पीड़न, दुर्भावना, अशिष्टता, अशिष्टता, झूठ, आरोप, अत्यधिक बात, घमंड, घमंड, अहंकार, छल, असभ्य व्यवहार, अभद्रता, कंजूसपन, फिजूलखर्ची, नस्लीय/भाषाई/राष्ट्रवादी/धार्मिक पूर्वाग्रह और अहंकार, आत्म-धार्मिकता, पाखंड, स्वार्थ, आत्म-केंद्रितता, अधीरता, निर्दयता, उदासी, अवसाद, कायरता, साहस की कमी शामिल है, अदूरदर्शिता, लापरवाही, असावधानी, बेपरवाही, सभी नकारात्मक विचार, शब्द, कर्म, प्रवृत्तियाँ और झुकावयाँ जो व्यक्ति को सत्य के मार्ग से हटाती हैं और उसे सच्चे आंतरिक मानव स्वभाव और परमेश्वर के मार्ग से भटकाती हैं।

आत्मा की आंतरिक बीमारियों को उसके सबसे गहरे अवकाश से दूर करने के बाद, व्यक्ति को सभी सकारात्मक और महान आंतरिक आध्यात्मिक गुणों का पोषण करने की आवश्यकता होती है जो व्यक्ति को महान चरित्र और स्वभाव की ऊंचाइयों तक ले जाते हैं और आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग को रोशन करते हैं। इस तरह के महान आंतरिक आध्यात्मिक गुणों में प्रेम, दया, दया, करुणा, ईमानदारी, सच्चाई, साहस, बहादुरी, दृढ़ संकल्प, उदारता, बड़प्पन, दूरदर्शिता, ज्ञान, न्याय, निष्पक्षता, परोपकारिता, महान और सुखद शिष्टाचार और चरित्र, विनम्रता, बिना किसी गुप्त उद्देश्य के मानवता की निस्वार्थ सेवा, विनम्रता, धार्मिकता और धार्मिक कर्म, हृदय की विशालता, सतत दिव्य स्मरण, ईश्वर में विश्वास और निर्भरता, हृदय और आत्मा

की शुद्धता, और सभी अच्छे और सकारात्मक विचार, शब्द, कर्म, प्रवृत्तियां और झुकाव जो किसी को सभी अच्छे आंतरिक आध्यात्मिक गुणों और महान चरित्र की ओर ईश्वर की स्वीकृति और उपस्थिति की ओर ले जाते हैं। इस बिंदु तक पहुंचना "एहसान" के स्तर तक पहुंचना है, जो इस्लाम का उच्चतम स्तर है और मानवीय उपलब्धि का शिखर है, जैसा कि "गेब्रियल की *हदीस* (भविष्यद्वाणी कथन)" में "ईश्वर की पूजा करें जैसे कि आप उसे देखते हैं और यदि आप उसे नहीं देखते हैं, तो वह वास्तव में आपको देखता है", दूसरे शब्दों में "*मुशहादा* या *मुराकाबा*" या "ईश्वर की गवाही देना या किसी के अस्तित्व के हर तंतु को परमेश्वर के आवरण का चिंतन"। कुरान की निम्नलिखित आयत में इसका उल्लेख किया गया है:

أَفَمَن شَرَحَ ٱللَّهُ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ

"जिसका हृदय ईश्वर ने इस्लाम के लिए खोल दिया है और विस्तार किया है (यानी, ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण), वह अपने भगवान से [आंतरिक आध्यात्मिक] प्रकाश (या ज्ञान की रोशनी) में है। (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 22)

यह "ईसान" *का स्तर है*, यानी ज्ञानवाद या इस्लाम का उच्चतम स्तर जो मानव उपलब्धि का शिखर है, जो ईश्वर के पैगंबरों द्वारा और उनके बाद पैगंबर के साथियों (*सहाबा द्वारा*) और उनके बाद महान संतों और ज्ञानवादियों द्वारा पहुंचाया गया था। यह वही स्तर है जब प्राप्त किया जाता है, तो व्यक्ति एक सच्चा और सिद्ध मनुष्य बन जाता है और पृथ्वी पर ईश्वर का सहायक बन जाता है और यह वह जगह है जहां व्यक्ति शाश्वत सुख और अंतहीन विजय (*सआदत अबादिया* या *सआदत-ए-आबादी*) प्राप्त करता है जो अनंत काल तक एक के साथ रहता है। पूर्ण स्वर्गारोहण के इस उच्च आध्यात्मिक स्टेशन तक पहुंचना और इस प्रचंड धन को प्राप्त करना हर इंसान के लिए संभव है। पैगंबर मानवता को यह मार्ग सिखाने के लिए इस दुनिया में आए और भविष्यद्वक्ताओं के युग के समाप्त होने के बाद, भविष्यवक्ताओं के उत्तराधिकारी जो संत और ज्ञानवादी हैं, अपनी जीभ और अपनी गौरवशाली आंतरिक आध्यात्मिक अवस्थाओं के साथ मानवता को यह मार्ग सिखाने के लिए समय के अंत तक यहां रहेंगे। ऐसा इसलिए है ताकि यह मार्ग समय के अंत तक मानवता के लिए खुला रहे और इसलिए ईश्वर का वादा जो उसने कुरान में पूरी मानवता से समय के अंत तक किया था, "जो लोग हमारे मार्गों में प्रयास करते हैं, हम निश्चित रूप से और निश्चित रूप से उन्हें अपने मार्गों पर ले जाएंगे। और ईश्वर भलाई करने वालों के साथ है" (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 69), कि ईश्वरीय वादा पूरा हो जाता है और ईश्वर का प्रेम और करुणा जो पूरी मानवता के लिए है, वह पूरी हो जाती है।

उपरोक्त स्पष्टीकरण के प्रकाश में, अब हम संक्षेप में अपने जीवन के उद्देश्य और उस उद्देश्य को प्राप्त करने की विधि को जानते हैं। इसके बाद, हमारे जीवन के उद्देश्य और इसे प्राप्त करने के तरीकों का अपेक्षाकृत विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। इस स्पष्टीकरण को प्रस्तुत करने के लिए, न केवल इस्लामी सभ्यता बल्कि संपूर्ण मानव सभ्यता के बेहतरीन प्रतिपादकों में से एक के ज्ञान के महान प्रबुद्ध कालातीत खजाने से मदद मांगी जाएगी, जो मानव उपलब्धि के शिखर पर पूर्णता के स्तर तक पहुंच गए, इहसन का स्तर, जिनकी किताबें आज भी पूरी मानवता के लिए पूर्णता और उपलब्धि के शिखर का मार्ग रोशन कर रही हैं। यह महान व्यक्तित्व "इस्लाम का प्रमाण" इमाम अबू हमीद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (1058-1111 ईस्वी) है जिसे इमाम ग़ज़ाली या सिर्फ ग़ज़ाली के नाम से जाना जाता है।

इमाम ग़ज़ाली ने अपनी छोटी किताब "*मेज़ान अल-अमल*" या "मानव कार्यों की शुद्धता को मापने और न्याय करने की कसौटी" में, जो उनकी लघु पुस्तकों "*मजमुआ रसइल इमाम ग़ज़ाली*" या "इमाम ग़ज़ाली की

लघु पुस्तकों का संग्रह" की एक छोटी पुस्तक है, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता (*सादाह अबादिया* या *सआदत-ए-आबादी*) की व्याख्या इस प्रकार करती है [1]:

[शाश्वत] खुशी की तलाश में लापरवाही और आलस्य बेतुकेपन के समान है

शाश्वत आनंद से हमारा तात्पर्य यह है: बिना मृत्यु के अनन्त, प्रयास के बिना आनंद, त्रासदी के बिना आनंद, गरीबी के बिना समृद्धि, दोष के बिना पूर्णता, और अपमान के बिना सम्मान।

एक पूरे के रूप में: सब कुछ कल्पना की गई, चाहे वह एक याचिकाकर्ता का अनुरोध हो या एक तरस की आकांक्षा जो हमेशा के लिए इस तरह से मौजूद है जो समय बीतने और पीढ़ियों के विलुप्त होने से कम नहीं होगी।

वास्तव में, यदि पूरी दुनिया अनाज से भरी हुई है और एक पक्षी हर एक हजार साल में एक भी अनाज चुराता है, तो अनाज समाप्त हो जाएगा, अनंत काल से कुछ भी कम नहीं होगा।

इसके लिए इसके लिए अनुरोध करने के लिए किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं होगी और न ही इसके अस्तित्व की पुष्टि करने के बाद इसे खोजने में लापरवाही की आवश्यकता होगी? क्योंकि प्रत्येक बुद्धिमान प्राणी इससे कम लाभ के लिए भागेगा और यह उसे पीछे नहीं रोकेगा, भले ही इसे पूरा करने का तरीका कठिन हो, और सांसारिक सुखों को छोड़ने की आवश्यकता हो, और कई कठिनाइयों को सहन करना पड़े।

विपत्ति में बिताया गया समय सीमित है और जो छूट जाता है वह न्यूनतम है क्योंकि सांसारिक सुख क्षणभंगुर होते हैं और आसानी से समाप्त हो जाते हैं।

जहां तक बुद्धिमान व्यक्ति का सवाल है, उसके लिए इसके कई दस गुना हासिल करने के लिए छोटी राशि के साथ भाग लेना आसान है। यही कारण है कि तुम वाणिज्य और उद्योग में हर किसी को देखते हो और यहाँ तक कि ज्ञान की खोज में भी सभी प्रकार के अपमान, गरीबी, कठिनाइयाँ, और असहनीय पीड़ा का सामना करेगा, और उत्सुकता से भविष्य में एक ऐसे आनंद के लाभ की इच्छा रखते हो जो वर्तमान समय में वे जो कुछ भी खो देते हैं, उससे कहीं अधिक है, एक सीमित वृद्धि। तो फिर यह कैसे है कि वे अमूल्य और असीमित लाभ प्राप्त करने के लिए वर्तमान परिस्थितियों को नहीं छोड़ेंगे?

सृष्टि में कोई बुद्धिमान प्राणी नहीं है जो धन प्राप्त करने के लिए उत्सुक है जब शुद्ध सोना प्राप्त करने के लिए एक महीने तक इंतजार करने के लिए एक *दीनार* खर्च करने के लिए कहा जाता है , निश्चित रूप से उसका अहंकार उसे जल्दी से इसे खर्च करने की अनुमति देगा। भले ही उसी समय यह अनुरोध किया जा सकता है, वास्तव में कि एक व्यक्ति जो भूख के दर्द का सामना भी नहीं करेगा, उदाहरण के लिए, उस समय अवधि में ताकि वह भविष्य में प्रचुर मात्रा में इनाम प्राप्त कर सके, उसे समझदार नहीं माना जाएगा।

यह हो सकता है कि सृष्टि में इसके अस्तित्व की कल्पना नहीं की जाएगी, भले ही मृत्यु हमेशा हर किसी पर मंडरा रही है और धमकी दे रही है और सोने से परलोक में किसी को भी लाभ नहीं होगा।

हो सकता है कि वह उस महीने में या उस महीने के एक दिन बाद मर जाए और उस सोने से उसे फायदा न हो। यह सब उस इनाम को प्राप्त करने की उसकी उत्सुकता के लिए इसे खर्च करने में उसकी राय को नहीं रोकेगा। फिर यह कैसे है कि बुद्धिमान प्राणी की राय अपने जीवन में इच्छाओं के बोझ को उठाने में धोखा दिया जाता है, जो कि अधिकतम एक सौ वर्ष का होता है और इसके लिए प्रतिफल शाश्वत आनंद है?

हालाँकि, आनंद के मार्ग पर चलने में सृष्टि की अनिच्छा अंतिम दिन में उनके दृढ़ विश्वास की कमी के कारण है। क्योंकि बुद्धि की कमी भी पूरी बुद्धि के साथ एक पर खुशी के मार्ग पर जाने के लिए जल्दी से निर्णय लेगी।

इमाम ग़ज़ाली ने फ़ारसी में लिखी अपनी महान पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" या "अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन का कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट" में शाश्वत सुख की व्याख्या इस प्रकार की है [2]:

आकाश में तारों की संख्या, वर्षा में बूंदें, पेड़ों की पत्तियां, रेगिस्तान के रेत के कण और आकाश और पृथ्वी के परमाणुओं के बराबर अनगिनत कृतज्ञता केवल ईश्वर के लिए उपयुक्त है, जिसका गुण उसकी एकता है और सभी महिमा, महानता, उच्चता और उत्कृष्टता उसके लिए विशिष्ट है। कोई भी सेवक महामहिम की पूर्णता से अवगत नहीं है। किसी के पास उसके ज्ञान की वास्तविकता में रास्ता नहीं है। बल्कि वास्तविकता की जानकारी प्राप्त करने में असमर्थता को स्वीकार करना सबसे सच्चे का चरमोत्कर्ष है और उसकी प्रशंसा और भजन में कमी को स्वीकार करना स्वर्गदूतों और भविष्यवक्ताओं द्वारा पढ़ी गई प्रशंसा और भजन का चरमोत्कर्ष है। महामहिम की पहली किरण पर चकित होना बुद्धिमानों की बुद्धि का चरमोत्कर्ष है। उसकी कृपा की निकटता की तलाश में आश्चर्यचकित होना रहस्यवादी मार्ग के राहगीरों का चरमोत्कर्ष है। इसका आधार ज्ञान की आशा को छोड़ना और अपनी इच्छाओं को छोड़ना है। उसके ज्ञान के मामले में पूर्णता का दावा समानता और समानता के बारे में सोचना है। उसके अस्तित्व की कृपा को देखते हुए, सभी की आंखें चकाचौंध हो जाती हैं। उनके अद्भुत कार्यों को देखकर, सभी बुद्धिओं द्वारा उत्पन्न फल आवश्यक ज्ञान है। कोई भी ऐसा नहीं होना चाहिए जो उसके अस्तित्व की महानता पर विचार करे, यही वह है और क्यों है। कोई भी हृदय ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह उसके अद्भुत कार्यों के प्रति असावधान रहे। वे क्या हैं और किसकी शक्ति से काम करते हैं। यह इसलिए है ताकि यह पहचान सके कि सभी निश्चित रूप से उसकी शक्ति के संकेत हैं, और उसकी महानता की रोशनी हैं। जो कुछ भी है, वह उसी से है और उसके कारण है। बल्कि, जो कुछ भी है, वह वह है। जैसा कि वास्तव में होता है, उसके अलावा किसी भी चीज़ का अस्तित्व नहीं है। बल्कि सभी का अस्तित्व उसके अस्तित्व का प्रतिबिंब है।

हे प्रिय प्रिय! यह अच्छी तरह से जान लें कि भगवान ने मनुष्य को खेल और घमंड के लिए नहीं बनाया है। बल्कि किसी का कर्तव्य और उसमें मौजूद खतरे दोनों ही जबरदस्त हैं, जैसे कि कोई शाश्वत नहीं है, लेकिन निश्चित रूप से उसे हमेशा के लिए जीना है। यही है, यदि कोई हमेशा से नहीं है (या अनंत काल से रहता है), तो वह हमेशा के लिए होगा। हालांकि किसी का शरीर तुच्छ है, मिट्टी से बना है, लेकिन उसकी आत्मा की वास्तविकता दिव्य होने के नाते जबरदस्त है। यद्यपि इसकी उत्पत्ति पशुओं, पशुओं, शैतानों और उनकी अशुद्धियों के गुणों के साथ मिश्रित है, लेकिन जब इसे कठिनाई में डाल दिया जाता है, तो यह शुद्ध हो जाता है और भगवान के निकट होने की क्षमता प्राप्त करता है। सबसे खराब से सबसे खराब होना और उच्चतम में से सर्वश्रेष्ठ होना किसी का कार्य है। इसका सबसे निचला उतार यह है कि यह पशु-पशु

और शैतानों के गड्ढे में गिरकर क्रोध और इच्छा के जाल में फंस जाता है। इसका चरमोत्कर्ष यह है कि यह स्वर्गदूतों के पद तक पहुँचता है [यानी, आध्यात्मिक क्षेत्र में]। उदाहरण के लिए, उसे (आत्मा) क्रोध और इच्छा के चंगुल से मुक्ति मिलनी चाहिए। ये दोनों एक के कैदी होने चाहिए और एक का राजा होना चाहिए। जब राजत्व का यह पद एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त किया जाता है, तो वह परमेश्वर की पूजा करने के योग्य हो जाता है। पूजा करने की यह क्षमता स्वर्गदूतों की विशेषता है। यह एक इंसान के पद की पूर्णता है। जब किसी को ईश्वर की कृपा के प्रेम का स्वाद मिलता है, तो वह दिव्य दृष्टि से वंचित एक पल भी नहीं बिता सकता है। अंतहीन अनुग्रह का दृश्य व्यक्ति का स्वर्ग बन जाता है। आंख, पेट और दैहिक सुखों का स्वर्ग व्यक्ति के लिए महत्वहीन और बेकार हो जाता है। चूंकि मनुष्य का आधार अपने जन्म की शुरुआत में अपूर्ण और महत्वहीन होता है, इसलिए किसी को परिपूर्ण बनाना कठिनाई के बिना संभव नहीं है और पीतल और तांबे को शुद्ध करने वाली कीमिया की तरह उपचार करना बेहद मुश्किल है। हर कोई इसकी पहचान नहीं कर सकता। इसी तरह, यह कीमिया जो मनुष्य के आधार को पाशविक आदतों की अशुद्धियों से शुद्ध करती है और उसमें देवदूत [आध्यात्मिक] शुद्धि लाती है जिसके कारण उसे शाश्वत आनंद मिलता है। यह बहुत कठिन है, और हर व्यक्ति इसे नहीं जानता है। इस थीसिस को लिखने का उद्देश्य इस कीमिया के तत्वों को बताना है जो वास्तव में शाश्वत आनंद की कीमिया है। इसी वजह से हमने इस किताब का नाम "*किमिया-ए-सआदत*" या "कीमिया या ट्रांसफॉर्मेटिव एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" रखा है। "कीमिया" नाम इस पुस्तक के लिए बहुत उपयुक्त है। इसका कारण यह है कि पीतल और तांबे में पीलेपन और वजन के अलावा कोई अंतर नहीं है और इस कीमिया से इस दुनिया में अमीर बनने के अलावा कोई अन्य वस्तु नहीं है। सांसारिक जीवन छोटा है। सांसारिक धन अपने आप में कुछ भी नहीं है। मवेशियों की आदतों और स्वर्गदूतों के गुणों के बीच अंतर की एक बड़ी दुनिया है। इस कीमिया का फल शाश्वत आनंद है। इसकी सीमा का कोई अंत नहीं है। इसके एहसानों का कोई अंत नहीं है। कोई भी अशुद्धता उसकी पवित्रता में प्रवेश नहीं कर सकती। यह पुस्तक वास्तव में एक कीमिया है। इसके अलावा, किसी और चीज को कीमिया के रूप में नाम देना शर्मनाक के अलावा और कुछ नहीं है।

हे प्रिय प्रिय! आपको पता होना चाहिए कि जिस तरह सोने की कीमिया हर बूढ़ी औरत की झोपड़ी में नहीं पाई जाती है, बल्कि यह अत्यधिक अमीर व्यक्तियों और राजाओं के खजाने में पाई जाती है। इसी तरह, शाश्वत आनंद की कीमिया भी हर जगह नहीं मिलती है। बल्कि यह दिव्य खजाने में पाया जाता है। स्वर्ग में दिव्य खजाना, स्वर्गदूतों के प्राणी और पृथ्वी पर, भविष्यवक्ताओं के दिल हैं। जो कोई भी उन्हें पैगंबर के दरबार के अलावा कहीं भी खोजेगा, वह भटक जाएगा और अंततः धोखा खा जाएगा। किसी को व्यर्थ कल्पना के अलावा कुछ नहीं मिलेगा। न्याय के दिन किसी की गरीबी स्पष्ट हो जाएगी। पूरी सृष्टि को किसी के झूठे (नकली) सिक्कों का पता चल जाएगा और सभी को पता चल जाएगा कि किसी के पास कोई समझ नहीं है। एक आवाज सुनेगी:

لَّقَدْ كُنتَ فِى غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ ٱلْيَوْمَ حَدِيدٌ

"आप निश्चित रूप से इस बारे में लापरवाही और अज्ञानता में थे। हमने तुमसे पर्दा हटा दिया है, इसलिए आज तुम्हारी दृष्टि तेज है [जैसा कि पहले तुमसे छिपा हुआ था वह अब तुम्हारे तेज फोकस में है]। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 22)

सभी दयालु लोगों (यानी, भगवान) में सबसे दयालु की सबसे बड़ी दया यह है कि उसने दुनिया में एक लाख चौबीस हजार भविष्यद्वक्ताओं (उन सभी पर शांति हो) को इस कीमिया के उपकरण को सिखाने के लिए भेजा और उन्हें दिल के नकद सिक्के को कठिनाई की निहाई में रखने और उन्हें बुरी नैतिकता के

सुधार का मार्ग सिखाने के लिए भेजा जो हृदय के घनत्व और अशुद्धता का कारण बनते हैं और हृदय को अच्छी नैतिकता से भरने का तरीका बनाते हैं। जैसा कि परमेश्वर ने अपनी महिमा और संप्रभुता [अपने प्रभुत्व की] द्वारा स्वयं की प्रशंसा की, उसी प्रकार उन्होंने पैगंबरों को भेजने के अपने गुण की घोषणा की [और पैगंबर पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] और इसे सृष्टि पर उनके दायित्व के रूप में संदर्भित किया। भगवान कहते हैं:

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ٱلْمَلِكِ ٱلْقُدُّوسِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَكِيمِ ﴿١﴾
هُوَ ٱلَّذِى بَعَثَ فِى ٱلْأُمِّيِّۦنَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ
وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلُ لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾

"स्वर्ग और पृथ्वी पर जो कुछ भी है उसकी महिमा करता है परमेश्वर, राजा, पवित्र, शक्तिशाली, बुद्धिमान। यह वह है जिसने अनपढ़ लोगों के बीच एक रसूल [पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहम्मद (ईश्वर की आशीष) को आपस में भेजा जो उन्हें अपने रहस्योद्घाटन का पाठ करता है और उन्हें शुद्ध करता है [आत्मा की आंतरिक शुद्धि के साथ] और उन्हें पुस्तक और ज्ञान सिखाता है। और इससे पहले, वे अज्ञानता में प्रकट थे। (कुरान, अध्याय 62, श्लोक 1-2)

[अरबी] शब्द "*युज़क्किहिम*" [उपरोक्त आयत में] उन्हीं बुरी नैतिकताओं को संदर्भित करता है जो जानवरों के गुण हैं और जिनसे ईश्वर के दूत [पैगंबर मुहम्मद] (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) उन्हें मुक्त करते हैं [या आंतरिक शुद्धिकरण और आध्यात्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया के माध्यम से शुद्ध होते हैं]। [अरबी] शब्द "*यु'अल्लिमुहुमुल किताबा वाल-हिकमाटा*" [जिसका अर्थ है "और उन्हें पुस्तक और ज्ञान सिखाता है" उसी उपरोक्त कविता में] यह संदर्भित करता है कि उसे उन्हें स्वर्गदूतों के गुणों की पोशाक पहनानी चाहिए। और कीमिया का उद्देश्य (यानी, आध्यात्मिक परिवर्तन का परिवर्तनकारी एजेंट) यह है कि मनुष्य को सभी हानिकारक और अवांछित चीजों (यानी, आत्मा के सभी आंतरिक दोष और हानिकारक नकारात्मक प्रवृत्तियों) से शुद्ध होना चाहिए और [आंतरिक आध्यात्मिक] पूर्णता के गुणों से अलंकृत होना चाहिए। सभी कीमिया में सबसे बड़ी बात यह है कि व्यक्ति को दुनिया (सांसारिकता) से अपना चेहरा मोड़ना चाहिए और सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति चौकस रहना चाहिए जैसा कि ईश्वर के दूत (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) को सिखाया गया है:

وَٱذْكُرِ ٱسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا

"*वडकुरुस्मा रब्बिका वा तब्बताल इलायही तब्तेला*"
"और अपने रब के नाम को स्मरण करो और अपने आप को पूरी भक्ति के साथ [उसके लिए] समर्पित करो। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 8)

[अरबी शब्द] "*तब्तीला*" [उपरोक्त श्लोक में] का अर्थ है सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा सभी से अलगाव और खुद को पूरी तरह से सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने समर्पित छोड़ देना। यह इस कीमिया [शाश्वत खुशी और कभी न खत्म होने वाली सफलता का] का संक्षिप्त वर्णन है। इसका विवरण लंबा है और इसकी कोई सीमा नहीं है। लेकिन इसका शीर्षक चार चीजों को जानना है, [और] इसके आवश्यक तत्व चार व्यवहारों को जानना है, और प्रत्येक आवश्यक तत्व में दस बुनियादी सिद्धांत हैं।

चार उपाधियाँ [शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता की इस कीमिया] हैं:

(1) स्वयं को जानना,
(2) परमेश्वर को जानना,
(3) दुनिया की वास्तविकता को जानना, और
(4) परलोक की वास्तविकता को जानना।

उपरोक्त चार बातों को जानना वास्तव में इस्लाम को जानने का शीर्षक है (यानी, ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण)। लेकिन इस्लाम के आवश्यक तत्वों के मामले चार हैं।

दो आवश्यक तत्व बाहरी स्व ("*ज़हीर*") और दो आंतरिक स्व ("*बैटिन*") से संबंधित हैं।

बाहरी स्व से संबंधित दो आवश्यक तत्व हैं:
(1) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना। इन्हें पूजा के [बाहरी] कार्य ("इबाद") कहा जाता है।
(2) किसी की आवाजाही और आजीविका के मामले में उन्हें ध्यान में रखना। इन्हें [सामाजिक] व्यवहार ("*मुआमलत*") *कहा जाता है*।

आंतरिक स्व ("बैटिन") से संबंधित दो आवश्यक तत्व हैं:

(1) हृदय [या आत्मा] को क्रोध, कंजूसपन, अहंकार, अभिमान, आत्म-धार्मिकता आदि जैसी सभी बुरी [आंतरिक] नैतिकताओं से शुद्ध रखना। इन [बुरे और निम्न आंतरिक चरित्र लक्षण या] नैतिकता को विश्वास के रास्ते में "*मुहलिकत*" (नकारात्मकता या आंतरिक दोष या आत्मा की विनाशक) और "*अकाबात*" (अंधेरे और संकीर्ण स्थान जहां लोग लुटेरों के शिकार हो जाते हैं) कहा जाता है।
(2) हृदय [या आत्मा] को धैर्य, कृतज्ञता, प्रेम, आशा, ईश्वर में विश्वास आदि जैसे अच्छे [आंतरिक] नैतिकता से सजाना। इन नैतिकताओं को "*मुनाज्जियत*" कहा जाता है (सकारात्मकता या आत्मा के सभी उच्च आंतरिक चरित्र लक्षण जो इसे मोक्ष, आनंद, सच्ची [शाश्वत] खुशी, और [चिरकालिक] सफलता) लाते हैं।

पहला [चार] आवश्यक तत्व जिसमें [परमेश्वर की] पूजा का उल्लेख है, दस नींवों से मिलकर बना है। वे हैं:

(1) अहल अल-सुन्नत *की मान्यताओं के मामले में* (यानी, जो सही पारंपरिक पद्धति पर हैं जो सभी स्तरों पर संचरण और प्रमाणित छात्रवृत्ति की एक अटूट श्रृंखला पर निर्भर करती है [बाहरी जीवन, आंतरिक विश्वास और आध्यात्मिकता का संचालन करने की] जो पैगंबर मुहम्मद [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] और उनके माध्यम से सर्वशक्तिमान ईश्वर तक जाती है),
(2) ज्ञान प्राप्त करने के मामले में,
(3) स्वच्छता (या बाहरी शुद्धता) के मामले में,
(4) प्रार्थना के मामले में (भगवान से),
(5) जकात (या अनिवार्य गरीब-देय या दान) के मामले में,
(6) उपवास के मामले में,
(7) *हज के मामले में (या मक्का में* काबा *की तीर्थयात्रा* जो पृथ्वी पर ईश्वर और उसकी दया का प्रतीक है),
(8) पवित्र कुरान के पाठ के मामले में,
(9) परमेश्वर के स्मरण के मामले में, आह्वान, और प्रार्थनाएँ, और

(10) मुकदमेबाजी की व्यवस्था करने के मामले में [किसी की सभी जरूरतों के लिए भगवान का आह्वान करने के लिए - भौतिक और आध्यात्मिक दोनों]।

आपसी व्यवहार से संबंधित दूसरा आवश्यक तत्व [सभी लोगों के साथ] भी दस नींव [या सिद्धांत] हैं:
(1) भोजन लेने के शिष्टाचार,
(2) विवाह के शिष्टाचार,
(3) व्यापार और व्यवसाय के शिष्टाचार,
(4) वैध की तलाश करने के शिष्टाचार [और गैरकानूनी से परहेज],
(5) साहचर्य के शिष्टाचार,
(6) एकांत के शिष्टाचार,
(7) यात्रा और यात्रा के शिष्टाचार,
(8) पाठ के शिष्टाचार ("सामा'" या ईश्वर के लिए प्रेम और लालसा से संबंधित भक्ति पाठ) और [परिणामी आध्यात्मिक] परमानंद
(9) अच्छाई का आदेश देने और बुराई को निषेध करने का शिष्टाचार, और
(10) शासकों और शासितों के लिए शिष्टाचार।

"मुहलिकत" *(या आत्मा की विनाशकारी बुराइयों) से संबंधित तीसरे आवश्यक तत्व की भी दस नींव [या सिद्धांत] हैं:*
(1) [आंतरिक] आत्म-अनुशासन के शिष्टाचार [और निचले स्व की मूल इच्छाओं पर अंकुश लगाने के लिए आध्यात्मिक अभ्यास ("*नफ्स*")],
(2) भोजन और शारीरिक सुखों में अति-भोग के लिए इलाज के शिष्टाचार,
(3) अत्यधिक बात करने और जीभ की बुराइयों के इलाज के शिष्टाचार,
(4) क्रोध और अहंकार और झूठे सम्मान के इलाज के शिष्टाचार,
(5) दुनिया के प्यार के इलाज के शिष्टाचार,
(6) संपत्ति [और धन] के लिए प्यार के इलाज के शिष्टाचार,
(7) धूमधाम और सम्मान के इलाज के शिष्टाचार (आत्म-महिमा और आत्म-बड़ाई),
(8) दिखावा और पाखंड के इलाज के शिष्टाचार,
(9) अहंकार और आत्म-धार्मिकता के इलाज के शिष्टाचार, और
(10) अभिमान और लापरवाही के इलाज के शिष्टाचार।

"मुंजियात" *(या आत्मा के महान आंतरिक गुण जो इसे मोक्ष और आनंद लाते हैं) से संबंधित चौथे आवश्यक तत्व की भी दस नींव [या सिद्धांत] हैं:*
(1) पश्चाताप [परमेश्वर के लिए किसी ने किए गए अधर्म से और परमेश्वर से क्षमा मांगना],
(2) धैर्य [विपत्तियों पर] और कृतज्ञता [ईश्वरीय आशीर्वाद और अनुग्रह के लिए भगवान के प्रति],
(3) परमेश्वर का भय और आशा [परमेश्वर में],
(4) गरीबी [या ईश्वर के सामने पूर्ण आवश्यकता की स्थिति] और तपस्या,
(5) [अच्छा] इरादा, ईमानदारी और सच्चाई,
(6) भक्ति और आत्म-जवाबदेही,
(7) [आध्यात्मिक] चिंतन (या "*मुराकाबा*" या किसी के हृदय और आत्म-प्रतिबिंब और आलोचनात्मक आत्म-मूल्यांकन पर भगवान की दृष्टि पर विचार करना),
(8) परमेश्वर की एकता [या एकता] और परमेश्वर पर भरोसा,

(9) परमेश्वर का प्रेम, और
(10) मृत्यु और उसका स्मरण (या चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए अपनी स्वयं की अपरिहार्य मृत्यु दर और किसी के सांसारिक अस्तित्व के अंत पर विचार करना)।

यह आवश्यक तत्वों की सूची है और "*किमिया-ए-सादत*" या "शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन की कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट" पुस्तक की मूल बातें हैं। हम चार शीर्षकों और चालीस सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझाएंगे और अपनी कलम को कठिन वाक्यांशों और जटिलताओं में लिप्त होने से रोकेंगे ताकि यह पुस्तक आसानी से समझ में आ सके। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो कोई भी शोध करना चाहता है या जटिलताओं में गहराई से जाना चाहता है, वह हमारी अरबी पुस्तकों जैसे "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार", "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" या इस अनुशासन पर अन्य संकलनों से परामर्श और अध्ययन कर सकता है।

ग़ज़ाली तब इस कीमिया के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) और चालीस सिद्धांतों या शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय के परिवर्तनकारी एजेंट की एक अद्भुत व्याख्या प्रदान करती है। इमाम ग़ज़ाली ने अपने ज्ञान के चार-खंड संग्रह "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" में अनंत आनंद की कीमिया के उन्हीं चालीस सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या जबरदस्त विवरण में प्रदान की है। इमाम ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" के परिचय के बाद, कीमिया या शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट की चार आवश्यकताओं का विवरण प्रदान किया है। शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता प्राप्त करने के लिए पहली उपाधि या आवश्यकता की अपनी व्याख्या में, अर्थात् "अपने स्वयं को जानना", ग़ज़ाली लिखते हैं [2]:

स्वयं को जानना

प्रिय प्रिय! सावधान रहें कि स्वयं को जानना ईश्वर की प्राप्ति की कुंजी है। इसलिए उसके द्वारा यह निर्धारित किया गया है कि:

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

"जिसने अपने आप को पहचाना, उसने अपने भगवान को पहचाना।

سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْأَفَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ

"हम उन्हें ब्रह्मांड के सबसे दूर तक और उनके अपने स्वयं (आत्माओं) में अपने संकेत दिखाएंगे, जब तक कि यह स्पष्ट रूप से उनके सामने प्रकट न हो जाए कि यह सत्य है। (कुरान, अध्याय 41, श्लोक 53)।

प्रिय प्रिय! इस पूरी दुनिया में आपके अपने 'स्व' (नफ्स) से अधिक कुछ भी आपके निकट नहीं है। इसलिए, यदि आप अपने स्वयं के अस्तित्व के बारे में जागरूक होने की कोशिश नहीं करेंगे, अर्थात, अपने बारे में, तो आप और क्या व्यर्थ देखने की कोशिश करेंगे? यदि आप सोचते हैं कि 'हम अपने आप को मानते हैं और पहचानते हैं' तो आप निश्चित रूप से गलत हैं, क्योंकि इस तरह के ज्ञान का कोई उपयोग नहीं हो सकता है। यह, किसी भी परिस्थिति में, ज्ञानवाद ("मारिफा") की कुंजी नहीं हो सकती है, सर्वोच्च

भगवान और ब्रह्मांड के स्वामी (यानी, भगवान) के ज्ञान के लिए मानवीय प्रयास के लिए। क्योंकि, इस तरह, जानवर भी अपने बारे में जानते हैं। वे भी अपने शरीर के ऐसे दृश्य अंगों को बना सकते हैं जैसे उनका सिर, उनका मुख, उनके हाथ, उनके पैर और उनका मांस आदि, जबकि आप अपने दूसरे के बारे में जानते हैं कि भूख लगने पर भोजन करते हैं, जिससे आप क्रोधित होते हैं और जब दैहिक इच्छाओं की इच्छा आप पर हावी हो जाती है, आप विवाह में प्रवेश करते हैं। इसलिए, आप और इन जानवरों में क्या अंतर है? वास्तव में, आपको यह जानना चाहिए कि आप क्या हैं, आप कहां से आए हैं और कहां जाएंगे? आपके यहां (इस दुनिया में) आने का क्या कारण है? प्रभु ने तुम्हें किस उद्देश्य के लिए बनाया था? संक्षेप में, आपके लिए क्या अच्छा है और आपके लिए क्या बुरा है?

यहाँ तक कि पक्षी और जानवर भी शैतान की कुछ विशेषताओं के अलावा, तुम्हारे पास मौजूद गुणों से संपन्न हैं। फिर भी, आपके चरित्र के ऐसे लक्षण हैं जिनमें आप और देवदूत बराबर हैं। फिर आपकी क्षणिक और स्थायी विशेषताएं क्या हैं? आपकी उत्पत्ति, सार क्या है? इसलिए, जब तक आप अपने बारे में इन महत्वपूर्ण 'बुनियादी बातों को नहीं समझ लेते' तब तक आप धन्य का दर्जा प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

इन गुणों में से प्रत्येक का अपना विशिष्ट 'भोजन' होता है जो इसे पोषण देता है, बनाए रखता है और इसके विकास को बढ़ावा देता है, जिसके परिणामस्वरूप अच्छाई और प्रशंसनीय व्यवहार को बढ़ावा मिलता है। जानवरों की बेहतरी, जैसा कि कोई देखता है, खाने, पीने और स्वस्थ और मजबूत होने में निहित है। इसलिए, यदि आप भी एक जानवर हैं तो आपको दिन-रात उनके तरीकों का पालन करना चाहिए, अपने पेट को पूरी तरह से भरना चाहिए और अपनी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करना चाहिए।

हमला और हत्या जंगल के जानवरों की प्रमुख विशेषताएं हैं। स्वाभाविक रूप से उन्हें ऐसा करना उचित है, जबकि बुराई, उसके प्रभाव, खलनायक कार्य और विश्वासघात शैतान के संकेत और प्रतीक हैं। इसलिए, यदि आपको लगता है कि आप भी इन शैतानों में से एक हैं, तो आपको उनके नक्शेकदम पर चलकर अपने दिल को खुश करना चाहिए। दूसरी ओर, जानवरों और जानवरों के विपरीत, ईश्वर की भव्यता की तलाश करना स्वर्गदूतों की आत्माओं के लिए भोजन है। और यदि आप स्वर्गदूतों से हैं, तो आपको उनकी तरह, परमेश्वर की महिमा को देखने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि आप अनैतिक कामुक सुखों और अपने साथी मनुष्यों पर अहंकारी क्रोध से मुक्त हो जाएं।

फिर अपने अंदर की आत्मा को अपने आप में खोजो, अपने आप में सत्य की खोज करने के लिए। ऐसा इस तरह के समर्पण के साथ करो कि तुम महसूस कर सको कि तुम, जानवरों, शिकार के पक्षियों और जानवरों के बीच परमेश्वर द्वारा बनाए गए एक समान गुण सामान्य भलाई के लिए हैं, न कि इस लिए कि तुम भी जानवर और अत्याचारी बन जाओ। पशुओं, पक्षियों और जानवरों को आपकी सेवा करने के लिए बनाया गया है।

ईश्वर के समझदार और जानकारों ने इस स्थिति को 'ईश्वर के मार्ग में और ईश्वर के सामने होने की' '*जनीब-ए-इलाहिया' कहा है*। लोग (यानी आम लोग) इसे स्वर्ग कहते हैं। इस प्रकार, यह आपका कर्तव्य है कि आप ईश्वर द्वारा आप में डाले गए महान, सद्गुण आंतरिक मूल्य के लिए पूरी तरह से जीवित बनें ताकि आप उसकी सूक्ति ("मारिफा") प्राप्त कर सकें। वास्तव में, एक सबसे दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति है, जो '*दीन*' (भगवान के लिए मार्ग) के मूल्य को जानने के बावजूद इससे दूर रहता है।

प्रिय प्रिय! यदि आप ईमानदारी से अपने आंतरिक स्व के बारे में एक अंतर्दृष्टि प्राप्त करना चाहते हैं, तो जान लें कि भगवान ने आपको दो चीजों से उत्पन्न किया है, अर्थात्, बाहरी संरचना, शरीर जो आंखों को दिखाई देता है और आंतरिक आत्मा जिसे '*नफ्स* (स्वयं), '*कल्ब* (हृदय), या '*रूह* (आत्मा) कहा जाता है। हालाँकि, उन्हें '*बैटिन* (आंतरिक प्राणी) की आंखों के माध्यम से देखा जा सकता है, अर्थात, दूसरे दृश्यमान, अस्पष्ट स्व द्वारा। यही सत्यता मुख्य बात है, अनुल्लंघनीय आधार, अस्तित्व का प्रमुख अर्थ है। अन्य सभी चीजें इसके अधीन हैं (यानी, दिल के लिए)। इसलिए जब हम अपने दिल की बात कहने की बात करते हैं, तो हमारा मतलब वास्तव में सच होता है। कभी-कभी इसे 'आत्मा' ("रूह") कहा जाता है। कभी-कभी इसे '*नफ्स* कहा जाता है। '*कल्ब*, दिल का मतलब मानव शरीर के बाईं ओर स्थित मांस की गांठ नहीं है जो जानवरों के पास भी है और यहां तक कि मृतकों के पास भी है। यह 'कल्ब', यानी हृदय मानव जाति के लिए वास्तविक निर्विवाद तथ्य है। यह अद्वितीय, वास्तविक और प्रमुख सत्य है, जो प्रकट होने के बावजूद, मानव आंखों द्वारा नहीं देखा जा सकता है। यह 'शहादा' नामक [देखे या दृश्यमान] क्षेत्र से संबंधित है। यह एक ऊंचा डोमेन है। अच्छाई अपने पूरे वैभव में इससे निकलती है!

मांस की यह गांठ, हृदय, शरीर का शूरवीर है। शरीर का बाकी हिस्सा उसके सैनिक हैं या उसकी आदेशों के अधीन हैं। हृदय इस बल का राजा और सेनापति है। इसका मुख्य कर्तव्य ईश्वर की "*मारिफा*" या ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति है, इस आशय के लिए मनुष्य के हृदय में उनके द्वारा प्रदान की गई अंतर्निहित विशेषताओं के कारण उनके उदात्त लाभ की धारणा और प्राप्ति है। यह उसके प्रेम में धड़कता है। हर समय यह मुखर होता है, उसकी स्तुति का पाठ करता है, कि वह ही पूजा के योग्य है। केवल वह, यह लगातार उच्चारण कर रहा है, अपने लोगों पर दया करने या दंड लगाने की शक्ति रखता है। प्रतिशोध और प्रतिफल केवल उसका विशेषाधिकार है, वह अकेले ही आशीर्वाद दे सकता है या रोक सकता है। इस प्रकार, पूरे दिल से ईश्वर के "*मारिफा*" या ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करना इस लक्ष्य की कुंजी है।

हे प्रिय प्रिय! आपको यह समझना चाहिए कि आपको इसका मूल्यांकन करना चाहिए, क्योंकि आपका स्वयं एक उत्कृष्ट रत्न है। इसमें देवदूत संबंधी रिश्तेदारी है। उच्चतम शिखर इसका स्वर्ग है। यह परमेश्वर के परम श्रेष्ठ लक्ष्य के मार्ग पर चलने वाला एक महान पथिक है। जीवन के माध्यम से इस छोटी सी यात्रा में, यह हर समय [अपने अंतिम और अंतिम गंतव्य की ओर] यात्रा करते हुए व्यापार और कृषि और अन्य व्यवसायों में रहता है।

प्रिय मित्र! समझें कि जब तक आप अपने भीतर एक नज़र नहीं डालते, तब तक आप हृदय के बारे में सच्चाई को नहीं समझ पाएंगे ("*क़ल्ब*")। एक बार जब आप दिल को समझ लेते हैं, तो आपको उसकी सेना यानी उसकी अजेय शक्ति की खोज करनी चाहिए। फिर "*मारिफा*" (या ईश्वर की ज्ञान) और "*सादा*" (या अनन्त खुशी और अनन्त सफलता) के बीच संबंध को पहचानने का प्रयास करें। सतही शरीर की तुलना में दिल की भव्यता को नकारा नहीं जा सकता है, जो लकड़ी के फ्रेम की तरह है, एक मात्र निष्क्रिय बुनियादी ढांचा है। यह कुछ भी नहीं है। यह मरे हुओं की तरह है। "*कल्ब*" से, यानी, हृदय, हमारा तात्पर्य आत्मा की सत्यता ("रूह") से है। आत्मा के बिना, शरीर मृत और मृत है। यदि कोई थोड़ी देर के लिए आँखें बंद कर लेता है और अपने भौतिक अस्तित्व के सभी विचारों को दूर कर देता है, जो पहले पूरी तरह से दृष्टि से दिखाई देता है और अपने स्वयं, अपनी आत्मा की खोज में तल्लीन हो जाता है, तो वह अपनी खोज को ढूंढ लेगा। वास्तव में, असली खोज दिल की है। यह परलोक में से एक को भी अवगत कराएगा। जो कुछ भी विपरीत है, उसे छोड़कर, व्यक्ति को एक साथ हृदय की विशालता का एहसास होगा।

'दिल' क्या है? दिल की विशेष विशेषताएं क्या हैं? ईश्वरीय कानून अपनी अकादमिक बहस की अनुमति नहीं देता है। इसलिए पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके महान साथियों ने इस मुद्दे पर चर्चा नहीं की है कि किस प्रकार ईश्वर ने कुरान में निम्नलिखित आयतों की घोषणा की थी:

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى

"और वे तुमसे आत्मा के विषय में पूछते हैं। कहो, आत्मा मेरे प्रभु की आज्ञा है। (कुरान, अध्याय 17 [इज़राइल की संतान], आयत 85)

أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ ۗ

"देखो, उसकी सृष्टि ('*खल्क*') है और उसका आदेश ('अम्र') है। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 54)

"खल्क" *के दायरे में,* निर्माण और "अम्र*"* का निर्माण, समन्वय एक दूसरे से बिल्कुल अलग है। "*खल्क*" (निर्माण), आयामी माप के तत्व, मात्रा और द्रव्यमान आसन्न हैं। शब्दकोश में, "*खल्क*" (या रचना) का अर्थ अनुमान को संदर्भित करता है। लेकिन मानव हृदय को इस परीक्षा में नहीं लाया जा सकता है, क्योंकि यह विभाजन को स्वीकार नहीं करता है। यदि हृदय विभाज्य हो सकता है, तो आधार अच्छा हो सकता है, जिससे यह एक समय में किसी मुद्दे पर या तो एक ऋषि या पूर्ण नौसिखिया हो सकता है। इस प्रकार, एक व्यक्ति *का एक साथ "अलीम*" (विद्वान या ज्ञान का व्यक्ति) और "*जाहिल*" (अज्ञानी) होना अकल्पनीय है। एंटीथिसिस में, हालांकि आत्मा ("रूह") को भगवान द्वारा बनाया गया है, यह भी पूरी तरह से अविभाज्य है, न ही इसका द्रव्यमान के कोड, माप या परिमाणीकरण से कोई संबंध है। "अम्र" (आदेश) ईश्वर की इच्छा है, जो प्रकट और सर्वोपरि है।

साथ ही, जो लोग आत्मा को कुछ ऐसा मानते हैं जो दूर, दूर और प्राचीन है, अवधि है, वे सभी गलत हैं। अवधि, जो परिसीमित है, सीमा और अधिकार के अधीन कैसे नहीं हो सकती है? जब आत्मा वास्तव में वास्तविक और अधिभावी है, तो भौतिक शरीर, शरीर आत्मा पर कैसे हावी हो सकता है? इस प्रकार, आत्मा "*अर्द*" या स्पैन कैसे हो सकती है?

इसी तरह, जिन लोगों ने आत्मा को शरीर कहा है, वे आत्म-विरोधाभासी हैं और इस तरह से धोखे में हैं। निश्चित रूप से, शरीर को टुकड़ों में विघटित किया जा सकता है लेकिन आत्मा को नहीं, जो कि पूर्वोक्त के रूप में अविभाज्य है। इस मुद्दे पर एक महीन बिंदु उठाते हुए, जानवरों में आत्मा को उसके अंतिम रूप से दूर किया जाना चाहिए, लेकिन वास्तविक आत्मा जिसे हम हृदय कहते हैं, वह ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान का भव्य स्थान है ("*मारिफ़ा*") लेकिन जानवर इस [दूसरी आत्मा] से रहित हैं। आत्मा न तो भौतिक शरीर है और न ही स्पैन है, बल्कि एक शुद्ध देवदूत रत्न है जिसका मूल्यांकन करना मुश्किल है, इसे व्यक्त करने या बढ़ाने की अनुमति नहीं है। निर्धारित मापदंडों के भीतर ही इसका उचित ज्ञान हो सकता है:

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ

"जो लोग हमारे लिए (हमारे मार्गों में) प्रयास करते हैं, हम निश्चित रूप से उन्हें अपने मार्गों पर ले जाएंगे। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 69)

وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ

"तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता। (कुरान, अध्याय 74, श्लोक 31)

उपरोक्त कुरान की आयतें स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि हृदय विशेष रूप से परलोक के लिए निर्धारित किया गया है। ईश्वर के आशीर्वाद की लालसा ही इसका उद्देश्य है। ये आशीषें परमेश्वर की ज्ञान-विज्ञान पर निर्भर हैं। किसी के उत्पाद द्वारा किसी चीज़ के लेखक या निर्माता के बारे में एक विचार मिलता है। मनुष्य की समझदार इंद्रियां किसी को उसे, उनके मूल्य का आकलन करने में मदद करती हैं। दुनिया के आश्चर्यों के उदात्त निर्माता के कार्य, प्रत्येक सरल और अपने स्वयं के गुण में अद्वितीय, हालांकि, केवल मनुष्य में विवेक की बाहरी और आंतरिक क्षमता के कौशल के माध्यम से उनके उत्कृष्ट आकर्षण के लिए सराहना और प्रशंसा की जा सकती है। धारणा और प्रवेश के दिखावटी गुण मुख्य रूप से शारीरिक कार्य हैं, लेकिन हृदय का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर का "*मारिफा*" या सूक्ति है जिसे सतही रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार शरीर की संवेदी क्षमताएं फंदा (यानी, "पशु आत्मा") हैं, जबकि शरीर दोनों का धारक और वाहक है, फंदा और सवार (यानी, वास्तविक आत्मा या "मानव आत्मा")। इसलिए एकजुट करने वाला फ्रेम (यानी, शरीर) हृदय के लिए एक शर्त है, जो पानी, मिट्टी और गर्मी से बना है। इसलिए, यह इतना मजबूत नहीं है। यह आंतरिक ("बाटिन") और बाहरी ("*ज़हीर*") में अपेक्षित भोजन की कमी के कारण मृत्यु के खतरे के गंभीर रूप से उजागर होता है, आंतरिक और बाहरी इच्छाओं के कारण, जानवर जैसे तत्वों के कारण, जैसे कि आग और पानी, मनुष्य में बुनियादी विकासवादी अवयवों के रूप में। इसलिए, यह स्वाभाविक रूप से खाने के लिए भोजन और पीने के लिए पानी के लिए तरसता है। कोई आश्चर्य नहीं, इसने हमेशा इन दो ताकतों को एक तरफ भौतिक शत्रुओं का मुकाबला करने की आवश्यकता महसूस की है [जो मानव जीवन और उसकी भलाई के लिए खतरा है] और दूसरी ओर लालच और क्रोध [क्योंकि ये और अन्य आंतरिक दोष आत्मा के जीवन और भलाई के लिए खतरा हैं]। ये आंतरिक शक्तियां हैं। इसलिए, पहले आत्मा का सार आता है, फिर उसकी सेनाएं और उसके बाद आंतरिक की इन दुष्ट शक्तियों के खिलाफ "संघर्ष" (यानी, ईश्वर के मार्ग में आध्यात्मिक प्रयास) आता है। इसलिए, सबसे पहले आत्मा का सार आता है [जिसे "मानव आत्मा" के रूप में भी जाना जाता है, "पशु आत्मा" के विपरीत जो केवल मानव शारीरिक अंगों और इंद्रियों के जीवन में योगदान देता है], फिर इसकी सेनाएं या बल और उसके बाद "संघर्ष" या इन दुष्ट आंतरिक शक्तियों (यानी, बुराइयों और नकारात्मक प्रवृत्तियों) के खिलाफ प्रयास करना।

चूंकि अनदेखी चीजों को देखना और शरीर और आंतरिक स्व दोनों के अदृश्य शत्रु का पीछा करना संभव नहीं है, इसलिए शरीर के इन संवेदी अंगों और आंतरिक संवेदनाओं की आवश्यकता आवश्यक हो गई। [मानवीय इंद्रियां] देखना, सूंघना, चखना, छूना और सुनना शरीर के मूल संवेदी अंग हैं। उनमें से प्रत्येक एक विलक्षण कर्तव्य निभाता है। यदि उनमें से कोई भी गड़बड़ हो जाता है, तो यह चीजों को बाधित करेगा और इस दुनिया (यानी सांसारिक जीवन) के मामले और परलोक प्रभावित होंगे। आंतरिक और बाहरी [मानव संकायों] की ये शक्तियाँ हृदय के नियंत्रण में हैं। ईश्वर ने अपनी सर्वोच्च बुद्धि में उन्हें अपने उदात्त आनंद के अनुसार हृदय के अधीन बनाया है, ताकि वे मानव शरीर की देखभाल कर सकें। ऐसा इसलिए है ताकि हृदय को अपना इनाम मिल सके, अपना शिकार प्राप्त हो सके, [ज्ञान की दिव्य कृपा के साथ] धन्य हो सके और परिणामस्वरूप, परलोक के लिए अपना सौदा पूरा कर सके। अच्छे की ये ताकतें, स्वर्गदूतों की तरह बहुत अधिक भक्ति के साथ सेवा करती हैं, और गहरी खुशी में परमेश्वर की आज्ञा मानने

में गहरा गर्व महसूस करती हैं। वे कभी भी उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य नहीं करते। हृदय के बारे में विवरण काफी लंबा है।

प्रिय प्रिय! उदाहरण के लिए, शरीर एक शहर की तरह है, हाथ और पैर इस शहर में श्रमिकों की तरह हैं। इच्छा इसका प्रमुख प्रेरक (यानी, उकसाने वाला) है। गुस्सा शहर के पुलिस प्रमुख की तरह है। दिल उसका राजा है और इसका कारण उसका प्रधानमंत्री है। राजा को सरकार चलाने के लिए उन सभी की आवश्यकता होती है लेकिन वासना, जो एक मजबूत प्रेरक शक्ति है, बुरी और उत्तेजक है। दूसरी ओर, बुद्धिमान प्रधानमंत्री की तरह बुद्धि हमेशा इसका विरोध करती है ताकि सरकार के धन का दुरुपयोग न हो या हड़प न लिया जाए। गुस्सा, जो पुलिस प्रमुख की तरह होता है, हमेशा अनियमित, प्रतिक्रियावादी और अपनी सीमाओं को पार करता है। इन परिस्थितियों में राजा जो इन सब से ऊपर है, सभी चीजों का दृढ़ता से जायजा लेता है, अपने प्रधानमंत्री (यानी बुद्धि) से सलाह लेता है और मामलों को नियंत्रण से बाहर नहीं जाने देता है। यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इच्छा और क्रोध अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं [सीमा के भीतर], और बुराई को जड़ से खत्म करना राजा का प्रमुख कर्तव्य बन जाता है। यह हृदय की स्थिति है।

शरीर की रक्षा के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा भोजन और पानी उपलब्ध कराया गया है। ऐसे में वे शरीर के सेवक हैं। शरीर, बदले में, इंद्रियों के बोझ को पकड़ने और सहन करने के लिए बनाया गया है, अर्थात, संवेदनाओं के ये समझदार एजेंट, इसलिए वे शरीर के सेवकों के रूप में कार्य करते हैं। ये इंद्रियां या संवेदी क्षमताएं परमेश्वर की अद्भुत, विस्मयकारी रचनाओं की समझ और सच्ची सराहना के लिए तथ्यों को सीखने और आत्मसात करने के कारण के पहरेदार हैं। बुद्धि, अपनी ओर से, उनके मशाल-वाहक, चमकते पथ खोजक के रूप में कार्य करने के लिए है - मनुष्य को दिव्य सौंदर्य के अद्वितीय वैभव का आनंद लेने में सक्षम बनाने के लिए मार्गदर्शक - ईश्वर की सुंदरता उत्कृष्टता, जो उसने इस ब्रह्मांड में शून्य से विकसित और डिजाइन किया है। इसलिए, यदि यह (यानी, दिव्य सौंदर्य का साक्षी) "हृदय का अदन" है, तो बुद्धि (या "*अक़्ल*") इसका सेवक है। जैसे ही मनुष्य का हृदय इस तरह से मोहित हो जाता है और उसकी महिमा से मुग्ध हो जाता है, वह ईश्वर का धन्य सेवक बन जाता है। यह निम्नलिखित पवित्र आयत [कुरान से] में दर्शाया गया है:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

"मैंने (यानी, भगवान) जिन्नों (अलौकिक अदृश्य जीव जो पृथ्वी पर मौजूद हैं) और मनुष्यों को केवल मेरी पूजा करने के लिए बनाया है। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

परमेश्वर ने मनुष्य को शासन करने के लिए हृदय और उसका राज्य दिया। उन्होंने एक को सेना प्रदान की - ऐसा करने के लिए बल, सवारी करने के लिए साधन भी, ताकि भव्यता के उच्च क्षेत्रों में वृद्धि हो सके। इसलिए, यदि कोई इस उच्च पद के उच्च अनुग्रह पर जीना चाहता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति अपनी प्रतिज्ञा का सम्मान करना चाहता है, एक विनम्र सेवक की तरह उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता है, तो उसे अपने दिल और आत्मा से उसकी आराधना करनी चाहिए, और उसे इस आशय के लिए निर्धारित मार्ग पर चलना चाहिए। इन परिस्थितियों में, व्यक्ति को स्वयं को राजा के सिंहासन पर स्थापित करना चाहिए और परमेश्वर की उपस्थिति में रहना अपना अंतिम लक्ष्य बनाना चाहिए। व्यक्ति को अपने दिल की बात सुननी चाहिए, अच्छे कर्म करने चाहिए और परलोक को अपने स्थायी निवास का वास्तविक देश मानना चाहिए। इस प्रकार, किसी को इस दुनिया को क्षणभंगुर के रूप में मानना चाहिए, जीवन के

माध्यम से यात्रा के लिए एक अस्थायी मार्ग, भगवान के साथ अंतिम मुलाकात के लिए। शरीर को सवार पर्वत, हाथ और पैर को सेवक, बुद्धि को प्रधानमंत्री और सांसारिक मामलों का पर्यवेक्षक मानना चाहिए। व्यक्ति को क्रोध को सख्त न्यायाधीश के रूप में लेना चाहिए और अपनी बुद्धि एजेंटों के रूप में ईश्वर द्वारा दी गई पांच इंद्रियों का उपयोग करना चाहिए। इसी तरह व्यक्ति को इस प्रकार प्राप्त प्रमाणों को छानने के लिए अपने दिमाग का उपयोग करना चाहिए और अपने रास्ते में आने वाले सभी बुरे खतरों और खतरों से खुद को बचाना चाहिए। प्रधान मंत्री, जो कि बुद्धि है, को भी इसी तरह यह सुनिश्चित करने के लिए कहा जाना चाहिए कि सब कुछ उसके अधिकार क्षेत्र में है और इसकी सेना, इसकी सेना इसके खिलाफ विद्रोह नहीं करती है। व्यक्ति को ऐसी योजना बनानी चाहिए ताकि किसी का प्रभार शांति का स्वर्ग बना रहे। यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति ईश्वर से आनंदमय इनाम और समृद्ध पुरस्कार का हकदार होगा। इतना ही, कि कोई जल्द ही उसके द्वारा विश्वासियों से वादा किया गया सफलता का मुकुट धारण करेगा। अन्यथा, एक को उन लोगों में गिना जाएगा जिन्होंने सब कुछ खो दिया। ऐसे अभागे व्यक्ति पर कार्रवाई की जाएगी और प्रतिशोध ही बहुत कुछ होगा।

नतीजतन, किसी को यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का आंतरिक प्राणी, आत्मा की शक्तियों से सीधा संबंध है। इस प्रयोजन के लिए, व्यक्ति विशेष गुणों और विशेषताओं से संपन्न है। बुरे गुण और विशेषताएं एक को बर्बाद कर देती हैं, जबकि अच्छे लोग भाग्यशाली के उच्च स्तर पर उठाते हैं। हालांकि विविध हैं, इन स्वभावों (या आंतरिक गुणों) में से चार को मनुष्य में प्रमुख श्रेणियों के रूप में माना जा सकता है:

1) [जंगली जंगली] जानवरों की विशेषताएं,
2) स्वर्गदूतीय गुण,
3) शैतानी दुर्गुण,
4) जानवरों के लक्षण।

उदाहरण के लिए, मानव लालच किसी को अपवित्र आवेगों के अधीन कर देता है, जबकि सामान्य आग्रह, जैसे खाने, पीने, और प्राकृतिक यौन प्रवृत्तियों की पूर्ति का सहारा लेना, जो जानवरों के पास भी होता है, दोनों के लिए सामान्य रहता है (यानी, मनुष्यों और जानवरों के बीच)। दूसरी ओर, मनुष्य के [बर्बर] जानवर जैसे गुण जो शारीरिक तबाही से अपने दुश्मन पर हमला करने और उसे चीरने के हैं, एक बेकाबू क्रोध से प्रेरित होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर झगड़े, छोटे-मोटे झगड़े होते हैं और उन लोगों की निंदा और दुर्व्यवहार होता है जिन्हें कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता।

इसके विपरीत, मनुष्य में बुद्धि, ज्ञान व्यक्ति को प्रेरित करता है, भगवान को प्रसन्न करने के लिए अच्छा करने और बुरे को रोकने के अंतर्निहित उद्देश्य के साथ सेराफिक कर्म करने के लिए। ऐसा व्यक्ति लोगों की शिक्षा (जागरूकता और ज्ञान) को बढ़ावा देता है, कई तरह से उनकी मदद करता है और आम तौर पर अपने साथी मनुष्यों के लिए एक सेवकाई देवदूत होता है। व्यक्ति ईश्वरीय सत्य की सराहना करता है और अज्ञानता और बुरे व्यवहार को [किसी के प्रति, गलत और] अवांछनीय मानता है।

इस प्रकार, चरित्र के इन विशेष झुकावों को मोटे तौर पर शिकारी कुत्तों की तरह प्रवृत्तियों, सूअर जैसे तरीकों, शैतानी दोषों और स्वर्गदूतों की आदतों के साथ दर्शाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कुत्ता देखने में बदसूरत नहीं है, लेकिन आदत से अनियंत्रित होने के लिए उपयुक्त है। इतना कि कई बार यह अपनी तरह से भौंकने लगता है। उसी तरह, सुअर प्राणियों में सबसे बदसूरत नहीं है, लेकिन गंदी और

अशुद्ध चीजों के लिए अपने अव्यक्त सनक के कारण इसे आम तौर पर घृणा की जाती है। सूअर शब्द ही एक गंभीर शब्द और अभिशाप है। शैतान और कुत्ता समान रूप से स्थित हैं। मनुष्य में भी ये गुण होते हैं। "शैतानी गुणों" का यही अर्थ है। इसका विपरीत "देवदूत गुण" है। इन शब्दों का अर्थ क्रमशः शैतानी होना या देवदूत की तरह होना है।

इसीलिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा, "एक शैतान लगभग प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद है। मैं भी उससे अछूता नहीं हूं, लेकिन भगवान, दयालु ने मुझे उस पर आरोपित और अभिभूत कर दिया है। वह (यानी, शैतान) असहाय है [मेरे खिलाफ]"।

इसी तरह, मनुष्य को वासना और व्यभिचार के सूअरों और नरसंहार और जंगली क्रोध के इलाज पर काबू पाने की कोशिश करने के आदेश और दायित्व के अधीन है। इसलिए, मनुष्य को उन सभी का प्रतिवाद करना चाहिए जो दुष्ट और शातिर हैं। निस्संदेह, जो ऐसा करता है, उसे परमेश्वर द्वारा ऐसे पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा, जो इस तरह के उत्कृष्ट व्यवहार के कारण प्राप्त होते हैं। इसी तरह, बुरे चरित्र की बदसूरत आदतें व्यक्ति को दुर्भाग्य की ओर ले जाएंगी और [अच्छी तरह से योग्य] भगवान द्वारा सजा [सरासर ईश्वरीय न्याय से] ।

ऐसे व्यक्ति की स्थिति की कल्पना की जा सकती है। कोई भी खुद को कुत्ते, सूअर या शैतान के सामने हथकड़ी पहने हुए खड़ा पाएगा। इसका कारण यह है कि यदि किसी विश्वासी को किसी अविश्वासी को सौंप दिया जाता है, तो उसके साथ जो व्यवहार किया जाएगा वह स्पष्ट है। और यदि एक स्वर्गदूत को सूअर, शाप या शैतान के हाथ में सौंप दिया जाए, तो उसकी स्थिति विश्वासी से भी बदतर होगी। किसी की पूरी तरह से निराशा और निराशा के लिए, सांसारिक क्रोध के लक्षण से शापित मनुष्य खुद को एक भयानक शिकारी कुत्ता या भेड़िये के रूप में पाएगा और जो वासनाओं का शिकार हो गया है, वह खुद को सूअर के रूप में देखेगा, न्याय के दिन। यदि किसी भेड़िया को सपने में किसी के द्वारा इसी तरह देखा जाता है, तो इसका मतलब यह होगा कि वह व्यक्ति अत्याचारी है। सुअर के मामले में, कोई अनुमान लगा सकता है कि एक गंदा और अपमानित है। एक व्यक्ति उनसे और उनकी पसंद से जितना दूर जाता है, उतना ही अधिक व्यक्ति का सामान्य व्यवहार और आंतरिक स्व इस बात के अनुरूप होगा कि कोई खुद को कैसे संचालित करता है।

अब जब हम आंतरिक स्व के आदेश देने वालों के बारे में जानते हैं, तो अपनी आँखें अपने भीतर के भीतर डालें और अपने लिए आकलन करने का प्रयास करें कि उनमें से किसने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है और आप कहाँ स्थित हैं। सावधान रहें कि आपके कार्य और कर्म आप में एक संबंधित चरित्र विशेषता पैदा करेंगे जो आपको बना देगा या बिगाड़ देगा। वास्तव में, अच्छे से अच्छाई के अलावा कुछ भी नहीं निकलता है। इसी तरह, यदि आप इच्छा के सूअरों के प्रति आज्ञाकारी हैं, तो आपके पास अपवित्रता, बेशर्मी, लोभ, चापलूसी, गंदगी, और दूसरों की दुष्टता पर खुश रहने की समान आदतें होंगी। हालाँकि, यदि आप सूअरों को दबाने में सफल होते हैं [जैसे गुण आपके आंतरिक स्व में], इससे बेहतर हो रहे हैं, तो आपको संतुष्टि, अनुग्रह, ज्ञान, धर्मपरायणता और निस्वार्थता आदि के गुणों का ताज पहनाया जाएगा।

यदि आप डरावनी और भय के शिकार से आगे निकल जाते हैं, तो हानिकारक [आंतरिक] लक्षण जो आप में विकसित होंगे, वे उतावलेपन और परिणामों से बेखबर रहने, अशुद्धता, डींग मारना, अहंकार, अपने दोषों का दिखावा करना, दूसरों को ताना मारना और प्रताड़ित करना, दूसरों के साथ झगड़े और झगड़े

करना होगा। फिर भी, यदि आप विनाश के इस कुत्ते पर विजय प्राप्त करते हैं, तो आप धैर्य, सौम्यता, क्षमा, स्थिरता, बहादुरी, शांति और संतता (आंतरिक शुद्धता) के अतिरिक्त गुणों को प्राप्त करेंगे।

इसी तरह, यदि आप शैतान की आज्ञा का पालन करते हैं, जिसका मुख्य कार्य कर्क और सूअर की सहायता करना और उसे बढ़ावा देना है, उसके नापाक इरादों से लोगों को गुमराह करना, परेशानी पैदा करना, बेईमानी और मिलावट आदि का सहारा लेना है, तो आप स्वयं उससे इन शैतानी गुणों को विरासत में लेंगे। लेकिन अगर आप उसकी छलों में न पड़कर उसे हराने में सक्षम हैं और अपनी बुद्धि और अच्छे बलों को मजबूत करते रहते हैं, तो आप ज्ञान, ज्ञान ("*मारिफा*"), ज्ञान, गहन दूरदर्शिता, क्षमता और एक सुंदर आंतरिक चरित्र और बाहरी आचरण ("*हुस्न उल खुलक*" या "*हुस्न अल-इखलाक")* प्राप्त करेंगे"). ये महान गुण आपके निरंतर साथी और मार्गदर्शक होंगे। वे हमेशा के लिए आपकी अच्छी यादों के वास्तविक आधार के साथ आपके सौभाग्य के बीज बोएंगे।

इसके विपरीत, बुरे कर्मों को पाप या दुर्गुण कहा जाता है। उनके विपरीत भेद में, अच्छे कर्मों को "इबाद" या ईश्वर की पूजा कहा जाता है। दिल एक चमकदार दिखने वाले कांच या पॉलिश किए गए दर्पण की तरह है। बुरे रास्ते बादलों और अंधकार की तरह हैं। बुरा चरित्र दिल के दर्पण को धूमिल और काला कर देता है। ऐसा चरित्र रखने वाले व्यक्ति को कभी भी परमेश्वर की उपस्थिति या परमेश्वर की गवाही देने की सौम्य आशीषें नहीं मिल सकती हैं। किसी को भी उसके उपकार के उदात्त दृष्टिकोण के आशीर्वाद से धन्य नहीं किया जा सकता है। वास्तव में, चरित्र की एक उच्च अखंडता प्रकाश ("नूर") की तरह है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

اتبعَ السَّيِّئَةَ الحَسَنَةَ تَمْحُهَا

"बुरे के बाद एक अच्छा कर्म करना चाहिए ताकि वह उसके बुरे प्रभाव को दूर कर सके"।

अर्थात्, किसी बुरे कर्म के तुरंत बाद अच्छा कर्म करना चाहिए [जो अज्ञानता, असावधानी या गलत प्रभाव के कारण हम क्या कर रहे हैं, इसका एहसास किए बिना किया गया था]। केवल वही धन्य होगा जो बुराई से शुद्ध होकर आएगा। न्याय के दिन, एक मानव हृदय या तो उज्ज्वल या अंधेरा होगा। चमकते चेहरे वाला (हृदय की आंतरिक सुंदरता का प्रतिनिधित्व करने वाला) ही धन्य होगा:

إِلَّا مَنْ أَتَى ٱللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

"सिवाय उस व्यक्ति के जो स्वस्थ हृदय से परमेश्वर के पास आता है। (कुरान, अध्याय 26, श्लोक 89)

सृष्टि की शुरुआत से ही मनुष्य का हृदय स्टील की तरह ठोस होता है जिससे पारभासी हृदय बना होता है। इसमें पूरे ब्रह्मांड को देखा जा सकता है, बशर्ते कि इसे सुरक्षित रूप से संरक्षित किया जाए और इसे धूमिल न होने दिया जाए। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने ऐसा आदेश दिया है:

كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ

"नहीं, वास्तव में, वे जो कमा रहे हैं, उससे उनके दिलों पर जंग लग गई है। (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 14)

प्रिय प्रिय! आप कह सकते हैं कि चूँकि मनुष्य में भी जानवरों, शैतानों और जानवरों के लक्षण और विशेषताएँ हैं, तो देवदूत जैसे गुण किसी की संपत्ति कैसे हैं जबकि अन्य चीजें क्षणभंगुर हैं? कोई कैसे पता लगा सकता है कि मनुष्य को स्वर्गदूतों के चरित्र के लिए बनाया गया है और वास्तव में, इसका अन्य चीजों से कोई लेना-देना नहीं है? इसका उत्तर इस अकाट्य तथ्य में निहित है कि मनुष्य को "*अशरफुल मखलुकत*" या ईश्वर की सभी रचनाओं में सबसे श्रेष्ठ के रूप में बनाया गया है। इस प्रकार, कोई जानवर और जानवरों से श्रेष्ठ है। इसमें कोई संदेह नहीं है, परमेश्वर द्वारा प्रत्येक चीज़ पर जो आध्यात्मिक कद दिया गया है, वह उसके प्रति उसकी दयालुता की परिणति है। उदाहरण के लिए, घोड़ा गधे से श्रेष्ठ है क्योंकि गधा केवल वजन उठाता है, जबकि एक घोड़ा शूरवीर-सवार की पूर्ण कमान के लिए लड़ाई में बहादुरी से सरपट दौड़ता है, हालांकि अपने स्वयं के सामर्थ्य में, घोड़ा गधे की तरह वजन भी उठा सकता है। इसलिए, उनके बीच एक स्पष्ट अंतर है। यदि घोड़े में ये गुण और अधिक सुंदर असर नहीं होता, तो उसका कद भी सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए गधे के बराबर हो जाता।

इसी तरह, कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें खाने-पीने और शारीरिक सुखों की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए बनाया गया है। इस तरह के लोग अपना सारा जीवन ऐसे असहाय कामों में बर्बाद कर देते हैं। ऐसे अन्य लोग हैं जो मानते हैं कि वे केवल अपने विरोधियों और अपने साथी मनुष्यों को नीचा दिखाने, नीचा दिखाने और उन पर हावी होने के लिए पैदा हुए हैं। विजेता या पराजित, उन पर वर्चस्व हासिल करने के लिए अप्रत्याशित घटना लागू की जाती है, चाहे वे अरब, तुर्क, या कुर्द [या उस मामले के लिए कोई अन्य जाति या जातीयता] हों। जाहिर है, ये दोनों विचारधाराएं गलत हैं, क्योंकि केवल खाने, पीने और यौन संयुग्मन का उपरोक्त जीवन इच्छा के तत्व पर निराश है। यहां तक कि जानवरों की भी ऐसी इच्छाएं होती हैं। ऊंट भारी मात्रा में भोजन और पानी का उपभोग करने की अपनी गुणवत्ता के लिए जाना जाता है, जबकि सुअर में अत्यधिक शारीरिक क्षमताएं होती हैं। फिर मनुष्य को उनके लिए उच्च दर्जा कैसे माना जाता है?

साथ ही, दूसरों पर काबू पाने और उन्हें वश में करने की इच्छा बढ़ते स्वभाव और क्रोध के कारण होती है। यह प्राकृतिक घटना भी मौजूद है, तर्क दिया जा सकता है, चरने वाले जानवरों और जंगलों के जंगली जीवों में। इसलिए फिर से, मनुष्य उनसे श्रेष्ठ कैसे हो गया? [मनुष्य और जानवरों के बीच] अंतर और अंतर कहाँ है? इसका उत्तर आत्म-व्याख्यात्मक है कि इसके बावजूद (यानी, कम आधार गुण जो मनुष्य जानवरों के साथ साझा करता है), मनुष्य की तुलना में मानव के पास जो उद्धार गुण है, वह यह है कि मनुष्य, सभी रचनाओं के बीच, बुद्धि से धन्य है, जिसके साथ व्यक्ति अपने सर्वोच्च गुरु, ईश्वर को भी पहचानता है। यह किसी को स्वेच्छा से उसकी हस्तकला, उसकी रचनात्मक प्रतिभा की सराहना और प्रशंसा करने में भी सक्षम बनाता है। यह किसी के नश्वर शत्रुओं, क्रोध और लालच को हराने में भी मदद करता है। ये (यानी, क्रोध, लालच और निचले स्व के अन्य आधार गुणों की कमी) स्वर्गदूतों की विशेषताएं हैं। उनके गुण ही पक्षियों, जानवरों और जानवरों के [स्तर] से ऊपर उठते हैं। इसलिए, मनुष्य बनाई गई सभी चीजों से श्रेष्ठ है और उन पर एक विशिष्ट बढ़त है। वे सभी एक के इशारे पर हैं। एक सभी बनाई गई चीजों ("*अशरफ अल-मखलुकत*") *में सबसे श्रेष्ठ है*।

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗا مِّنۡهُۚ

"और जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ उसी की ओर से उस ने तुम्हारे अधीन कर दिया है। (कुरान, अध्याय 45, श्लोक 13)

इस प्रकार, मनुष्य की महानता किसी की सत्यनिष्ठा की महानता में निहित है, जिस हद तक वह निर्धारित गुणों में उत्कृष्टता प्राप्त करता है, सभी उपलब्धियों में सबसे बड़ी ईश्वर की "*मारिफा*" या ज्ञान-विज्ञान है। बाकी लक्षण तुलना में फीके पड़ जाते हैं, हालांकि असंख्य महान प्रेरक शक्तियां (क्षमताएं) मनुष्य को अपनी महिमा के लिए प्रदान की गई हैं। इस प्रकार, यह विचार के लिए भोजन है कि जब मनुष्य मरता है, तो [निम्न आधार] इच्छा और क्रोध जैसे बुरे प्रमुख लक्षण भी मर जाते हैं। जो [मृत्यु के समय और बाद में मनुष्य का] रहता है वह उच्च गुणवत्ता का एक 'रत्न' है जो भगवान के "*मारिफा*" या सूक्ति के साथ सेराफिक तरीके से अलंकृत है। यह एक का निरंतर साथी है। यह रत्न स्वर्गदूतों का मित्र भी है, जो हमेशा विनम्रतापूर्वक प्रवण रहते हैं, हर समय उसके सामने पूजा करते हैं:

فِى مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ

"सत्य के आसन पर, एक सर्वशक्तिमान राजा की उपस्थिति में। (कुरान, अध्याय 54, श्लोक 55)

या, जब कोई मनुष्य मर जाता है, तो उसके अवशेष एक अंधेरी, अंधी चीज होती हैं - अपने दोषों के कारण अंधेरा और कलंकित होता है, लेकिन क्रोध और अहंकार की अनुपस्थिति के कारण अंधा होता है जो एक अहंकार को शांत और संतुष्ट करता था [सांसारिक जीवन में]। इसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति इस नीच क्षेत्र में रहता है जो उसके बाद पूर्व क्षेत्र से विरासत में मिला है:

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ

"आप अपराधियों को उनके भगवान के सामने सिर झुकाए हुए देखेंगे। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 12)

इसका मतलब है कि कोई ऐसी स्थिति में होगा जब किसी को शैतान के साथ "*सिज्जीन*" (मृत्यु के बाद के जीवन में अस्तित्व का सबसे निचला और सबसे दुखद क्षेत्र) में भेजा जाएगा। "*सिज्जीन*" *शब्द की व्याख्या सभी* को नहीं पता है। इसलिए, परमेश्वर ने आदेश दिया है:

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ

"और आप क्या जानते हैं कि '*सिज्जीन*' क्या है?" (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 8)

दिल की दुनिया के अजूबे बेहद के हैं। उच्च स्थिति, पवित्रता का सत्य आसन जो हृदय के पास शरीर के सभी अंगों की तुलना में है, वह इस तथ्य के कारण है कि हृदय अपने आप में नया है, लेकिन अधिकांश लोग इससे बेखबर हैं। हृदय की भव्यता और उसकी धर्मपरायणता दो प्रमुख कारणों से है:

1) के कारण "'*इल्म*" या ज्ञान, और
2) के कारण "*कुदरा*" या शक्ति और क्षमता।

ज्ञान के कारण महानता दो कारणों से होती है: एक सभी के लिए जाना जाता है और स्वयं-स्पष्ट है जबकि दूसरा छिपा हुआ और सूक्ष्म है। कोई भी इसकी थाह नहीं ले सकता। ज्ञान को उसकी सभी पेचीदगियों के साथ आत्मसात करने की हृदय की क्षमता और शक्ति इसके दायरे में है। यद्यपि यह अविभाज्य है, यह अंकशास्त्र, अंकगणित, चिकित्सा, ज्योतिष, दिव्य नियम आदि को आसानी से पढ़ और समझ सकता है। इसमें शिक्षा के सभी रूपों को शामिल किया गया है, जो हृदय में ऐसे समाहित हैं जैसे रेगिस्तान में रेत है।

कुछ ही समय में, यह अपनी निरंतर गति और दूरदर्शिता के कारण पृथ्वी से आकाश और पूर्व से पश्चिम की दूरी को कवर कर लेता है। यद्यपि यह जमीन पर है, यह विशाल क्षितिज की दूर तक पहुंच को मापता है और आकाशगंगा में सभी सितारों और नक्षत्रों और उनके बीच की दूरी से अवगत है। यह मछली को पानी से बाहर निकालता है, पक्षियों को आकाश से जमीन पर गिराता है, ऊंट, घोड़ा और हाथी जैसे जानवरों को किसी की आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर करता है। शरीर की पांच संवेदी धारणाएं इसका व्यवसाय हैं। यह स्पष्ट है कि वे सभी किसी के हृदय की ओर निर्देशित हैं। वे आध्यात्मिक क्षेत्र (आत्माओं के क्षेत्र) में विवेक के द्वार हैं, दिल में एक दरवाजा खुला है [आत्माओं के दायरे की ओर]। दूसरी ओर, अधिकांश लोग केवल भौतिक दुनिया (भौतिक क्षेत्र) की परवाह करते हैं और इन भौतिक संवेदनाओं को ज्ञान की प्राप्ति के लिए एकमात्र मार्ग मानते हैं।

दरअसल, ये दोनों दरवाजे छोटे हैं, फिर भी दिल में कई दरवाजे हैं जो कई तरह के ज्ञान और शिक्षा प्राप्त करने के लिए खुले हैं। दो परिसरों में से, आइए हम पहले को लें, अर्थात, जब कोई सो जाता है और एक सपना देखता है, तो ये संवेदी अंग निष्क्रिय हो जाते हैं लेकिन हृदय का द्वार खुल जाता है, जिसके परिणामस्वरूप आत्माओं के दायरे में और "लोह *महफूद*" या "संरक्षित गोली" (यानी, भगवान की बुक ऑफ रिकॉर्ड्स जिसमें अतीत का ज्ञान शामिल है, वर्तमान और भविष्य), व्यक्ति नियत चीजों को देखना शुरू कर देता है (जिसके बारे में भगवान पहले से ही जानते हैं) या भविष्य में क्या होने वाला है, इसके बारे में पता चल जाता है। कभी-कभी आने वाली चीजों के संकेत मिलते हैं जिनकी व्याख्या की मांग की जानी चाहिए। यह इस तथ्य के बावजूद है कि, एक नियम के रूप में, यह माना जाता है कि जो जागता रहता है वह "*मारिफा*" या ग्नोसिस के लिए अधिक योग्य है। फिर भी उन्हें एहसास है कि, आम तौर पर बोलते हुए, इन संवेदी एजेंसियों के आधार पर "आलम *अल-ग़ैब*" (अदृश्य और अज्ञात का डोमेन) की इन बातों को जानने की संभावना कम है।

इन सपनों के विषय पर एक आकस्मिक नस में ध्यान देना संभव नहीं है, लेकिन यह कहना पर्याप्त है कि दिल एक साफ पॉलिश किए गए दर्पण की तरह है और संरक्षित टैबलेट ("लोह *महफूद*") एक दर्पण की तरह है जिसमें भौतिक अस्तित्व के दायरे में सभी चीजों की तस्वीरें ("'आलम *मौजूदत*"), हम जिस क्षेत्र में हैं, उसे देखा जा सकता है। जब [हृदय का] साफ पॉलिश किया हुआ दर्पण इन प्रतिकृतियों के सामने रखा जाता है, तो वे स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते हैं। तो कोई आश्चर्य नहीं कि जैसे, जब हृदय एक साफ पॉलिश किए गए दर्पण की तरह होता है और कोई इन संवेदनाओं की उत्तेजनाओं को विक्षेपित करने से स्वयं को अलग कर देता है [अस्तित्व के भौतिक क्षेत्र से], व्यक्ति संरक्षित टैबलेट ("लोह *महफूध*") के करीब आ जाता है। जब तक हृदय ऐसी वास्तविक संवेदनाओं से भरा रहता है, तब तक वह आध्यात्मिक क्षेत्र में परमानंद में घूमता रहता है ("'आलम *रूहानी*")। हालांकि, सपने में, ये संवेदनाएं बंद हो जाती हैं लेकिन उनकी छवि या विचार बना रहता है। जबकि "आलम *मिठाल*" (कल्पना का क्षेत्र) में, भावना या विचार की कल्पना की जा सकती है, हालांकि कभी-कभी, बल्कि मंद रूप से। जब मनुष्य मर जाता है, तो अंततः पर्दा हटा दिया जाता है। कोई धारणा या संवेदनाएं [भौतिक क्षेत्र से] नहीं बची हैं। पदार्थ (यानी, सत्य, वास्तविकता और चीजों की वास्तविक प्रकृति) पारदर्शी हो जाती है। फिर मृतक को बताया जाता है:

فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ ٱلْيَوْمَ حَدِيدٌ

"अब हमने तुमसे तुम्हारा घूंघट हटा दिया है और आज तुम्हारी दृष्टि तेज है। (कुरान, अध्याय 50, श्लोक 22)

एक जवाब देता है:

رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَٱرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ

"हमारे प्रभु! हमने देखा और सुना है; हमें [दुनिया में] लौटा दो, और हम धर्म के काम करेंगे; अब हम निश्चित हैं [पदार्थ की वास्तविकता के बारे में निश्चितता के साथ]। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 12)

दिल के दरवाजे के "आलम अल-मलकुट" *या स्वर्गदूतों के दायरे की ओर होने का दूसरा प्रमाण* यह है कि ऐसा कोई भी नहीं है जो विवेकपूर्ण विचार और पवित्र गलतफहमियों या आगे की संभावित बाधाओं के डर से प्रतिरक्षित हो। ऐसे विचार इंद्रियों से नहीं निकलते हैं, बल्कि दिल से निकलते हैं। कोई भी इन प्रत्याशित खतरों की उत्पत्ति और स्रोत को नहीं जानता है। यह विश्लेषण इस बात की पुष्टि करता है कि सभी ज्ञान संवेदी अंगों से उत्पन्न नहीं होते हैं। इसके अलावा, हृदय वास्तव में "*'आलम रूहानी*" या आत्माओं के दायरे से संबंधित है, न कि इस [भौतिक] दुनिया से। जाहिर है, ये संवेदी अंग इस दुनिया के लिए बनाए गए हैं। जब तक मनुष्य इस संसार के सांसारिक विचारों से छुटकारा नहीं पा लेता, तब तक कोई भी अगले संसार के लिए एक सहज मार्ग नहीं बना सकता है, जहाँ इन संवेदी अंगों का कोई उपयोग नहीं होगा।

इसलिए, यह गलत मत समझो कि जब तक कोई मनुष्य गहरी नींद में नहीं जाता या मर नहीं जाता, तब तक उसके हृदय का आत्मा के क्षेत्र का द्वार नहीं खुलेगा। यदि कोई कड़ी मेहनत करता है, अहंकारी क्रोध पर विजय प्राप्त करता है, अपने आप को शुद्ध करता है, अर्थात्, अपनी आत्मा, बुराई से, अपनी आँखें बंद कर लेता है, एक एकांत स्थान पर बैठ जाता है, सभी सांसारिक विचारों को नष्ट कर देता है और अपने दिल और आत्मा को आत्माओं के दायरे में इस तरह से लीन कर देता है कि कोई अपनी जीभ से एक शब्द नहीं कहता है, लेकिन उसके हर रोम में "*अल्लाह, अल्लाह*" (यानी, ईश्वर का एकमात्र व्यक्तिगत नाम, जबकि, "ईश्वर" सर्वोच्च व्यक्ति को संदर्भित करने का एक सामान्य भाषा विशिष्ट तरीका है, जो हर चीज का स्वामी, निर्माता, पालनकर्ता और प्रदाता है जिसे उसने अस्तित्व में लाया है) हर दिल की धड़कन के साथ, लगातार जब तक कोई ईश्वर को छोड़कर अपने और पूरी दुनिया से पूरी तरह से अनजान नहीं हो जाता, तब तक किसी के दिल में आशीषों का द्वार खुल जाएगा और खुला रहेगा। जागने की अवस्था में कोई देखेगा कि दूसरे नींद में क्या करेंगे। स्वर्गदूतों की सुंदर आत्माएं सुरम्य आकृतियों में एक पर उतरेंगी। कोई परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को देखना शुरू कर देगा और उनसे लाभान्वित होगा। इस दुनिया के स्वर्गीय जीव और "मालाकूट" के बगल में - उत्कृष्ट देवदूतता, उसे दिखाई देगी। एक, जो इतना भाग्यशाली है, वह अजीब दर्शन और अलौकिक चीजों को देखेगा, जो किसी की अवधारणा से बहुत दूर है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह कहावत उन पर हो) ऐसे ही व्यक्ति के बारे में है। यह स्पष्ट करता है कि ऐसी चीजें मनुष्य के सोए या मृत होने के बिना संभव हैं:

زُوِيَتْ لِي الْأَرْضُ فَأُرِيتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا

"पूरी पृथ्वी मुझे दिखाई गई थी, इसलिए मैंने इसके पूर्व और उसके पश्चिम को देखा।

पवित्र कुरान की निम्नलिखित आयत भी इस मुद्दे पर आधारित है:

وَكَذَٰلِكَ نُرِىٓ إِبْرَٰهِيمَ مَلَكُوتَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ

"और इस प्रकार, हमने [पैगंबर] अब्राहम को आकाश और पृथ्वी का राज्य (प्रभुत्व) दिखाया। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 75)

आश्वस्त विश्वास और भविष्यवक्ताओं का सही न्याय समान था। इसका इंद्रियों से कोई लेना-देना नहीं था, बल्कि, राजकीय उपलब्धि परमेश्वर के लिए उनके कठिन परिश्रम का फल थी। परमेश्वर ने घोषणा की है:

وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا

"और अपने आप को भक्तिपूर्वक (अत्यंत ईमानदारी से भक्ति के साथ) भगवान को समर्पित करें। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 8)

वास्तव में, जब ऐसा होता है, तो वह सब कुछ ठीक कर देता है। वह अकेला ही सभी सक्षम है:

رَّبُّ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱتَّخِذْهُ وَكِيلًا

"पूर्व और पश्चिम के स्वामी; उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, इसलिए उसे [अपने सभी मामलों का] देखभाल करने वाला मानें। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 9)

इसलिए, जब आप उस पर और केवल उस पर निर्भर करते हैं, तो उसके अलावा अन्य सभी चीजों के साथ सभी [आपके] संबंधों को अलग कर दें और आपको चिंता करने की कोई बात नहीं होगी [क्योंकि वह आपके सभी मामलों का सबसे अच्छा निपटान करने वाला है]:

وَٱصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَٱهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا

"और वे जो कहते हैं उसे धैर्यपूर्वक सहन करें [झूठ, आहत करने वाली चीजों, हमलों, आरोपों, गाली-गलौज और आलोचनाओं के संदर्भ में] और उन्हें शालीनता से त्याग दें। (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 10)

इस तरह के प्रमुख गुण को उनके अथक परिश्रम में दृढ़ होने और उसके प्रति निरंतर कर्तव्यनिष्ठ रहने की कठोरता में प्रदर्शित किया जाता है। यह मनुष्य के हृदय को शुद्ध करता है। व्यक्ति लोगों की शत्रुता के सभी भय और सांसारिक चिंताओं और लालसाओं के लुभावने फंदों से ऊपर उठता है। इस तरह के ज्ञान का गर्वित मालिक होना, इस तरह की कड़ी मेहनत के बाद प्राप्त करना, अकेले धन्य, "वली" या भगवान के मित्र और अंतरंग का ईर्ष्यापूर्ण सौभाग्य है। एक उच्च कुरसी पर स्थापित है। फिर भी स्पष्ट कारणों से परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं की स्थिति उनके लिए अधिक है।

हालाँकि, गुमराह न हों कि इस तरह की [एक ऊँची आत्मिक] स्थिति का अधिग्रहण केवल परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं पर लागू होता है। वास्तव में, हर व्यक्ति अपने आप में इसके लिए सक्षम है। उदाहरण के लिए, कोई लोहा नहीं है, जो अपने स्वयं के मूल आंतरिक चरित्र के कारण, एक पॉलिश दर्पण में ढाला नहीं जा सकता है जिसमें कोई भी दुनिया में किसी भी चीज़ का चेहरा देखने में सक्षम हो सकता है। बाद में इसे कलंकित और बदनाम किया जा सकता है, यह एक और मामला है। स्वाभाविक रूप से, सांसारिक लालच और प्रलोभन इसे बहुत नुकसान पहुंचाते हैं और [पॉलिश] दर्पण को [हृदय के] विकृत कर देते हैं।

बुराई एक ऐसा खतरा है [कि यह हृदय के पॉलिश किए गए दर्पण को ढक देता है और विकृत कर देता है जो अब सत्य और ईश्वर के प्रकाश को प्रतिबिंबित करने में सक्षम नहीं रहता है]।

मनुष्य को स्वयं को वास्तविकता और सत्य की सतही समझ तक सीमित नहीं रखना चाहिए। [इसके बजाय,] किसी को यह महसूस करना चाहिए कि किसी के व्यवसाय में, किसी के सीखने में ईश्वर का "*मारिफा*" या ज्ञान है। ज्ञान का यही अर्थ है। फिर भी, ज्ञान अपने आप में हृदय से संकीर्ण और छोटा है। हृदय शरीर का सवार है [और इसके विपरीत नहीं]। दिल का उद्देश्य सवार के लिए अपने माउंट की सवारी करना है। घोड़ा (यानी, शरीर) सवार (यानी, हृदय) के लिए है, न कि घोड़े (यानी, शरीर) के लिए सवार (यानी, हृदय)।

समझें कि आपके अपने स्वयं से अधिक कुछ भी आपके निकट नहीं है, लेकिन आप ऐसा करने में विफल रहते हैं। जो व्यक्ति स्वयं को नहीं जानता है और दूसरे को जानने का दावा करता है, वह उस कंगाल की तरह है जो अपना पेट नहीं भर सकता बल्कि शहर के गरीबों और निराश्रितों को अपनी डाइनिंग टेबल पर रखने का दावा करता है। ऐसा दावा बेतुका है।

इस प्रवचन का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति को यह महसूस करना चाहिए कि उसका हृदय कितना महान और विशेषाधिकार प्राप्त है। भगवान ने आपको यह जबरदस्त आशीर्वाद दिया है लेकिन इसे आपसे छिपाकर रखा है। यदि तुम इसका अन्वेषण नहीं करते हो, [बल्कि,] इसे बर्बाद करते हो, इसके प्रति लापरवाही करते हो, तो यह तुम्हारे लिए बहुत नुकसान और विलाप की बात होगी। इसलिए, यह आप पर निर्भर है कि आप सत्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करें - इस महान दिव्य उपहार का गुण। इस दुनिया की सामान्य गतिविधियों में अपनी खोज खोने के बजाय, इसकी परिणति [और अंतिम उद्देश्य] की तलाश करें ताकि आपको इस दुनिया में और परलोक में माना और सम्मानित किया जा सके। अर्थात्, ईश्वर आपको ऐसी स्थिति और स्थिरता प्रदान कर सकता है कि उसके बाद कोई अस्थिरता न हो, कि आपको ऐसी शक्ति मिल सके कि उसके बाद कोई कमजोरी न हो, कि आप इस तरह के "*मारिफा*" या ज्ञान-विज्ञान से प्रतिष्ठित हो सकें कि दिव्य सौंदर्य की निकटता आपकी ईर्ष्यापूर्ण नियति हो सकती है। आपको ऐसा आनंद प्राप्त हो सकता है कि इसे धीमा करने के लिए कुछ भी नहीं होना चाहिए। आप इस तरह की वास्तविक स्थिति प्राप्त कर सकते हैं यह आपके प्रदर्शन और उस क्षमता पर निर्भर करता है जिसे आप इसके लायक बनाने में सक्षम हो सकते हैं।

यह बहुत जरूरी है। अन्यथा, यदि तुम मामलों का विश्लेषण करोगे, तो तुम पाओगे कि गर्मी, ठंड, भूख, प्यास, बीमारी और संकट की विनम्रता में रहने से बड़ा कोई दुख नहीं है। जिन चीजों को करने में कोई आनंद लेता है, वे कभी-कभी किसी के लिए हानिकारक हो सकते हैं। वे चीजें जो सोचती हैं कि किसी के लिए फायदेमंद हो सकती हैं, वे देखभाल, तनाव और तनाव से भरी हो सकती हैं। इसलिए, व्यक्ति को सावधानी से चलने की जरूरत है।

एक सम्मानित व्यक्ति, हम [आम तौर पर] जानते हैं, किसी के ज्ञान, शक्ति, उपलब्धियों, दृढ़ इच्छाशक्ति, धैर्य और अच्छी प्रोफ़ाइल के कारण सम्मानित व्यक्ति है। साथ ही, जहां तक किसी व्यक्ति के ज्ञान, सीखने या शिक्षा का संबंध है, यदि हम उस पर ध्यान की दृष्टि डालते हैं, तो हम पाएंगे कि वह सबसे अधिक अज्ञानी है, अर्थात, यदि किसी के मस्तिष्क की एक भी नस विकृत हो जाती है, तो उसके पागल होने या उसकी मृत्यु का भी खतरा होता है। कोई भी इसके कारण या उपचार का पता नहीं करता है। इसके अलावा, इसके इलाज के लिए दवा किसी की आंखों के ठीक सामने पड़ी हो सकती है, लेकिन किसी को

पता नहीं हो सकता है कि यह वही दवा किसी की बीमारी का इलाज है। अपनी शक्ति के संबंध में, व्यक्ति इतना असहाय होता है कि कभी-कभी कोई मक्खी को भी नहीं मार सकता है। उस मामले के लिए, यदि एक शेर को भगवान द्वारा ऐसा करने के लिए नियुक्त किया जाता है, तो वह उसके द्वारा मारा जाता है। यदि ततैया तार करती है, तो वह बेचैन हो जाता है। इसी तरह, कोई अपनी पकड़ खो देता है, बहुत चिंतित हो जाता है और उस पर बेचैन हो जाता है, भले ही थोड़ी मात्रा में चांदी खो जाए। तो, क्या कोई अपना संतुलन खो देता है, अगर किसी को कुछ समय के लिए भोजन के एक निवाले के बिना रहना पड़ता है। इस प्रकार, मनुष्य से कमजोर कौन हो सकता है? किसी की सुंदरता और किसी के सामान्य व्यवहार की सुंदरता के बारे में बोलते हुए, इसकी तुलना मिट्टी के ढेर पर चमड़े के तंबू के अति-विस्तार से की जा सकती है। यह भी एक ज्ञात तथ्य है कि यदि कोई व्यक्ति दो दिनों तक स्नान नहीं करता है, तो उसे बदबू आने लगेगी; लोगों से बचें और आम तौर पर सार्वजनिक रूप से अपमानित हों, इसके अलावा कई अन्य जटिलताएं भी हो सकती हैं। मनुष्य से अधिक गंदा कुछ भी नहीं है, क्योंकि गंदा पदार्थ हर समय एक में रहता है, जिसे वह अपने साथ रखता है और दिन में कई बार धोता है।

एक दृष्टांत उद्धृत किया गया है कि एक बार शेख अबू सईद (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो), एक उच्च सम्मानित संत और ज्ञानवादी, कुछ *सूफियों* (वे लोग जो ईश्वरीय निकटता प्राप्त करने के लिए आंतरिक परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक मार्ग में प्रयास करते हैं) के साथ कहीं जा रहे थे। वे एक जगह पहुंचे और देखा कि वहां के लोग मानव मल को साफ करने का काम कर रहे थे। रास्ता बदबूदार गंदगी से अटा पड़ा था। यह देखकर हर कोई अचंभित रह गया, अपनी नाक दबा ली और इधर-उधर भाग गया, लेकिन *शेख* (आध्यात्मिक मार्गदर्शक) वहीं खड़ा रहा और बोला, "सुनो, लोगो! क्या आप जानते हैं कि गंदगी का यह ढेर मुझसे क्या कह रहा है?" उन्होंने पूछा, "क्या?" उन्होंने जवाब दिया, "यह कहा जा रहा है कि कल तक, मैं फलों और मिठाइयों आदि के रूप में बाजार में था। लोग मुझ पर पैसे खर्च कर रहे थे। मैं रात भर उनके पेट में रहा और फिर मैं इस अप्रिय महक वाली सड़ांध में बदल गया। क्या मुझे तुमसे दूर भागना चाहिए, या तुम मुझसे दूर भागूं?

तथ्य यह है कि मनुष्य इस दुनिया में कमजोर, अपूर्ण और असहाय है। फिर भी न्याय के दिन कोई भी पूरे जोरों पर होगा। इन परिस्थितियों में, यदि कोई एक के साथ "*किमिया अस-सादा*" या "कीमिया या शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय का परिवर्तनकारी एजेंट" को बरकरार रखता है, तो वह जानवरों की स्थिति से ऊपर उठेगा और स्वर्गदूतों के कद तक पहुंच जाएगा। लेकिन अगर कोई दुनिया और सांसारिक इच्छाओं का शिकार हो जाता है, तो कुत्ते और सूअर एक से बेहतर होंगे, क्योंकि वे नष्ट हो जाएंगे [और हमेशा के लिए चले जाएंगे] लेकिन मनुष्य सांसारिक जीवन में किए गए अपने बुरे कर्मों के कारण ईश्वरीय प्रतिशोध और कष्टों में डूबा रहेगा। इसका मतलब यह है कि यदि मनुष्य ने किसी की स्थिति की विशालता और उच्चता को पहचाना है, तो उसे एक साथ उस नुकसान और हानि को याद रखना चाहिए जो किसी को होने की संभावना है, यदि कोई उस पर खरा उतरने में विफल रहता है। चीजों का ऐसा जायजा लेना ईश्वर के "*मारिफा*" या ज्ञान की कुंजी है। यह सब किसी के लिए अपने स्वयं को पहचानने के लिए पर्याप्त होना चाहिए।

परमेश्वर को जानना

इमाम मुहम्मद अल-ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" *में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या*

परिवर्तनकारी एजेंट) में से दूसरे की व्याख्या करते हुए, शाश्वत आनंद की इस कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) में से दूसरे की व्याख्या करते हुए जो "ईश्वर को जानना" है। शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट के लिए दूसरी आवश्यकता की व्याख्या करते हुए - "ईश्वर को जानना", वह लिखते हैं [3]:

प्रिय प्रिय! पिछले पैगंबरों पर निर्धारित [दिव्य] पुस्तकों में कहा गया है [पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो)] कि भगवान ने आदेश दिया है:

اَعْرِفْ نَفْسَكَ تَعْرِفْ رَبَّكَ

"अपने आप को पहचानो, तब तुम अपने प्रभु को जान लोगे।

साथ ही, यह कहावत हदीस (पैगंबर कथन) और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के समय और ग्रंथों के समय और ग्रंथों के बाद से बहुत प्रसिद्ध है:

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

"जिसने अपने आप को पहचान लिया है, उसने अपने प्रभु को पहचान लिया है।

मनुष्य का हृदय एक [पॉलिश] दर्पण की तरह है [बशर्ते उस पर जमी धूल को हटा दिया गया हो और सतह को किसी भी चीज़ से साफ कर दिया जाए जो पॉलिश किए गए दर्पण के रूप में इसके कार्य में बाधा डालती है]। जो व्यक्ति अपनी दृष्टि और ध्यान उस पर केंद्रित करता है, वह ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करेगा। मुद्दा यह है कि, ऐसे लोग हैं जो इस आईने में देखे बिना खुद को व्यर्थ में निहारते रहते हैं, इसलिए वे अपने प्रभु को जानने के करीब कहीं नहीं पहुंचते हैं। फिर से, इसका उत्तर हृदय के इस दर्पण को देखने में निहित है जिसमें "*मारिफ़ा*" (ज्ञान) ईश्वर का अपने सही व्यंजन में। इसलिए, हृदय की वास्तविकता को सही परिप्रेक्ष्य में जानना इसके दो विशिष्ट पहलुओं में से आवश्यक है। किसी को समझना बहुत मुश्किल है क्योंकि यह [सामान्य] लोगों की समझ से परे है। इसलिए, बेहतर होगा कि इस पर चर्चा न करें। दूसरा पहलू यह है कि व्यक्ति को अपने स्वयं के द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर की समझ हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, अर्थात्, इस आशय के लिए एक में निवास करने वाली विशेष विशेषताओं के माध्यम से। अर्थात्, उस परमात्मा के उस परमात्मा के वरदान और सृष्टि की सुंदरता जो पूरे ब्रह्मांड के विशाल विस्तार में फैली हुई है, उसके साथ-साथ मनुष्य के हृदय को उसके शरीर के राज्य और उसके अंगों में जो कुछ भी उन्होंने दिया है, उसका अध्ययन करने का प्रयास करना चाहिए। किसी को शुरू करने के लिए अपनी उत्पत्ति पर पूरी तरह से विचार करना चाहिए, कि वह पहले केवल एक अस्तित्व नहीं था और अब वह एक 'अस्तित्व' है। पवित्र पुस्तक (कुरान) में इसकी घोषणा की गई है:

هَلْ أَتَىٰ عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ حِينٌ مِّنَ ٱلدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْـًٔا مَّذْكُورًا ﴿١﴾

إِنَّا خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَٰهُ سَمِيعًۢا بَصِيرًا ﴿٢﴾

"क्या मनुष्य पर कोई ऐसा समय आया है जब किसी का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए? हमने एक मिश्रित शुक्राणु-ड्रॉप से मनुष्य का निर्माण किया; फिर एक कोशिश करते हुए, हमने एक सुनने और देखने का प्रयास किया। (कुरान, अध्याय 76, छंद: 1-2)

किसी को अपनी विनम्र उत्पत्ति से पता चलता है कि वह अशुद्ध जल की एक बूंद थी जिसमें वे गुण भी नहीं थे जो बाद में किसी पर दिए गए थे, जैसे कि बुद्धि, श्रवण, देखना, स्वाद, स्पर्श और वाणी। न ही इसमें कान, आंखें, जीभ, हाथ और पैर, सिर, नसें, ऊतक, हड्डियां या रीढ़ आदि शामिल थे। संक्षेप में, किसी के आनुवंशिक अस्तित्व में केवल पानी की यह सफेद बूंद शामिल थी, इसके नवजात रूप में।

इन पंक्तियों के साथ किसी के चिंतन से पता चलता है कि इतनी ऊंची ऊंचाइयों पर चढ़ने की मानवीय क्षमता के बावजूद, कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से और अपने स्वयं के विकास से अस्तित्व में नहीं आया था। एक ने खुद को पैदा नहीं किया। एक को किसी और ने बनाया था। अपने स्वयं के भाग्य में, कोई एकल, अकेले बाल भी नहीं बना सकता है। एक पूरी तरह से असहाय है। आखिरकार, एक व्यक्ति अपने सार में था, अशुद्ध पानी की एक बूंद के अलावा और कुछ नहीं। तो खुद को बनाने का गुण किसी को कैसे माना जा सकता है? यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस तरह का आत्मनिरीक्षण व्यक्ति को अपने अस्तित्व और अपने सृष्टिकर्ता की वास्तविकता में एक प्रबुद्धता प्रदान करेगा। ब्रह्मांड में उनकी रचनाओं के सुरुचिपूर्ण वैभव को छोड़ दें, जब कोई व्यक्ति अपने शरीर के शानदार जीव, उसके विभिन्न कार्यों को देखेगा, जिनमें से प्रत्येक का अपना विशिष्ट गुण और कार्य होगा, तो उसे मास्टर निर्माता, सर्वशक्तिमान ईश्वर की भव्यता और अद्वितीय निपुणता का एहसास होगा।

कई चीजों के लिए प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए। भगवान ने एक पूर्व-प्रतिष्ठित आत्मा और एक सुंदर शरीर भी दिया है। किसी व्यक्ति की सुंदर प्रोफ़ाइल को ही उसके सामने गहन कृतज्ञता के साथ झुकना चाहिए। इस प्रकार कोई भी भाग्यशाली है कि उसे "जमाल" या सुंदरता और "कमल" या उत्कृष्टता और इनाम दोनों दिए गए हैं, बल्कि केवल भगवान के द्वारा दिया गया है। आखिर एक और क्या है? मुट्ठी भर धूल के अलावा कुछ नहीं! परमेश्वर ने बिना उद्देश्य के कुछ भी नहीं बनाया है। मानव शरीर रचना विज्ञान का हर हिस्सा आवश्यक है, निर्धारित तरीके से प्रदर्शन करने के लिए एक विशेष कर्तव्य है। इन घटकों में से प्रत्येक को विशेषज्ञ रूप से उत्पादित, नियोजित और प्रोग्राम किया गया है [इसके लिए विशिष्ट कार्यों के लिए]। कुछ भी गायब नहीं है और कुछ भी नहीं है। संपूर्ण संविधान इतना परिपूर्ण है कि इसे किसी भी तरह से उत्कृष्ट नहीं बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जबड़े में दांतों को देखें। सामने वाले नुकीले और नुकीले होते हैं ताकि खाद्य पदार्थों को पर्याप्त रूप से काटने और छेदने में मदद मिल सके। उनके पास के अन्य काफी चौड़े, ग्रूवी और चपटे होते हैं ताकि उन्हें महीन सुपाच्य कणों में पीसने में सक्षम बनाया जा सके। जीभ के नीचे का निचला हिस्सा इस प्रकार बनने वाले भोजन के निवाले को गीला कर देता है, जिससे यह गले के माध्यम से आसान और सुरक्षित मार्ग के लिए अधिक निंदनीय हो जाता है। इसी तरह मानव हथेली की पांच उंगलियां होती हैं। चार उंगलियां समान होती हैं। लेकिन अंगूठा उनसे कुछ दूरी पर रखा जाता है। यह उनसे छोटा और थोड़ा मोटा होता है। इसमें उनमें से प्रत्येक के साथ समन्वय करने और काम करने और अच्छी समझ और हैंडलिंग के लिए सभी उंगलियों के साथ सामूहिक रूप से काम करने की क्षमता है। बदले में, प्रत्येक उंगली में तीन छिद्र होते हैं, लेकिन अंगूठे में दो होते हैं। मनुष्य अपनी इच्छानुसार इन छिद्रों को हिला और मोड़ सकता है। इन्हें अकेले मोड़कर हथेली को कप किया जा सकता है। दोनों हाथों के छिद्रों को जोड़कर और घुमाकर, कोई भी उन्हें खोखली प्लेट के रूप में उपयोग कर सकता है। इसी तरह, इन छिद्रों और हाथ की हथेली को बंद करके, कोई भी इसे अपने दुश्मन से लड़ने के लिए एक प्रकार के मुक्केबाजी दस्ताने में बदल सकता है। दूसरी ओर, कोई भी इसे सीधी हथेलियों के साथ एक थाली के रूप में उपयोग कर सकता है। इसलिए, इन उंगलियों की स्थिति, आकार या मात्रा के बारे में कोई भी बहस निरर्थक होगी। उन्हें बहुत शानदार तरीके से बनाया गया है! इन सभी

चीजों और ब्रह्मांड का सर्वोच्च वास्तुकार सबसे अच्छा न्यायाधीश है। वह हर उस चीज़ के बारे में जानता है जो उसने विकसित किया है।

मनुष्य की जरूरतें और इच्छाएं असीमित हैं। सृष्टिकर्ता की रचनाएँ भी असीमित हैं। मनुष्य को पहनने के लिए कपड़े, रहने के लिए एक घर और कई अन्य चीजों की आवश्यकता होती है। भोजन उगाने के लिए बारिश, हवा, गर्मी, ठंड और भूमि जैसे प्राकृतिक तत्व भी एक के लिए उत्पादित किए गए हैं। टिन, लोहा, कांस्य आदि जैसी आवश्यक धातुओं को भी इसी तरह मानव के लिए विभिन्न उद्देश्यों और उद्योगों के लिए अपने उपकरण और उपकरण बनाने में सहायता करने का प्रावधान किया गया है। ये सभी चीजें और कई अन्य चीजें एक लेने के लिए, उनसे लाभ उठाने के लिए, एक आरामदायक जीवन जीने के लिए हैं। क्या मनुष्य को इतना जिज्ञासु नहीं होना चाहिए कि वह अंततः उसकी सर्वशक्तिमत्ता की उपस्थिति को महसूस कर सके, जिसने अपनी सर्वोच्च कृपा में यह सब एक के लिए किया है [यहां तक कि बिना किसी को एहसास किए और उन्हें मांगे भी]? क्या मनुष्य के हृदय को उसके प्रेम और उसकी आराधना से समृद्ध नहीं होना चाहिए? एक *हदीस कुद्सी* (एक भविष्यसूचक कथन जिसे इसके स्रोत के लिए ईश्वर को जिम्मेदार ठहराया गया है) के अनुसार, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा है [कि भगवान ने कहा]:

سَبَقَتْ رَحْمَتِيْ عَلَى غَضَبِيْ .

"मेरी दया मेरे क्रोध पर प्रबल हुई है।

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के अनुसार: "मानवता पर ईश्वर की दया और दया, अपने दूध पिलाने वाले बच्चे पर एक प्यारी माँ की तुलना में कहीं अधिक है।

तुलनात्मक रूप से कम पैमाने पर, एक सरल लेकिन एक अच्छा इंसान, ऐसी *चीजों में भगवान के "मारिफा" या ग्नोसिस को* देखता है:

एक. पानी की एक बूंद की विनम्र उत्पत्ति से अपनी रचना में।
दो. किसी के शरीर के अंगों के अलौकिक लक्षणों में।
तीन. परमेश्वर द्वारा किसी की सभी इच्छाओं और जरूरतों के प्रावधान में।
चार. किसी के भौतिक संविधान की सुंदरता में। भगवान द्वारा बनाई गई सौंदर्य संबंधी चीजें जो किसी को एक आकर्षक और आकर्षक रूप देती हैं।

परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को पसंद करता है और उसे अपने "*मारिफा*" या ग्नोसिस से आशीष देता है। स्वयं का ऐसा मूल्यांकन, ईश्वर की सूक्ति ("मारिफा") की कुंजी बन जाता *है*।

आप में ब्रह्मांड

मनुष्य उस बात को समझने का प्रयास करता है जिसे वह नहीं जानता है। व्यक्ति अपने पास मौजूद आंतरिक और बाहरी गुणों के आधार पर ईश्वर को समझने की पूरी कोशिश करता है। जबकि किसी का प्रयास प्रशंसनीय है, तथ्य यह है कि मनुष्य की समझ और क्षमता सीमित है, चाहे वह कितना भी ऊंचा क्यों न हो। इस संबंध में किसी का निरंतर शोध निस्संदेह जीवन में किसी की स्थिति को बढ़ाएगा; जितना

अधिक परिष्कृत होता जाता है उसका हृदय और "*नफ्स*" (या स्वयं) इस प्रक्रिया में डूब जाते हैं, उसके लिए उसके महान प्रेम से, वह उसके सापेक्ष निकटता प्राप्त करेगा, लेकिन वह अंततः इस सत्य की थाह पाएगा कि "केवल परमेश्वर ही परमेश्वर को समग्रता में जानता है" और यह कि उसे शामिल नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, मनुष्य का हृदय, "*नफ्स*" या स्वयं, वास्तव में, निर्धारित नहीं किया जा सकता है। इसका कोई आयाम नहीं है। यह अविभाज्य है [और इसलिए समय और स्थान के आयामों की परिमाणीकरण, सीमा और सीमाओं की बाधाओं से ऊपर]। इसका कोई रंग नहीं है। संक्षेप में, यह ऐसे सभी विचारों से ऊपर है। ऐसे मामले में, कोई ऐसी चीज के आकार का निर्धारण कैसे कर सकता है? कोई ऐसी चीज की कल्पना कैसे कर सकता है जिसका रूप या बीयरिंग ज्ञात नहीं है? इसलिए, यह मनुष्य में किसी भी गुण के साथ मेल नहीं खाता है जो तदनुसार इसे समझ सकता है।

मनुष्य में ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें हम महसूस तो करते हैं लेकिन उन्हें समझ नहीं सकते। उदाहरण के लिए, प्यार और दर्द को महसूस किया जा सकता है, लेकिन उन्हें देखा या दिमाग में नहीं देखा जा सकता है और न ही उनका कोई आकार, रंग या आकार है। मामला काफी जटिल है। मनुष्य द्वारा महसूस किए जाने वाले अलग-अलग विवेक और स्थितियां, किसी की इंद्रियों के विभिन्न घटकों से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि आवाज कान के समान है। रंग आंखों द्वारा देखा और सराहा जाता है। जीभ स्वाद को पहचानती है और नाक गंध को सूंघती है। छुड़ाने वाला सामान्य कारक, बुद्धि का इससे कुछ लेना-देना हो सकता है। आगमनात्मक तर्क की एक पुस्तक शायद इस मुद्दे के लिए एक हद तक प्रासंगिक हो सकती है, लेकिन निश्चित रूप से दिल और उसके विशेष बंदोबस्ती के लिए नहीं, जो पूरी तरह से एक अलग वर्ग में एक विषय है।

भगवान हर जगह है। लेकिन उसकी उपस्थिति को किसी विशेष स्थान पर सीमित नहीं किया जा सकता है, बाकी को छोड़कर। उनकी उपस्थिति और आदेश हर जगह महसूस किया जाता है। शरीर के किसी भी अंग के संबंध में आत्मा को अकेले महसूस नहीं किया जा सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि यह हाथों में, पैरों में, सिर में या शरीर के किसी अन्य भाग में है। ये शारीरिक अंग पूर्वोक्त के रूप में विभाज्य हैं, लेकिन हृदय और आत्मा विभाज्य नहीं हैं। तार्किक रूप से, एक चीज जो अविभाज्य है, उसे किसी भी चीज में समाहित नहीं किया जा सकता है जो विभाज्य है।

हालांकि, यह कहने से कि दिल और आत्मा का शरीर के किसी भी अंग से कोई संबंध नहीं है, इसका मतलब यह नहीं है कि इसका उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वास्तव में, शरीर के सभी अंग इसके अधीन हैं और हृदय, आत्मा, या "*नफ्स*" या मनुष्य के स्वयं के प्रत्यक्ष नियंत्रण में हैं। इस संदर्भ में मनुष्य की आत्मा राजा है क्योंकि पूरा ब्रह्मांड ब्रह्मांड और सभी अस्तित्व के राजा सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रत्यक्ष नियंत्रण में है।

आत्मा का विषय बहुत नाजुक और सूक्ष्म है। इस पर सभी विचार-विमर्श और प्रवचनों के बावजूद, यह एक अनोखा और एक अच्छी तरह से संरक्षित रहस्य है। इसलिए, इसे एक निश्चित सीमा से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। उदाहरणार्थ:

إِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ اٰدَمَ عَلٰى صُوْرَتِه

"वास्तव में परमेश्वर ने आदम को [और इसलिए पूरी मानवता जो उसमें से उभरी है] को अपनी छवि पर बनाया।

यह वह जगह है जहां किसी के पास यह कहने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है कि भगवान सबसे अच्छा जानता है।

हमने अब तक निर्धारित किया है कि:

एक. ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उनके महान उत्कृष्टता के दिव्य गुणों की कृपा उनमें प्रकट होती है।
दो. वह सर्वव्यापी है लेकिन उपस्थिति को किसी अन्य स्थान या स्थान के बहिष्कार के लिए किसी एक स्थान तक सीमित नहीं माना जा सकता है।
तीन. स्वयं को जानना उसकी सूक्ति या "*मारिफा*" की कुंजी है।
चार. मनुष्य का वास्तविक उद्देश्य और उद्देश्य उसकी सूक्ति या "*मारिफा*" को प्राप्त करना है।

अब कोई यह समझना चाहेगा कि कैसे। वह है मनुष्य के राज्य में सर्वोच्च शासक, सर्वोच्च राजा। सुलझाने के लिए कई पहेलियाँ हैं:

एक. स्वर्गदूतों को उसकी आज्ञा देना। उनकी विनम्र आज्ञाकारिता।
दो. ऊपर स्वर्ग से उनके आदेश और नीचे पृथ्वी के प्रति उनका अनुरोधपूर्ण अनुपालन।
तीन. सितारों और नक्षत्रों की निरंतर गति।
चार. उसके द्वारा (ऊपर स्वर्ग से) उनके निर्वाह के लिए उसके जीवित प्राणियों के भरण-पोषण का अनुदान।

ये उनके ज्ञान से संबंधित ठोस प्रश्न हैं। ये मामले और इसी तरह के मामले उस तरह के दायरे में आते हैं जिसे "उसके कल्याण के कार्य" कहा जाता है।

इस थीसिस में, हमने कई पाठ्यक्रम निर्धारित किए हैं जो उनकी सूक्ति ("मारिफा") की ओर ले जाते हैं। अब हम उनके दिव्य कार्यों ("*अफ़आल*") *की सूक्ति के बारे में जानना चाहेंगे*। दूसरे शब्दों में, जब तक आपको यह पता नहीं चलता कि मनुष्य शरीर के राज्य पर किस तरह शासन करता है, तब तक आप यह नहीं समझ पाएंगे कि कैसे वह, सभी गुरुओं का स्वामी, पूरे ब्रह्मांड पर सर्वोच्च शासन करता है। इसलिए फिर से, हम इस अपरिहार्य निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब तक मनुष्य अपने 'स्व' को नहीं जान लेता और उसके प्रत्येक कार्य को इस परिप्रेक्ष्य में निर्देशित नहीं किया जाता है, तब तक कोई भी रहस्य को सुलझाने में सक्षम नहीं होगा।

उदाहरण के लिए, जब आप कागज के एक टुकड़े पर "*बिस्मिल्लाह*" ("भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु" के लिए अरबी अभिव्यक्ति) लिखने का इरादा रखते हैं, तो आपका दिल पहले ऐसा करने की इच्छा रखता है, फिर हृदय (यानी, वास्तविक हृदय और शरीर के बाईं ओर का भौतिक अंग नहीं जिसे "हृदय" भी कहा जाता है) इस आशय के लिए हलचल करता है और मस्तिष्क को इसे लागू करने का आदेश देता है। मस्तिष्क का पहला संवेदनशील कक्ष जो मानव "खयाल" का स्थान है, यानी इसके बारे में

विचार का निर्माण करता है, ऐसा करता है। विचार की अवधारणा की कल्पना की गई है। यह मस्तिष्क द्वारा मस्तिष्क की मांसपेशियों को प्रदान किया जाता है जो इसे शरीर में फैलाते हैं और विस्तारित करते हैं; लिखने वाली उंगलियां निर्देशित हो जाती हैं, नसों और उनके ऊतकों को इस आशय का संदेश प्राप्त होता है, बदले में वे कलम को पकड़ते हैं और प्राप्त उत्तेजनाओं के अनुसार शब्दों को अंकित करते हैं। अन्य संवेदी अंग भी सहायता करते हैं और उकसाते हैं और "*बिस्मिल्लाह*" लिखा जाता है। इसलिए, यह अनुमान लगाना संभव है कि पूरा लेनदेन ऐसा करने के लिए मूल 'इच्छा' के कारण हुआ था। उसी तरह, हर चीज की शुरुआत या शुरुआत में यह 'इच्छा' या "*इरादा*" सार का है। जब इसका श्रेय भगवान को दिया जाता है, तो इस 'इच्छा' को ईश्वर की 'सर्वोपरि इच्छा' कहा जाता है।

मनुष्य की इच्छा पहले किसी के हृदय में निकलती है और उसके बाद वह शरीर के अन्य हिस्सों तक पहुंचती है, इसी तरह ईश्वर की सर्वोपरि इच्छा और उसका प्रभाव, पहले "अर्श" से शुरू होता है, यानी ईश्वरीय सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व, फिर यह अन्य पदों और लोगों तक पहुंचता है। इसके अलावा, जिस सरल तरीके से इच्छा की यह अवधारणा किसी के हृदय, किसी की आत्मा के नाजुक महीन तंतुओं के माध्यम से मानव मस्तिष्क तक पहुंचती है; इसी तरह, ईश्वर की इच्छा का यह अनुल्लंघनीय रत्न, उनकी "*इरादा*" या 'इच्छा' उनके द्वारा "अर्श" (या "दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व") से "*कुर्सी*", "सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता की स्वर्गीय सीट" तक पहुंचाई जाती है। यह रत्न उसके देवदूत या "*रूह अल-कुद्स*" (पवित्र आत्मा) में प्रकट होता है। जिस तरह मस्तिष्क का प्रभुत्व मनुष्य के हृदय के अधीन होता है, उसी तरह, ईश्वर के आदेशों का प्रभाव तत्काल आज्ञाकारिता और अनुपालन के लिए उनके आदेश के अधीन क्षेत्र के माध्यम से "कुर्सी" तक पहुंचाया जाता है। पिछले अध्याय में वर्णित पूरी प्रक्रिया, "*बिस्मिल्लाह*" ("भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, सबसे दयालु") को दिल में लिखने के विचार के आगमन से, इसका अंतिम निष्पादन, इसी तरह "*जौहर तालिफ*" या "भगवान की अलौकिक इच्छा" द्वारा एक राजसी तरीके से शुरू किया गया है, जो आकाशगंगा में सितारों और अन्य नक्षत्रों को सक्रिय करता है, उन्हें उनकी वांछित भूमिकाएँ सौंपना। नतीजतन, उनके विकिरण (किरणों) द्वारा, उनकी आंतरिक क्षमता के आधार पर, गर्मी, ठंड और शरद ऋतु के मौसम आदि जैसी मौसम की स्थिति बनाने के लिए वातावरण को हिलाया जाता है।

इसके अलावा, जिस तरह कलम स्याही को "बिस्मिल्लाह" का संयुक्त रूप देने के लिए बिखरे हुए शब्दों को आत्मसात करने और पूर्व-इकट्ठा करने के लिए गति में सेट करती है, उसी तरह, गर्मी, ठंड, पानी और धूल ने अपने यौगिकों को गति में सेट किया है ताकि उनकी बातचीत से गठित वैध रूपों को इकट्ठा किया जा सके ताकि पदार्थ को उनके विभिन्न आकार, गर्मी और धूल को मिलाने के लिए और उन्हें मिलाने के लिए सूखापन मिल सके।

जब कलम लिखने के लिए आगे बढ़ती है, तो जो कुछ भी लिखने की कल्पना की जाती है, उसकी दृष्टि तैयार की जाती है, जो अंततः लिखे गए शब्दों में आकार लेती है। उसी तरह, जब उपर्युक्त यौगिकों के अंतर्निहित मूल्यों को गति में सेट किया जाता है, तो उसके बाद, स्वर्गदूतों की एजेंसी के माध्यम से, जानवरों और अन्य वनस्पतियों के रूपों को उपरोक्त के प्रतिलेख के अनुसार देखा जाता है, जिसे "*लोह महफूध*" के रूप में संदर्भित किया जाता है (संरक्षित टैबलेट जिसमें सभी रचनाओं और अस्तित्व और उनसे संबंधित सभी घटनाओं का पूरा रिकॉर्ड होता है)। "*अर्श*" (बस "सिंहासन" लेकिन वास्तव में, यह दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व है), "*लोह महफूध*" (संरक्षित टैबलेट) और "*कुर्सी*" (सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता की स्वर्गीय सीट) की ऊंचाई को देखते हुए, बहुत से लोग अनादि काल से सोचते हैं कि भगवान "अर्श" में स्वर्ग में रहते हैं! कुरान में [पैगंबर] योना (सूरह *यूनुस*) के अध्याय में, यह कहा गया है:

ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۖ

"तब [भगवान] सिंहासन पर स्थापित हुआ, और मामले का प्रबंधन किया। (कुरान, अध्याय 10, श्लोक 3)

"कश्फ" या आध्यात्मिक अनावरण *से संपन्न लोगों के बारे में बात करते हुए,* कोई कह सकता है कि उनके शब्द का अपना मूल्य है:

اِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ اٰدَمَ عَلٰى صُوْرَتِه

"वास्तव में, परमेश्वर ने आदम को अपने स्वरूप पर बनाया।

तब सावधान रहें कि जैसा कि कहा जाता है, "केवल एक राजा ही राजा का वास्तविक मूल्य जानता है"। यदि आप स्वयं अपने स्वयं के क्षेत्र में एक राजा नहीं थे और यदि परमेश्वर ने आपको अपनी दया की झलक के साथ आशीर्वाद नहीं दिया होता, तो आप कभी भी उसकी सूक्ति ("मारिफा") के करीब नहीं पहुंच पाते। इसलिए उस सर्वशक्तिमान राजा का धन्यवाद करें जिसने आपको बनाया है और आपको अपने राज्य के राजत्व का ताज पहनाया है।

आपका "*अर्श*" (सिंहासन) पशु आत्मा है ('पशु आत्मा' 'मानव आत्मा' से अलग है जो मानव अस्तित्व का सबसे बेहतर हिस्सा है)। इसका स्रोत हृदय में है। आपका "*इसराफिल*" (वह स्वर्गदूत जो न्याय के दिन तुरही बजाएगा जो सभी को वापस जीवन में लाएगा; आत्मा को जब जीवन में वापस लाया जाता है, तो मानव अस्तित्व के हर पहलू को फिर से जीवंत करने, पुनर्जीवित करने और पुनर्जीवित करने की क्षमता होती है) इसे ईश्वर द्वारा बनाया गया है। आपकी "*कुर्सी*" (सीट) का निर्माण इसी तरह विचारों के साथ किया गया है। आंखें, कान और संवेदी तत्व स्वर्गदूतों की तरह हैं। मस्तिष्क एक चंदवा की तरह है। इसका गुंबद, जो आपके बोधगम्य घटकों से बना है, आपका आकाश है। अपने दिल से सभी आधार अवधारणाओं को दूर करने के बाद, यह आपके शरीर के सभी हिस्सों पर शासन करने वाले राजा के रूप में स्थापित किया गया है। आपके लिए इतना कुछ करने के बाद, आपको कहा गया कि कभी भी एक पल के लिए भी अपनी या अपने राज्य की उपेक्षा न करें। अन्यथा, यह उपेक्षा परमेश्वर के आदेशों की अनदेखी करने के समान है जिसके परिणामस्वरूप उसके सामने तुम्हारी स्थिति गंभीर खतरे में पड़ जाएगी:

فَاِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ آدَمَ عَلٰى صُوْرَتِه فَاعْرِفْ نَفْسَكَ يَا اِنْسَانُ
تَعْرِفْ رَبَّكَ

"तो वास्तव में, परमेश्वर ने आदम (संपूर्ण मानवता के पिता और इस प्रकार विस्तार से, सभी मनुष्यों) को अपनी छवि में बनाया। तो अपने को जानो, हे मनुष्य। तब तुम अपने रब को जान लोगे।

मनुष्य के राज्य की अवधारणा पूरे ब्रह्मांड पर सर्वशक्तिमान के राजत्व और राज्य से लघुकरण में ली गई है। अपने आप में, इस धारणा में जोर है:

एक. शरीर के विभिन्न अंगों के महत्वपूर्ण गुणों और व्यवसायों के सीखने के बारे में मनुष्य के स्वयं के स्वयं का ज्ञान जो किसी के राज्य का गठन करता है।

दो. ईश्वर की ज्ञान, उनके स्वर्गदूतों के प्रति ईश्वर के उदार ध्यान के संबंध में उनका राज्य, बदले में देवदूत का संबंध, एक दूसरे के साथ और उच्च "अर्श" (दिव्य सिंहासन), स्वर्ग और "*कुर्सी*" (सर्वोच्च दिव्य उत्कृष्टता का स्वर्गीय आसन) जो महान योग्यता के अद्वितीय ज्ञान का एक पहलू भी है।

एक चतुर व्यक्ति कभी भी उनके प्रति बेपरवाह और लापरवाह नहीं रहेगा, जैसे कि एक लापरवाह मूर्ख के खिलाफ जो केवल किसी की प्रचंड अज्ञानता की फसल काटेगा। कुछ 'प्रकृतिवादी' और 'ज्योतिषी' दुर्भाग्य से इस विषय की अपनी सीमित शिक्षा पर अपनी निर्भरता के लिए इतने खराब हैं कि इस तरह वे अंतिम प्रभाव, हर चीज के परिणाम, सितारों के प्रभाव में श्रेय देते हैं। उनका विश्वास इतना हठधर्मी, इतना पैदल यात्री है कि इस भ्रम के संदर्भ में, उनकी स्थिति की तुलना कागज के एक टुकड़े पर रेंगने वाली चींटी से की जा सकती है, जिससे यह आभास हो सकता है कि कलम [कागज की] सतह पर एक काला निशान बना रही है, क्योंकि यह बिना किसी सूची के साथ चल रही है। कागज पर रेंगने वाली एक और चींटी, जिसकी दृष्टि ऊंची है, इस विश्वास को और भी बढ़ा सकती है कि हाथ [कलम पकड़कर] कागज पर निशान बना रहा है। यह प्रकृतिवादियों का उदाहरण है। उनके [गलत] विश्वास की स्पष्ट भ्रांति उनके पंथ में बहुत दूर तक जाती है, कि सभी मनुष्य अन्य सभी तथ्यों के बावजूद सितारों से अपरिवर्तनीय रूप से प्रभावित होते हैं। तथ्य का विलोम फैंसी या प्रहसन है। तब ज्योतिषी आसानी से भूल जाते हैं कि ये तारे भी स्वर्गदूतों की आज्ञाकारिता में हैं, जैसा कि स्वर्ग और सितारों के सर्वोच्च स्वामी, और ब्रह्मांड में और उससे परे की सभी चीजों के परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया है। उनकी पकड़ केवल भौतिक चीजों तक ही सीमित है। वे आध्यात्मिक क्षेत्र में पूर्ण नौसिखिए हैं जो सभी भौतिक सांसारिक विचारों से श्रेष्ठ हैं। भौतिक (या भौतिक) क्षेत्र के सितारों में आध्यात्मिक क्षेत्र के देदीप्यमान प्रकाश ("'*आलम रूहानी*') की तुलना में कम चमक होती है। वे यह नहीं जानते कि आत्मा शरीर पर राज्य करती है। इसका विपरीत सच नहीं है। उन्हें अपने ज्ञान और ज्ञान पर गर्व है, लेकिन अपनी बेतुकेपन में, वे आत्मा के आध्यात्मिक क्षेत्र के मार्ग के आशीर्वाद से रहित रहते हैं, जहां आंतरिक अस्तित्व के कई चमकदार सितारे ("*बैटिन*") *ईश्वर और* "मेराज" (आध्यात्मिक स्वर्गारोहण या भगवान के मार्ग पर आरोही ऊंचाइयों की महिमा) *के पाठ्यक्रम में एक मील का पत्थर चिह्नित* करते हैं। जैसा कि पैगंबर मुहम्मद को प्रदान किया गया है [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो])। तदनुसार पवित्र पुस्तक (कुरान) में ईश्वर ने घोषणा की है:

وَكَذَٰلِكَ نُرِيٓ إِبۡرَٰهِيمَ مَلَكُوتَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ

"और इस प्रकार, हमने [पैगंबर] इब्राहीम को आकाश और पृथ्वी का राज्य दिखाया। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 75)

पैगंबर इब्राहीम (ईश्वर की शांति उन पर हो) ने जवाब में कहा:

إِنِّي وَجَّهۡتُ وَجۡهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ

"मैं अपना चेहरा (यानी, मेरा पूरा अस्तित्व - आंतरिक और बाहरी दोनों) को उसकी ओर मोड़ता हूं जिसने आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति की। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 79)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा है:

إنَّ لِلَّهِ سَبْعِينَ أَلْفَ حِجَابٍ مِنْ نُورٍ لَوْ كَشَفَهَا لَأَحْرَقَتْ
سُبُحَاتُ وَجْهِهِ كُلَّ مَنْ أَدْرَكَهُ بَصَرُهُ

"वास्तव में, परमेश्वर के लिए शुद्ध प्रकाश के सत्तर हजार पर्दे हैं। यदि उसने इसका अनावरण किया होता, तो उसके चेहरे की किरणें हर उस व्यक्ति को जला देती जो उसकी ओर देखता था।

इसी तरह, चिकित्सा के ज्ञान के लोगों ने अपने अधिकांश अभ्यास को चीजों के गर्म या ठंडे प्रभाव पर समान रूप से आधारित किया है। इसने उन्हें अपने पेशे के अभ्यास में एक हद तक सहायता की है। सूर्य को उज्ज्वल और गर्म बनाने में निर्माता का मुक्तिदायक गुण, शनि को शुष्क और ठंडा और बुध को और भी अधिक गर्म बनाने में इसके उद्देश्य के बिना नहीं है। हालांकि, गरीब ज्योतिषी, किसी की खगोलीय दूरदर्शिता में, सूर्य को पृथ्वी के सबसे निकट रखने में अपने निर्माता की सरलता की थाह नहीं ले सकता है, या दिन और रात की विविधताएं या उस मामले के लिए, आकाश में सभी सितारों और नक्षत्रों के कर्तव्य में विनम्र आज्ञाकारिता उसकी सर्वोच्च इच्छा के लिए। ऐसे व्यक्ति ने अपने भौतिक अस्तित्व और ज्ञात गुणों के संबंध में अपने आध्यात्मिक गुण को विश्वसनीयता देना छोड़ दिया है। केवल अगर कोई जानता कि गोलार्ध में ये सभी तारे परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा के अधीन और अधीन हैं, तो कोई भी आँख मूंदकर अपने भौतिक पहलू पर इतना विश्वास नहीं करता:

ٱلشَّمْسُ وَٱلْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ

"[उसके आदेश पर] सूर्य और चंद्रमा अपने नियत पाठ्यक्रम चलाते हैं। (कुरान, अध्याय 55, श्लोक 5)

وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتٍۭ بِأَمْرِهِۦٓ

"और सूर्य, चंद्रमा और तारे उसकी आज्ञा के अधीन हैं। (कुरान, अध्याय 7, श्लोक 54)

एक चीज को पराधीन माना जाता है जिसका दोहन किया जाता है और नियंत्रण में रखा जाता है और काम करने के लिए बनाया जाता है। जैसे मानव अंग मनुष्य के लिए करते हैं। उनमें से प्रत्येक को प्रदर्शन करने के लिए एक कार्य सौंपा गया है। तारे भी परमेश्वर के सेवक हैं, उसकी आज्ञाओं को पूरा करते हैं। उसी तरह, जिस तरह मस्तिष्क मानव शरीर के अन्य अंगों को उसके द्वारा मनुष्य को प्रदान की गई समझदार संकायों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए निर्देशित करता है, उसी तरह सितारे भी इस आशय के लिए ईश्वर द्वारा सौंपे गए स्वर्गदूतों के माध्यम से अपने निर्धारित प्रदर्शन में व्यस्त रहते हैं, अपने निर्देशकों और प्रमुख मूवर्स की भूमिका निभाते हैं। वास्तव में, ये स्वर्गदूत अपने निर्धारित क्षेत्रों में कई चीजों के जीवित अग्रदूत हैं।

दिखावटी कारण और उसका प्रभाव, यानी, परिणाम, केवल इतना ही मायने रखता है। अयोग्य संयोग लोगों को चीजों पर इस हद तक विश्वास दिलाने के लिए हैं कि उनकी स्थिति की तुलना उन महान अंधे पुरुषों से की जा सकती है, जिन्होंने अंधेरे हिस्से में एक हाथी को आंशिक रूप से टटोला था, और पूरे के बारे में सोचने के बजाय, उनमें से प्रत्येक को गलत निर्णय के आधार पर एक अलग नाम दिया। यही बात इस ज्योतिषी, दिव्यदर्शी पर भी लागू होती है, जो इसी तरह एक दास को एक स्वामी, राजा मानता है।

यही बात पवित्र कुरान में स्पष्ट रूप से दर्शाई गई है (पैगंबर इब्राहीम (ईश्वर की शांति उन पर हो) के शब्दों के माध्यम से]:

لَآ أُحِبُّ ٱلْأَفِلِينَ

"मैं उन लोगों से प्यार नहीं करता जो डूबते हैं [जैसा कि सूर्यास्त के समय सूरज करता है]। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 76)

चंद्रमा और सूर्य को अज्ञानी लोगों द्वारा भगवान माना जाता है। आदेश दिए गए लोगों को तब तक कमांडर कहा जाता है जब तक कि विवेक प्रबल न हो जाए। बारह "*बुरूज*" हैं, यानी, आकाशीय क्षेत्र में माउंट। इसकी तुलना एक महान राजा से की जा सकती है जो अपने "वजीर" (मंत्री) के साथ अपने गौरवशाली अनुग्रह कक्ष में बैठा है। उसके चारों ओर, सुविधाजनक मैदान में "*वज़ीर*" (राजा के मंत्री) के कुलीन सहायक शांति के बारह प्रतिष्ठित स्वर्गों में बैठे हैं, जिनमें से प्रत्येक के पास एक दरवाजा है। सात आज्ञाकारी लेकिन फुर्तीले घुड़सवार "वज़ीर" के सहायकों के इशारे पर प्रत्येक दरवाजे के चारों ओर मंडरा रहे हैं और प्राप्त सम्मन को ध्यान से सुन रहे हैं। उनके तत्काल कार्यान्वयन के लिए, इन घुड़सवारों से कुछ दूरी पर पैदल खड़े चार लोग हैं, जो अपने धनुष के साथ तैयार हैं और इन घुड़सवारों को ध्यान से देख रहे हैं, इस प्रकार लोगों के एक निश्चित समूह को शामिल करके और उन्हें आलाकमान के सामने पेश करके प्राप्त निर्देशों को पूरा करते हैं। फिर उन्हें या तो दंडित किया जाता है या पुरस्कृत किया जाता है।

तदनुसार, "*अर्श*" ("दिव्य सर्वशक्तिमानता का प्रभुत्व") मामलों के प्रभारी प्रतिष्ठित मंत्री ("वज़ीर") के भेद का निवास स्थान है, अर्थात, उच्च स्वर्ग में पसंदीदा देवदूत। यह तारों के गोलार्ध में पर्वतों के विपरीत है जैसा कि एक ज्योतिषी द्वारा परिकल्पित किया गया है। ये दिव्यदर्शी आकाश के शतरंज की बिसात पर प्यादों और सामग्री की अलग-अलग स्थिति के लिए अलग-अलग अर्थ प्रदान करते हैं, उसी तरह जैसे एक चिकित्सक अलग-अलग लक्षणों से विभिन्न बीमारियों को समझता है:

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ ۚ

"यह उनके ज्ञान की पूर्ण प्राप्ति है। (कुरान, अध्याय 53, श्लोक 30)

हालाँकि, जब परमेश्वर की दया ऐसे बीमार व्यक्ति पर हावी हो जाती है, तो उपर्युक्त परिचारक एक की देखभाल करते हैं, जैसा कि कहा गया है और एक बच जाता है। एक पैगंबर का मार्ग उसी तरह से सितारों से जड़ा होता है और "*वली*" (संत, ज्ञानवादी या ईश्वर का अंतरंग) भी किसी के इलाज में चमत्कार करता है।

اِنَّ الْبَلَاءَ مَوَكَّلٌ بِالْاَنْبِيَاءِ ثُمَّ الْاَوْلِيَاءِ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَا الْاَمْثَلُ

مَرِضْتُ فَلَمْ تَعِدْنِىْ

"वास्तव में, पैगंबरों को परीक्षणों और क्लेशों से गुजरना पड़ता है, फिर ईश्वर के अंतरंग ('वली') फिर जो उनके पसंद के होते हैं [लेकिन रैंकों में निचले स्तर पर, सभी ईश्वर के सामने उनके आध्यात्मिक रैंक के अनुसार]। इसलिए, जब मैं अस्वस्थ हूं, तो मेरे स्वास्थ्य के बारे में मत पूछो। *(*पैगंबर मुहम्मद की हदीस या परंपरा [उन पर ईश्वर की शांति और आशीर्वाद हो])

हम कुछ ऐसे लोगों को भी देखते हैं जो बहुत बीमार दिखते हैं लेकिन बीमार नहीं हैं। वास्तव में, ये वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रेम के कारण ऐसी अवस्था में आ गए हैं, जिन्हें वे इतना प्यार करते हैं कि वे बीमार दिखते हैं। वास्तव में, प्यार बहुत आत्म-उपभोग करने वाला है!

अब आपको "सुभान अल्लाह" *(ईश्वर की महिमा हो [जो सभी अपूर्णताओं और कमियों से ऊपर है]),* "अल्हम्दुलिल्लाह" *(सभी स्तुति ईश्वर के लिए हो),* "ला इलाहा इल्लल्लाह () لا إله إلا الله " *(ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है), और* "अल्लाहु अकबर" *(ईश्वर महान है [किसी भी रचना से ऊपर और उससे परे है]) शब्दों के अर्थ को समझना चाहिए क्योंकि वे* "मारिफ़ा" के अविभाज्य संयोजन हैं" या भगवान की सूक्ति।

व्युत्पत्ति में, जब आप अपने 'स्व' ("*नफ्स*") को पहचानते हैं, अर्थात, आप में धार्मिकता और सदाचार में, तो आप ईश्वर की सर्वोच्च धार्मिकता और सदाचार को जानते हैं और इस तरह "*सुभान अल्लाह*" (ईश्वर की महिमा हो) को समझते हैं। जब आप अपने स्वयं के क्षेत्र के राजा होने के कारण ईश्वर के राजत्व के बारे में जागरूक हो जाते हैं और पूरे ब्रह्मांड पर ईश्वर की भव्य सर्वोच्चता की सच्चाई को आत्मसात करते हैं क्योंकि सब कुछ उसके अधीन है। तभी तुम मान सकते हो कि तुम "*अल्हम्दुलिल्लाह*" (सभी स्तुति परमेश्वर को हो) का अर्थ समझ गए हो। वास्तव में, सभी स्तुतियाँ और धन्यवाद केवल उसी और उसके कारण हैं।

अब आखिरी लेकिन महत्वपूर्ण बात, आपको यह समझना होगा कि "*अल्लाहु अकबर*" का अर्थ क्या है। इसका अर्थ केवल "ईश्वर महान है" नहीं है। इसका मतलब इससे कहीं अधिक है। इसका मतलब सिर्फ यह नहीं है कि वह दूसरों से बड़ा है। वह सबसे महान है। फिर भी, उसके और किसी और के बीच कोई तुलना नहीं की जा सकती है। वह सभी समझ से ऊपर और परे है। वह असीम रूप से सर्वोच्च है। वह सब कुछ पार करता है और उसे समाहित करता है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और सबसे परोपकारी है! हम उनके और उनके कई अद्वितीय और शानदार गुणों और शक्तियों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा और उनके पवित्र नामों से जानते हैं। वह इतना महान और अद्वितीय है कि हम संभवतः कभी भी उसका वर्णन करने या उसकी आशीषों की गणना करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

ईश्वर की धर्मपरायणता मनुष्य की धर्मपरायणता की तरह नहीं है। यह बस नहीं हो सकता। यह हम ही हैं, जो कम से कम उसके महान गुणों का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं ढूंढ सकते हैं, और ऐसा करने में उसे ऐसे शब्दों या अभिव्यक्तियों का श्रेय देते हैं जो पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि वह अपनी सभी रचनाओं का निर्माता है। तो वे उसके जैसे कैसे हो सकते हैं? उसी तरह, परमेश्वर हमें क्षमा करता है, जब हम एक मनुष्य के राज्य के बीच तुलना करते हैं जिस पर कोई शासन करता है और परमेश्वर का राज्य जिस पर उसका शासन प्रकट होता है, तो हमारा मतलब यह नहीं है कि वे समान हैं। यह दिखाता है कि हम कितने अयोग्य हैं, मनुष्य कितना असहाय है और परमेश्वर कितना महिमामय है! उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा हमसे किसी राज्य पर शासन करने के आकर्षण के बारे में पूछता है और उसे समझाने के लिए, तो हम जवाब देते हैं कि जैसा आप अपने बल्ले और गेंद से खेलने में पाते हैं, आप देख सकते हैं कि हम सच्चाई के कितने करीब या दूर हैं। हमने पहले भी ऐसा कहा है और हम दोहराते हैं कि केवल परमेश्वर ही परमेश्वर को समग्रता में जानता है और कोई और नहीं जानता है। परिस्थितियों में मनुष्य के लिए अपनाने का सबसे अच्छा तरीका है:

एक. अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार *उसकी सूक्ति ("मारिफा") की तलाश में लीन हो जाएं।*

दो. उसके कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए और उसके दिव्य *गुणों और रचनाओं में* उसके प्रकाश ("नूर*"), उसकी सुंदरता ("*जमाल*"), उसकी शक्ति ("*कुद्रह") की तलाश करने के लिए।
तीन. उसकी दयालुता के लिए उसका आभारी होना।
चार. अपने दिल और आत्मा के रोम-रोम से उसकी पूजा करना।
पाँच. उसकी आज्ञाओं का पालन करना।

हम सब उसी की ओर से आए हैं और उसी के पास लौटेंगे।

اِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَ الْمَصِيْرُ

"उसके पास हमारी वापसी और अंतिम उपाय है।

जितना अधिक आप उससे प्रेम करते हैं, उसका आदर करते हैं, उसकी पूजा करते हैं, उतना ही अधिक आप [उसके द्वारा] धन्य होंगे। वह उन लोगों को पसंद करता है जो ईमानदार, समर्पित, विनम्र, प्रेमपूर्ण और आभारी हैं। इस तरह के नेक आचरण का पुरस्कार निश्चित रूप से [उसके द्वारा] दिया जाएगा।

اَنَا بُدُّكَ اللَّازِمُ فَالْزِمْ بُدَّكَ

"मैं (यानी, भगवान) आपकी आवश्यक अनिवार्यता हूं, इसलिए अपनी अनिवार्यता को मजबूती से पकड़ें।

हृदय के मूल से उसकी याद ("*धिक्कार*") को केवल किसी की आत्मा से सभी [आधारी] इच्छाओं को अलग करके, [सभी] नीच कर्मों को त्यागकर और उसकी पूजा में पूरी तरह से डूबने से ही मजबूत किया जा सकता है। एक सच्चा हृदय शांतिपूर्ण और स्वच्छ होता है। एक आस्तिक ("*मोमिन*") *की भव्यता* इसमें निहित है:

قَدْ أَفْلَحَ ٱلْمُؤْمِنُونَ

"विश्वासी [वास्तविक, अंतिम, स्थायी और शाश्वत सफलता के साथ] सफल हुए हैं। (कुरान, अध्याय 23, श्लोक 1)

भगवान ने यह भी निर्दिष्ट किया है कि:

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ ٱسْمَ رَبِّهِۦ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

"निश्चित रूप से सफल वह है जो स्वयं को शुद्ध करता है [अर्थात आत्मा को शुद्ध करता है] और अपने प्रभु के नाम को याद करता है और [सच्चे भक्ति के साथ उससे प्रार्थना करता है] । (कुरान, अध्याय 87, आयत 14-15)

दुनिया को जानना

अल-ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" *में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट)* में से तीसरे की

व्याख्या करते हुए, शाश्वत आनंद की इस कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) में से तीसरे की व्याख्या करते हुए जो "सांसारिक जीवन की दुनिया और वास्तविकता को जानना" है। शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट की तीसरी आवश्यकता की व्याख्या करते हुए - "सांसारिक जीवन की दुनिया और वास्तविकता को जानने के लिए", वह लिखते हैं [4]:

प्रिय प्रिय! यह दुनिया एक ऐसा मार्ग है जिस पर मनुष्य अपनी यात्रा पर अगली [दुनिया] की यात्रा करता है। यह "मारिफा" या ग्नोसिस [भगवान के] के एक विशाल रेगिस्तान के अंत और तलहटी में एक नखलिस्तान है। यह दुनिया ("*दुनिया*") और अगली दुनिया ("*अखिराह*") या परलोक दो शर्तें हैं। एक अवस्था मनुष्य के जीवन और समय (जो किसी की मृत्यु से पहले तक के बहुत करीब है) से संबंधित है। परलोक किसी की मृत्यु के तुरंत बाद शुरू होता है। यह संसार [और सांसारिक जीवन] मनुष्य के लिए परलोक ("अखिराह") के लिए तैयार करने के लिए है। इस जीवन का उद्देश्य यहां अपने प्रवास के लिए अपनी कमाई के रूप में अच्छे कर्मों का खजाना इकट्ठा करना है जो परलोक में अच्छी स्थिति में खड़ा होगा। यद्यपि मनुष्य को किसी की उत्पत्ति में कमजोर और अधूरा बनाया गया है, फिर भी उसे एक साथ ऐसी प्रतिभा का आशीर्वाद मिला है कि ईश्वर के आदेशों का पालन करके, वह "कमल" या पूर्णता और उत्कृष्टता प्राप्त करने, स्वर्गदूतों के गुणों को प्राप्त करने और ईश्वर की महिमा को देखने की स्थिति में हो सकता है। यह किसी के अस्तित्व का कुल योग है। यह वादा किया गया 'स्वर्ग' है।

उनकी सूक्ति ("*मारिफा*") की कुंजी मनुष्य के प्रति उनकी महान दयालुता के लिए कृतज्ञता और उनके असंख्य उपहारों की सराहना और उनकी रचनाओं की सुरम्य सुंदरता के संज्ञान में निहित है। मनुष्य की धारणा की इंद्रियां व्यक्ति को उसके द्वारा उत्पादित मनोरम चीजों का स्वाद चखती हैं और उनका स्वाद लेती हैं, प्रकृति में चारों ओर फैली अपार सुंदरता के अद्वितीय वैभव को देखती हैं। किसी के कान सुखदायक ध्वनियों और संगीत की सराहना करते हैं, किसी के हाथ किसी को प्रेमपूर्ण स्पर्श की गर्माहट का एहसास कराते हैं, आदि। जब तक मनुष्य जीवित है, तब तक कोई भी इन सबका आनंद ले सकता है और आभारी हो सकता है [बिना पूछे भी किसी को दिए गए अपार उपहारों के लिए ईश्वर का आभारी हो सकता है]। जब कोई मर जाता है, तो वह इन खुफिया [एकत्र] एजेंटों (यानी, इंद्रियों) की स्वतंत्र रूप से प्रदान की गई सेवाओं को खो देता है जो अब नहीं रहते हैं। इसलिए, मनुष्य को जीवन में दो चीजों की आवश्यकता होती है:

1. अपने दिल को उन चीजों से बचाने के लिए जो किसी के दिल को मारती हैं। व्यक्ति को अपने हृदय को भोजन [और पोषण] प्रदान करना चाहिए।
2. किसी के शरीर को उन चीजों के हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए जो इसे [नुकसान पहुंचाते हैं और] मारते हैं। इसे भी भोजन प्रदान करना चाहिए।

पहले हमारे प्रवचन में, हमने स्थापित किया है कि हृदय का भोजन ईश्वर का प्रेम और ज्ञान है ("मारिफा") जो इस कहावत पर आधारित है कि प्रत्येक चीज का भोजन वही है जो उसे वास्तव में पसंद है और इस आशय की आंतरिक, प्राकृतिक विशेषताओं के आधार पर उसे प्राप्त करने की इच्छा है। यह पौष्टिक और टिकाऊ भी होना चाहिए। उस मामले के लिए, यहां तक कि शरीर की देखभाल भी दिल के लिए है। क्योंकि शरीर अंततः नष्ट हो जाएगा, परन्तु हृदय जीवित रहेगा [मृत्यु के बाद भी सदा के लिए]। इस संबंध में एक सरल उदाहरण दिया जा सकता है, जैसे कि शरीर हृदय के लिए है, जैसे ऊंट (पुराने समय में परिवहन के साधन के रूप में) "*हाजी*" या तीर्थयात्री के लिए है [जो *ईश्वर के पवित्र घर के लिए हज* या तीर्थयात्रा करता है, यानी, पृथ्वी पर भगवान की दया का प्रतीक] भगवान के मार्ग में। एक इसकी सवारी

करता है और "*काबा*" (मक्का में भगवान का पवित्र घर) तक पहुंचता है। इसका उल्टा सच नहीं है, अर्थात, तीर्थयात्री ऊंट के लिए नहीं है, बल्कि ऊंट तीर्थयात्री के लिए है। स्वाभाविक रूप से, तीर्थयात्री ऊंट को तब तक खिलाएगा जब तक कि वह "*काबा*" तक नहीं पहुंच जाता [जो तीर्थयात्री का लक्ष्य और इच्छित गंतव्य है]। इस कारण से किसी की ओर से कोई भी ढील या देरी, कोई भी उपेक्षा किसी के उद्देश्य [अपने इच्छित गंतव्य तक पहुँचने] के लिए हानिकारक होगी।

मामले का और विश्लेषण करते हुए, मानव शरीर को तीन चीजों की आवश्यकता होती है:

a) खाद्य पदार्थ
b) कोट आदि
c) मकान।

दूसरे शब्दों में, खाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, खुद को ढकने की आवश्यकता के लिए कपड़ों की आवश्यकता होती है, घर अभयारण्य का स्थान है जहां कोई गर्मी और ठंड के हमले से सुरक्षित रह सकता है ताकि शरीर नुकसान से सुरक्षित रहे। संक्षेप में, ये तीन चीजें शरीर की प्राथमिक पूर्व-आवश्यकताएं, यानी किसी के भौतिक अस्तित्व का आधार हैं। हालांकि, अगर इंसान ज्यादा खाता है, तो उसकी मौत हो सकती है। घर और कपड़ों की इच्छा भी मनुष्य में अपने निर्वाह के लिए रोपित की गई है। इस प्रकृति की अत्यधिक मांग हानिकारक हो सकती है। यहां तर्क, सामान्य ज्ञान किसी के बचाव में आता है और शरीर की इन मांगों में अति-लिप्तता से रोकता है। अच्छाई का सिद्धांत जिसमें सभी नैतिक मूल्य शामिल हैं या जिससे वे प्राप्त होते हैं, उच्चतम या सर्वोच्च अच्छा जो उनकी देखरेख करता है, वह हृदय है। इसका भोजन महान है। दिल को जितना अधिक भोजन मिलता है, आत्मा के लिए उतना ही अच्छा होता है। परिणाम यह होता है कि एक हृदय अच्छी तरह से पोषण करता है, ईश्वर के प्रेम और खोज के साथ, अपना स्थान पाता है और एक शूरवीर सवार की तरह शरीर की सवारी करता है जिसके हाथ में अपने माउंट की बागडोर होती है। इसलिए, मेरे दोस्त पर ध्यान दो और इसकी लगाम ढीली न होने देना। जब आप शरीर की वासनाओं पर पूरी तरह से नियंत्रण कर लेंगे, तो लालच, दुर्भावना, अपवित्र और भ्रामक इच्छाओं पर अंकुश लग जाएगा।

दुनिया में चीजों की तीन प्रमुख श्रेणियां शामिल हैं:

1) वे चीजें जो पृथ्वी पर पाई जाती हैं जैसे सभी प्रकार की वनस्पति, खदानें और जानवर आदि। भूमि की सतह अपने आप में मानव निवास, कृषि आदि का आधार बनती है।

2) लोहा, स्टील, कांस्य आदि जैसे खनिजों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए मनुष्य द्वारा आवश्यक उपकरण, उपकरण और अन्य उपकरण बनाने के लिए किया जाता है।

3) मनुष्य जानवरों की सवारी करता है और उनका मांस खाता है और भोजन के अन्य पदार्थों को खाकर अपने अस्तित्व को बनाए रखता है।

और भी कई जटिलताएं हैं। यह अफ़सोस की बात है कि अपनी दिनचर्या में, व्यक्ति अपने हाथों और पैरों को रखता है और सबसे बढ़कर, अपने दिल को उनमें व्यस्त रखता है, क्योंकि इस तरह के किसी व्यक्ति के हृदय की पूर्ण व्यस्तता वास्तव में बहुत हानिकारक हो सकती है। यह अपने वास्तविक उद्देश्य को

भूलने और सांसारिक लालच, चुगली, क्रोध और इसी तरह की बुरी गतिविधियों में शामिल होने के कारण हृदय की मृत्यु का कारण बन सकता है।

इसी तरह, तीन पेशे - सुनार (धातुओं के लिए), बुनाई और वास्तुकला के भी सर्वोपरि महत्व के हैं। ये व्यवसाय न केवल किसी न किसी रूप में एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, बल्कि सक्रिय रूप से उनके सहायक ट्रेडों से भी जुड़े हुए हैं। जैसे कपास बीनने वाले कपास के बागानों से कपास के फूल तोड़ते हैं। कैस्टर फुलाना झारते हैं; कपास के कतरने वाले उन्हें धागों में घुमाते हैं और अंततः कपास बुनकर उन्हें विभिन्न प्रकार के कपड़ों में बुनते हैं। फिर इन कपड़ों को सिल कर सिल दिया जाता है। लोहार ऐसे उपकरण बनाता है जिनसे सिलाई, सिलाई और सिलाई की जाती है। इस तरह अलग-अलग पेशे के लोग एक-दूसरे के साथ काम करते हैं।

प्रत्येक दूसरे पर निर्भर है। स्वाभाविक रूप से, जटिलताएँ और पेशेवर ईर्ष्या पैदा हो गई। दर्जी वस्तुतः बुनी हुई सामग्री के लिए बुनकर और स्पिनर पर निर्भर हो जाता है, जो इसे एक बढ़ई या लोहार द्वारा बदले में बनाए गए यांत्रिक उपकरणों के साथ घुमाता है, जबकि एक स्वयं को दर्जी के लिए अपने स्वयं के उपकरण और उपकरण की भी आवश्यकता होती है, जिसके लिए फिर से लोहार की सेवाओं की आवश्यकता होती है। देने और लेने की इस जटिल प्रणाली के परिणामस्वरूप जटिलताएं और प्रतिद्वंद्विता होती है, जिसके लिए तीन प्रमुख चीजों के साथ-साथ अन्य कारक जो इस मुद्दे पर आधारित हैं, महत्वपूर्ण हैं:

1) राजनीतिक, दूसरे शब्दों में, सामरिक कौशल और राजनेता।
2) निगरानी गियर और सरकार।
3) "*इल्म अल-फ़िक़्ह*" या धर्म में निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुसार कानून और आचार संहिता का ज्ञान।

अंतिम विश्लेषण में, यह बुनियादी ढांचा उपरोक्त तीन मानव पूर्व-आवश्यकताओं, अर्थात् भोजन, कपड़े और घर या निवास स्थान की प्राप्ति और उपलब्धि के लिए है। बाकी उनका अनुसरण करते हैं। ये बुनियादी मानवीय आवश्यकताएं शरीर से संबंधित हैं। बदले में शरीर हृदय, आत्मा के लिए है। आत्मा को शरीर पर चढ़ना पड़ता है जैसे तीर्थयात्री ("*हाजी*") को काबा (तीर्थयात्री का अंतिम गंतव्य - मक्का में भगवान का प्रतीकात्मक घर जो पृथ्वी पर भगवान की दया का प्रतीक है) *तक पहुंचने के लिए ऊंट की सवारी करनी पड़ती है* । मनुष्य के मामले में, किसी का लक्ष्य इसका पर्याय है, अर्थात, ईश्वर के "*मारिफा*" या सूक्ति के लक्ष्य को प्राप्त करना। काबा तक पहुँचने के अपने लक्ष्य को ध्यान में रखने के बजाय , यदि उपरोक्त तीर्थयात्री यात्रा करते समय, ऊँट की देखभाल करने और उसकी देखभाल करने में अपना समय बर्बाद करता है, तो उसकी घोर लापरवाही के लिए केवल स्वयं को दोषी ठहराया जाता है [जो किसी को अपने अंतिम लक्ष्य और गंतव्य तक पहुँचने से रोकेगा]। प्रिय प्रिय! इससे सबक सीखें। जीवन के वास्तविक उद्देश्य और उद्देश्य की कीमत पर सांसारिक मामलों में शामिल न हों। जीवन के बेकार व्यवसायों [और बेकार की खोजों] में दुनिया में बर्बाद किया गया समय आपको महंगा पड़ेगा। याद रखें कि जीवन की यह यात्रा वास्तव में परलोक ("अखिराह") की ओर एक यात्रा है। इस दुनिया का करिश्मा बहुत ही आकर्षक है। अंदर मत लिया जाए। जीवन के प्रलोभनों से ऊपर उठें। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने ठीक ही कहा है कि, "दुनिया '*हारूत* और *मारुट*' (प्रसिद्ध महान जादूगर) से भी बड़ी जादूगर है। [दुनिया की] वास्तविकता को इस प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है:

एक. इस दुनिया द्वारा आप पर जादू का पहला जादू यह है कि यह आपको महसूस कराता है कि यह दुनिया और इसके सभी आकर्षण हर समय रहने के लिए हैं, जबकि वास्तव में, मामला इसके विपरीत है। समय क्षणभंगुर है, लगातार आगे बढ़ रहा है, हालांकि सुस्ती से, क्योंकि आप इसके सुखद क्षणों में समय की गिनती खो देते हैं। बीतता समय, दुनिया में उसका चलना एक छाया की तरह है। यह हमेशा एक छाया की तरह निष्क्रिय दिखता है जो अभी भी दिखता है। आपको बाद में एहसास होता है कि छाया अब वहां नहीं है जहां वह थी, इसके बजाय यह स्थानांतरित हो गई है और धीरे-धीरे और अगोचर रूप से अपनी मूल स्थिति से दूर चली गई है। वास्तव में, दुनिया गति में है। समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते। इसलिए सावधान रहें और अपने पैरों के नीचे घास को उगने न दें। एक पल खोया नहीं जाता है, लेकिन खोया हुआ पल कभी हासिल नहीं होता है। जैसा कि यह है, जीवन छोटा है। तो क्यों न इसका अधिकतम लाभ उठाया जाए।

दो. इस दुनिया के जादू का दूसरा उदाहरण यह है कि यह आपको एक प्रिय मित्र के रूप में मानता है, जिस पर यह सांसारिक प्रेम और सौहार्द के अपने उपहारों को लुभाने का नाटक करता है, जैसे कि एक वफादार साथी की तरह यह हमेशा आपके साथ रहेगा। यह आपको अपने आदेश पर हर मोहक छल से आपको इस पर भरोसा करने की कोशिश करता है, कि आप इसके ध्यान की एकमात्र सबसे अधिक प्रिय वस्तु हैं। लेकिन बाद में जब यह आपको अधर में छोड़ देता है, तो आप झुके हुए और खो जाते हैं। आपको अपने जीवन का एक झटका लगता है। होता यह है कि स्वच्छंद प्रकृति के एक सुंदर प्रेमी की तरह, यह आपको अचानक छोड़ देता है, किसी और पर अपनी रेशमी बेड़ियों को बुनता है, अपने खतरनाक पार्लर में इतने आसान शिकार को ले जाता है और मृत्यु और वीरानी का स्वाद चखता है।

यह कहा जाता है कि एक बार यीशु (ईसा [ईश्वर की शांति और आशीष] या यीशु मसीह) ने ऐसी अक्सर विवाहित महिला (जो दुनिया की वास्तविकता का अवतार थी) को "*कश्फ*" (आध्यात्मिक अवस्था जिसमें आध्यात्मिक क्षेत्र की वास्तविकताओं को जागने की स्थिति में दिखाया जाता है) की स्थिति में देखा और उससे पूछा कि उसने कितने पतियों से शादी की है? उसने जवाब दिया कि उसने गिनती खो दी है। यीशु ने उससे फिर पूछा, "क्या वे मर गए, या तुमने उनसे तलाक लिया? उसने जवाब दिया कि उसने उन सभी को मार डाला है! यीशु इस दुखद उत्तर को सुनकर टिप्पणी करने के अलावा कुछ नहीं कर सके, "उन लोगों पर दया हो जो आपके जादू में पड़ गए। उन्होंने देखा कि उनके पूर्ववर्तियों के साथ क्या हुआ था, फिर भी वे आपकी सुंदरता के जादू में चले गए, मृत्यु तक और समय पर एक सबक नहीं सीखा।

तीन. इस संदर्भ में तीसरा उदाहरण एक बूढ़ी औरत का है जो अपने चेहरे को एक आकर्षक घूंघट से ढक लेती है, खुद को भव्य कपड़ों से सजाती है, अपनी प्रोफ़ाइल को तेजतर्रार फैशन में सजाती है और दुर्लभ अमूल्य गहने पहनती है ताकि जो कोई भी उस पर नजर डाले, वह सीधे उसके प्यार में पड़ जाए। दुनिया मनुष्यों के साथ ऐसा व्यवहार करती है। यह अपनी आकर्षक सुंदरता और उत्साह के साथ किसी पर ऐसा जादू करने की कोशिश करता है कि कोई भी अपनी बुद्धि से बाहर निकल सकता है और उसके कवच से स्तब्ध हो जाता है। यह अपनी कठिनता के सभी विचारों और विचारों को अलग कर देता है। मनुष्य भूल जाता है कि जीवन कठिन और ईमानदार है। कभी-कभी किसी को इसका एहसास बहुत देर से होता है जब यह एक अशिष्ट झटका बन जाता है जब बूढ़ी औरत एक महिला के रूप में मुखौटा पहनती है, अपना घूंघट हटा देती है और इसके बजाय एक घृणित चेहरा दिखाई देता है।

चार. चौथा उदाहरण यह है कि यदि कोई ब्रह्मांड के विकास के बाद से बीत चुकी समय की अवधि की गणना करने का प्रयास करता है, वह अवधि जब यह ब्रह्मांड अस्तित्वहीन था और अब से इसके अंत तक जो समय अवधि बची है, तो वह पाएगा कि ऐसा करना असंभव है और ऐसा करने के बारे में सोचना भी विवेक की सीमा को पार कर रहा है। बस, जो कुछ भी जानता है वह यह है कि उसकी दुनिया "पालने से कब्र तक" है, यानी, पालना जीवन के माध्यम से उसकी यात्रा की शुरुआत है, इस दुनिया के माध्यम से और कब्र इसका अंत है। बीच में कुछ पड़ाव होते हैं, कोई कह सकता है, जिसमें वर्ष, महीने, दिन और अंत में जो सांसें होती हैं, वे शामिल हैं। कुछ लंबी दूरी तय करते हैं और कुछ छोटी। चाहे मनुष्य का जीवन लंबा हो या छोटा, किसी का जीवन काल [वास्तव में] छोटा होता है लेकिन व्यक्ति इस महत्वपूर्ण बिंदु को पूरी तरह से भूल जाता है। कोई यहां ऐसे रहता है जैसे कि वह हमेशा के लिए जीने वाला हो। कितनी विडंबना यह है कि हालांकि कोई अपनी अगली सांस के बारे में भी निश्चित नहीं है, वह आने वाले दस वर्षों के लिए चीजों की योजना बनाता है ताकि कोई अपनी इच्छा महसूस न कर सके या उनसे कम न हो जाए। उस दिन को देखने के लिए कोई जीवित भी नहीं रह सकता है!

पाँच. जीवन के सुखों में अति-भोग मनुष्य के परलोक ("अखिराह") के लिए उतना ही हानिकारक है जितना कि एक लालची पेटू के लिए अधिक खाना। एक पेटू समृद्ध, मीठा, या गर्म, मसालेदार, चिकना भोजन पर झपटता है और इसे व्यभिचार से खा जाता है, इस तरह के भारी और गैर-आवश्यक भोजन के साथ अपने पेट पर बोझ डालने के परिणामों की परवाह नहीं करता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को उल्टी होने लगती है और दस्त होने लगते हैं। क्षणिक स्वाद और आनंद के लिए, किसी की अत्यधिकता व्यक्ति को इस तरह के अपमान, पीड़ा और शर्म में डाल देती है। यहां तक कि भोजन के इतने भारी कोर्स के बाद मलमूत्र भी बीमार और अप्रिय होता है। इसलिए यह देखा गया है कि इस दुनिया में जितना अधिक वासना और व्यभिचार में लिप्त होता है, उतना ही अधिक परलोक में अपमानित होता है। किसी की सांस की ऐंठन के अंतिम समय में, मनुष्य जितना अधिक अपने घर में धन, सोना, चांदी, बगीचे, नौकरों और नौकरानियों को मापता है, उतना ही अधिक गंभीर होता है कि व्यक्ति उनसे अलग हो जाता है। इसके विपरीत, एक गरीब व्यक्ति को कोई पछतावा नहीं होगा। दर्द की इस तरह की पीड़ा केवल किसी की पहले से ही बिगड़ती स्थिति को बढ़ाती है और इसकी परिणति "*अधाब*" या किसी के बुरे कर्मों का प्रतिशोध में होती है।

छः. जीवन का एक और असाधारण कारक यह है कि इस दुनिया के मामलों में उनके बारे में एक आसन्न है। वे सामान्य कामों की तरह दिखते हैं, दिनचर्या और मुश्किल नहीं। अन्य सभी अवधारणाओं और विचारों से बेखबर होकर, मनुष्य उनमें पूरी तरह से लीन हो जाता है। किसी को यह एहसास नहीं होता है कि पहियों और पहियों के भीतर पहिए हैं। एक चीज दूसरी चीज की ओर ले जाती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति का जीवन बर्बाद हो जाता है। यीशु (ईसा या यीशु क्रिस [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो]), ने कहा है कि इस दुनिया का साधक उस आदमी की तरह है जिसके होंठ समुद्र के किनारे से जुड़े हुए हैं, जो उत्सुकता से अपनी प्यास बुझाने में लीन है। उसकी प्यास बढ़ती दिख रही है। जितना अधिक वह पीता है, उतना ही अधिक वह ऐसा करने की इच्छा रखता है। अंततः, वह इस बेकार खोज में मर जाता है, प्यासा और असंतुष्ट रहता है। [इस दुनिया और इसकी संपत्ति के लिए] वासना का अभिशाप ऐसा है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा है, "यह संभव नहीं है कि कोई पानी में डूबा जाए और भीगा न जाए"। इस तरह का ऐसा व्यक्ति, जिसके पास इस दुनिया के लिए इतना स्पष्ट क्रेज है, निश्चित रूप से इससे कलंकित होगा।

सात. इस दुनिया के बारे में सातवां उदाहरण एक ऐसे अतिथि की तरह है जो एक मेजबान के पास जाता है जो बहुत अमीर है और अपने मेहमानों के साथ भव्य व्यवहार करने की आदत रखता है जो रिसेप्शन की [उत्कृष्ट] गुणवत्ता के कारण बड़ी संख्या में आए थे। एक उन्हें चांदी के चूल्हे में आबनूस और एम्बर आग के सुगंधित वातावरण में उत्तम डिजाइन और सजावट के सोने और चांदी की थाली में शानदार भोजन परोसता है। एक समझदार अतिथि जो किसी के स्वभाव को समझता है, कृतज्ञतापूर्वक उसका भाग लेता है, इसमें अपना थोड़ा सा इत्र जोड़ता है और मेजबान से उनकी पारस्परिक संतुष्टि के लिए शालीनता से विदा लेता है। दूसरी ओर, एक लालची अतिथि किसी के आतिथ्य के बाद उसके योग्य मेजबान को मूल्यवान सामान लूटने की कोशिश करता है, और इस प्रक्रिया में किसी के नौकरों द्वारा पकड़ लिया जाता है और अपमानित किया जाता है। मानवीय वासना और उसकी भ्रष्ट इच्छाएँ कामुक हैं। इस दुनिया के माध्यम से इस यात्रा में, किसी की अपनी सही अर्जित संपत्ति ही उसकी अपनी सच्ची संपत्ति है जिसे कोई भी अपने सामान के रूप में ले जा सकता है। इस गेस्ट हाउस (या आधुनिक समय में होटल) में, कोई भी केवल कानूनी और सत्य से ही लाभ उठा सकता है। लोभ किसी का भला नहीं करेगा।

आठ. दुनिया का अगला उदाहरण, यानी इसकी आकर्षक प्रकृति का यह है कि मनुष्य इसमें खो जाता है [आकर्षण की स्थिति में]। इतना कि परलोक को पूरी तरह से भूल जाता है। उदाहरण के लिए, एक जहाज पर सवार लोगों का एक समूह। वे अपने रास्ते में एक द्वीप पर पहुंचते हैं जहां वे थोड़ी देर के लिए थोड़ी राहत, व्यक्तिगत स्वच्छता और स्नान करने के लिए कदम रखते हैं। कप्तान ने घोषणा की कि जहाज को जल्द ही प्रस्थान करना चाहिए, इसलिए उन्हें अपनी सभी जरूरतों को जल्दी से पूरा करना चाहिए और जहाज को जल्दी से फिर से शुरू करना चाहिए। उनमें से समझदार लोग तेजी से ऐसा करते हैं, जबकि अकर्मण्य का दूसरा समूह, इधर-उधर बिखर जाता है, दृष्टि से ओझल हो जाता है, अनावश्यक रूप से द्वीप का दौरा करता है, जगह की प्राकृतिक सुंदरता, इसकी वनस्पतियों और जीवों और रंगीन सीपियों का आनंद लेता है। जब वे लौटते हैं, तो वे पाते हैं कि जहाज पर सभी आरामदायक स्थान ले लिए गए हैं। इसलिए उन्हें अंधेरे और गंदे नुक्कड़ में बैठना पड़ता है। उनके बाद आने वाले लोगों का अगला समूह अपने साथ इन शंखों का भारी बोझ लेकर आता है। उन्हें अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में बदतर स्थान मिले उनके समान बेकार भ्रमण के कारण। वे इतने भ्रमित हो जाते हैं कि उन्हें बोर्ड पर बैठने के लिए शायद ही कोई जगह मिलती है। इसके अलावा, उन्हें अपने गले में बंधे इन खूबसूरत गोले का भार उठाना पड़ता है। दो दिनों के बाद, ये गोले गंदे हो जाते हैं और बदबू आने लगती है। इससे भी बुरी बात यह है कि जगह की कमी के कारण वे इस बोझ को दूर भी नहीं कर सकते। उनकी शर्म और पश्चाताप भी उतना ही भारी है। आलसी लोगों का अंतिम समूह द्वीप की खोज में इतना तल्लीन हो जाता है कि अपनी अनिश्चितताओं में, वे त्वरित असेंबली के लिए कप्तान के कॉल पर ध्यान देने में पूरी तरह से विफल हो जाते हैं, अपने जहाज को याद करते हैं और जंगल में मर जाते हैं।

संक्षेप में, उनमें से पहला समूह विश्वासियों की तरह है और उनमें से अंतिम अविश्वासियों की तरह है जो उन लोगों की तरह हैं जो ईश्वर, उनके पवित्र पैगंबर (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) और न्याय के दिन को भूल गए हैं:

استحبوا الحياة الدنيا على الآخرة

"उन्होंने परलोक की तुलना में इस दुनिया के प्यार को प्राथमिकता दी है।

मध्यस्थ दो समूह पापी हैं जिन्होंने अपने बेहतर निर्णय और व्यवहार के निर्धारित पाठ्यक्रम के खिलाफ गलती की। वे इस लोक में और परलोक में पीड़ित हैं। उन्हें अपने कुकर्मों के लिए ईश्वरीय प्रतिशोध के अधीन किया जाता है।

सावधान रहें कि यह दुनिया की निंदा नहीं है। आखिरकार, दुनिया को भगवान द्वारा बनाया गया है, इसलिए यह बिना उद्देश्य के नहीं हो सकता है। इस दुनिया में सभी चीजें बुरी नहीं हैं। उदाहरण के लिए, "'*इल्म*' या अपने आप में ज्ञान और "*अमल*' (निर्धारित आचरण के अनुसार कार्यों का प्रदर्शन) अपने आप में महत्व के दो गुण हैं। इतना कि, वे दोनों जाहिरा तौर पर इस दुनिया में हैं, लेकिन वास्तव में मनुष्य के साथ परलोक में जाएंगे। उदाहरण के लिए, ईश्वर के "*मारिफा*' या ज्ञान का ज्ञान और उसकी प्राप्ति मनुष्य के अस्तित्व की परिणति है। "'अमल" या किसी के कार्यों और अच्छे कर्मों का अपना सकारात्मक स्थायी प्रभाव होता है, अर्थात्, आत्मा की परिणामी पवित्रता और पवित्रता जो बुराई को त्यागने और ईश्वर की समर्पित पूजा द्वारा आत्मा के पोषण से आती है। ईश्वर का निरंतर स्मरण मनुष्य का अनन्त पुरस्कार है:

وَٱلْبَٰقِيَٰتُ ٱلصَّٰلِحَٰتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ

"परन्तु धर्म के स्थायी काम तेरे रब के बदले में बेहतर हैं। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 46)

"धिक्कार" *का सुस्वादुत्व, आनंद,* यानी, ईश्वर का स्मरण उत्तम है। हम उनकी पूजा करते हैं और इस दुनिया में इसके आकर्षण का आनंद लेते हैं लेकिन वास्तव में यह इससे संबंधित नहीं है। यह परलोक का आशीर्वाद है। इस दुनिया का एक आनंद भी है जो इंसान के मरते ही खत्म हो जाता है। लेकिन उसके प्रेम और आराधना का आनंद हमेशा जीवित रहता है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है:

الدنيا ملعونة وملعون مافيها الاذكر الله وما والاه

"दुनिया और सांसारिक संपत्ति अभिशाप हैं। लेकिन वे चीजें जो किसी व्यक्ति को परमेश्वर को याद करने में सहायता और सहायता करती हैं, वे धन्य हैं।

दुनिया और इसके कई लक्षणों पर यह ग्रंथ वर्तमान प्रवचन के उद्देश्य के लिए पर्याप्त है। इसके परिणाम और अन्य संबंधित मामलों, ईश्वर की इच्छा से, उचित समय पर चर्चा की जाएगी।

मृत्यु के बाद के जीवन को जानना

अल-ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट फॉर इटरनल हैप्पीनेस एंड एंडलेस सक्सेस" *में शाश्वत खुशी और सच्ची स्थायी सफलता की कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट*) में से अंतिम की व्याख्या करते हुए, शाश्वत आनंद की इस कीमिया (या परिवर्तनकारी एजेंट) के चार शीर्षकों (या आवश्यकताओं) में से अंतिम की व्याख्या करते हुए जो "बाद के जीवन की वास्तविकता को जानना" है। शाश्वत आनंद के परिवर्तनकारी एजेंट की चौथी आवश्यकता की व्याख्या करते हुए - "मृत्यु के बाद के जीवन की वास्तविकता को जानने के लिए", वह लिखते हैं [5]:

प्रिय प्रिय! याद रखें कि जब तक आप मृत्यु की वास्तविकता को नहीं जान पाते, तब तक आप यह नहीं समझ पाएंगे कि परलोक का क्या अर्थ है। बदले में, मृत्यु की वास्तविकता, का जीवन पर सीधा संदर्भ और प्रभाव पड़ता है। जीवन की सत्यता आत्मा ("रुह") के महत्व को समझने की कोशिश में निहित है, जो दूसरे शब्दों में, स्वयं के ज्ञान ("*नफ्स*") के समान है। सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए, आत्मा और स्वयं पर्यायवाची हैं। अब तक, हम पहले ही इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि मनुष्य को अपने संपूर्ण बुनियादी ढांचे और आत्मा ("रुह") के साथ एक भौतिक फ्रेम के रूप में बनाया गया है। यह दोहराना सार्थक है कि आत्मा सवार है और शरीर वह पर्वत है जिस पर वह सवारी करता है।

आत्मा अपने रूप के अनुसार स्वर्ग में या नरक में होगी, चाहे वह शरीर किसी भी हो। इसे या तो पवित्र किया जाएगा या निंदा की जाएगी। शरीर के बिना, मनुष्य पर ईश्वरीय कृपा से प्रभावित हृदय की अमूल्य संपत्ति को "आत्मा का स्वर्ग" कहा जाता है। ऐसी आत्मा के साथ ईश्वर के धन्य व्यक्ति को परलोक में सुंदर महलों, बगीचों और असंख्य अन्य प्रसन्नताओं के साथ पुरस्कृत किया जाएगा [जो किसी भी आंख ने कभी नहीं देखा है, और किसी भी दिल ने कभी कुरान और भविष्यसूचक शिक्षाओं के अनुसार कल्पना नहीं की है]। इसके विपरीत, शरीर के बिना अपने स्वयं के बुरे कर्मों के कारण पीड़ा और कष्टों से ग्रस्त आत्मा को "आत्मा में आग" कहा जाता है। उसका निवास नर्क होगा। कांटेदार हेजेज और बिच्छू किसी के सह-साथी होंगे। इस विषय पर अधिक विवरण इस कार्य के साथी खंड में प्रदान किया गया है [मेरी पुस्तक में] "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के लिए पथ के ज्ञान का पुनरुद्धार"। बहुत से लोग उस मौत के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं जिस पर हमने यहां छुआ है; लोग मृत्यु के विषय के बजाय स्वर्ग और नरक पर अधिक ध्यान देना पसंद करते हैं। "*हदीस कुद्सी*" (पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो] जिसमें उन्होंने ईश्वर से प्रेषित किया था) में कहा गया है कि:

اعدت لعبادى الصالحين ما لا عين رأت ولا اذن سمعت

ولا شكر على قلب بشر

"मैंने अपने धर्मी दासों के लिए [ऐसी खुशियों] को तैयार किया है, जो न किसी आंख से देखे गए हैं, न किसी कान से सुने गए हैं, और न किसी मनुष्य के हृदय में आए हैं।

इसके अलावा, मनुष्य के दिल में एक खिड़की है जो आकाशीय (या आध्यात्मिक) क्षेत्र की ओर खुली है जिसके माध्यम से वह अदृश्य ("ग़ैब") के रहस्यों को देखता है। यह उन्हें सुनी-सुनाई बातों से नहीं जानता है, लेकिन यह वास्तव में उन्हें देखता है और परलोक में आशीर्वाद की स्थिति या परलोक में निंदा किए जाने की स्थिति को देखता है। यह स्पष्ट रूप से समझता है, एक चिकित्सक के रूप में स्वस्थ या बीमार होने की दो स्थितियों के बीच स्पष्ट अंतर होगा। यह बीमारी में उचित दवा लेने के गुण के प्रति और डॉक्टर द्वारा निर्धारित रोकथाम का पालन करने के गुण के प्रति पूरी तरह से जीवित हो जाता है, उन चीजों से दूर रहने के लिए जो उसने मना किया है। इस प्रक्रिया को शरीर की धन्य ("*सादाह बदनिया")* कहा जाता है। इसके विपरीत, अधिक खाने और अपने डॉक्टर पर ध्यान न देने जैसी अतिभोग बुरी है और इसे शरीर की बीमारी ("*शकवातु बदानिया")* कहा जाता है। व्यावहारिक अवलोकन किसी को स्पष्ट रूप से देखता है कि हृदय, आदम की संतान, यानी मनुष्य की आत्मा, में गुण और नीचता दोनों हैं। सदाचार का प्रतिफल प्राप्त करने का 'इलाज' ईश्वर की पूजा और ज्ञान ("मारिफा") में निहित है, जबकि शाप, नीचता का जहर अज्ञानता की मूर्खता और अभद्र आचरण में निहित है [क्योंकि महान उद्देश्य केवल महान साधनों के

माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं और अभद्र उद्देश्य ही अभद्र साधनों का एकमात्र परिणाम हैं]। इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए, महान ज्ञान प्राप्त करना है। जिन लोगों ने खुद को "*उलेमा" या विद्वान कहा है, उनमें से कई न* केवल इस ज्ञान में सीखे हुए हैं, बल्कि इसके विरोधी और इनकार करने वाले भी हैं। निश्चित रूप से किसी चीज़ को जानने से व्यक्ति झुक जाता है ("अलीम") और उसे न जानने के लिए एक अज्ञानी बन जाता है। फिर भी, वे वहां हैं। वे भौतिक स्वर्ग या नरक के बारे में ही जानते हैं। उनके लिए, इसके बाद अफवाहों तक ही सीमित है या आँख बंद करके 'अक्सर पीछा किए गए' का पालन करना है। यह जोड़ने की जरूरत नहीं है कि हमने अरबी में ठोस तर्कों के आधार पर विषय के अध्ययन और शोध में तथ्यों को लिखा है।

इन परिस्थितियों में, हम केवल यह जोड़ सकते हैं कि एक बुद्धिमान और चतुर व्यक्ति जिसका आंतरिक ("बैटिन") या आत्मा शुद्ध और पूर्वाग्रहरहित है, वह कुछ लोगों के विपरीत, जो इसके बारे में पूरी तरह से अंधेरे में है, अपने नवजात सत्य में परलोक के न्याय की ओर ले जाने वाला धर्मी मार्ग ढूंढेगा।

मृत्यु के बारे में सच्चाई को समझने के लिए, आपको पता होना चाहिए कि मनुष्य की दो प्रकार की आत्माएं होती हैं। "*रुह हैवानी*" का अर्थ है भौतिक, पशु आत्मा। दूसरे को "*रुह इंसानी*" कहा जाता है जो मनुष्य में स्वर्गदूतों की आत्मा की उत्पत्ति से आत्मा है। पशु आत्मा का स्रोत, डेल्टा, फव्वारा मांस की वह गांठ है जिसे [भौतिक] 'हृदय' कहा जाता है जिसे मनुष्य के ऊपरी बाईं ओर रखा जाता है। इसकी निम्नलिखित विशिष्ट विशेषताएं हैं:

- एक. इसमें मध्यम प्रकृति के शारीरिक संयुग्मन की नाजुक भोली ज्वरता होती है।
- दो. ज्वर या हल्का बुखार जो अपनी उत्पत्ति में मध्यम है, [शारीरिक] हृदय की नसों से निकलता है, मस्तिष्क और शरीर के अन्य भागों तक पहुंचता है।
- तीन. यह स्पंदित है।

संक्षेप में, यह पशु आत्मा है जो माध्यम और गति की जिम्मेदारी को वहन और संचालित कर रही है। जब यह मस्तिष्क तक पहुंचता है, तो इसकी गर्मी कम हो जाती है और क्लेमेंट बन जाती है। आंखें इसके माध्यम से देख सकती हैं और कान सुन सकते हैं। यह धीरे-धीरे सभी इंद्रियों तक फैलता है। आत्मा की तुलना दीपक से की जा सकती है। जब यह घर में पहुंचता है, तो जहां इसे रखा जाता है, उसके चारों ओर की दीवारें जगमगा उठती हैं। उसी प्रकार जिस प्रकार यह दीपक घर के आस-पास के वातावरण को प्रबुद्ध करता है, उसी प्रकार ईश्वर अपनी परम कृपा से प्रकाश, आंखों में देखने की शक्ति और इस आत्मा द्वारा कानों में सुनने की क्षमता प्रदान करता है और सभी ज्ञानेन्द्रिय सक्षम (सक्षम) होते हैं।

दूसरी ओर, यदि कुछ नस प्रभावित हो जाती है और मुड़ जाती है या गांठ हो जाती है, तो यह लकवाग्रस्त, सुस्त और निष्क्रिय हो जाता है और चिकित्सक यह देखने की पूरी कोशिश करता है कि यह गाँठ खुल जाए और किसी तरह हटा दी जाए। दूसरे शब्दों में, आत्मा दीपक की लौ की तरह है, हृदय बाती है और भोजन तेल है। तेल के बिना, दीपक को डॉज किया जाता है। भोजन के बिना, यानी तेल के बिना, आत्मा का संयमी स्वभाव रुक जाता है और इस प्रकार मृत्यु हो जाती है। यदि तेल है लेकिन बाती बहुत अधिक तेल का उपयोग कर रही है, तो इसका मतलब है कि यह दोषपूर्ण हो गया है और उस चरण तक पहुंच सकता है जब यह बिल्कुल भी काम नहीं कर सकता है। अंत में हृदय के साथ यही होता है - यह अपने भोजन को स्वीकार करने और आत्मसात करने में असमर्थ हो जाता है। इसी तरह, यदि दीपक को ढक दिया जाता

है, तो यह बाती और तेल की उपस्थिति के बावजूद बुझ जाएगा। इसी तरह, एक जानवर गंभीर रूप से घायल होने पर मर जाता है।

आइए पॉलिश किए गए दर्पण का उदाहरण देखें। जब तक यह साफ और साफ रहता है, तब तक यह जो कुछ भी प्रक्षेपित होता है उसे स्वीकार करता है और इसे बहुत संतोषजनक ढंग से प्रतिबिंबित करता है। हालाँकि, यह तब नहीं कर सकता जब यह गंदा, कलंकित या धूल से ढक जाता है। इसमें चीजों के चित्र और उपस्थिति दिखाई नहीं देती है, इसलिए नहीं कि वे वहां नहीं हैं, बल्कि इसलिए कि दर्पण बहुत गंदा हो गया है और इसलिए छवियों को प्रतिबिंबित करने में असमर्थ है।

इसी तरह, इसे हलचल करने में सक्षम बनाने के लिए माध्यम की क्षमता और पशु आत्मा में अंगों की संवेदनाएं, संयम के अपने अंतर्निहित प्राकृतिक स्वभाव के कारण और इसकी महीन नाजुक रूप से भोली ज्वर के कारण भी है। लेकिन जैसे ही क्लेमेंट प्रकृति की यह विशेषता, उसका संयम खो जाता है, इसकी ताकतें जो प्राइम मूवर्स के रूप में काम करती हैं, काम करना बंद कर देती हैं। इस प्रकार, परमेश्वर का यह अनूठा आशीर्वाद खो दिया जाता है। शारीरिक अंग काम करना बंद कर देते हैं और मनुष्य को मृत घोषित कर दिया जाता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा सौंपे गए देवदूत का काम, जिसे हम "*मलिक उल-मौत*" या "मौत के दूत" के रूप में जानते हैं, शुरू होता है। ऐसे मामलों का संज्ञान उसे सबसे अच्छी तरह से पता है। हम उन्हें सुनी-सुनाई बातों से "मलिक *उल-मौत*" या "मौत के दूत" के रूप में जानते हैं, लेकिन उनकी वास्तविक ईमानदारी कुछ ही लोगों के ज्ञान में है।

मनुष्य की मृत्यु का प्रश्न हालांकि अलग है। ऊपर वर्णित पशु आत्मा के अलावा, मनुष्य की एक और आत्मा ("रुह") है *जिसे* "रूह इंसानी" या "मानव आत्मा" या "हृदय" *कहा जाता है*। यह आत्मा, उपरोक्त भौतिक या जैविक आत्मा के विपरीत, बहुत उच्च स्तर पर है। मनुष्य की आत्मा विभाजन को स्वीकार नहीं करती। इसके महत्व और महत्व को इस तथ्य से देखा जा सकता है कि इसमें ईश्वर की "*मारिफा*" या सूक्ति हो सकती है। वास्तव में, ईश्वर भी एक और केवल है। उनके "*मारिफा*" या ग्नोसिस का विभाजन भी मान्य नहीं है। इसलिए उनके "*मारिफा*" या ग्नोसिस की अवधारणा को किसी भी शारीरिक रूप में सीमित किया जाना ईशनिंदा के समान है।

प्रिय प्रिय! यदि तर्क के लिए, हम मनुष्य में बाती, उसकी लौ और प्रकाश की उपस्थिति को पूर्व-मान लें, तो हम केवल दीपक के भौतिक घटकों, अर्थात् इसकी संरचना और बाती को पशु रूप से जोड़ पाएंगे, तो भी हम इसके प्रकाश को इस तरह से नहीं बता पाएंगे, मनुष्य की 'मानव आत्मा' के अनुरूप। यह स्पष्ट है, क्योंकि इसका पूर्व क्षणिक है, लेकिन बाद वाला नहीं है, अर्थात, भौतिक दीपक का प्रकाश दीपक के अधीन है। यदि दीपक टूट जाता है, तो उसकी रोशनी बुझ जाएगी। लेकिन मनुष्य की वास्तविक आत्मा (यानी, 'मानव आत्मा') कभी भी बुझती या नष्ट नहीं होती है, हालांकि, किसी की 'पशु आत्मा' नष्ट हो सकती है। एक तरह से, मनुष्य में पशु आत्मा किसी की वास्तविक आत्मा का पर्वत है जिस पर वह काठी और सरपट दौड़ता है। यह भी, साधन है, किसी के लिए ऐसा करने के लिए, किसी के लाभ के लिए उपकरण। इसलिए, जब यह पर्वत (यानी, पशु आत्मा) नष्ट हो जाता है, तो मनुष्य अपना उपयोग खो देता है। ठीक उसी तरह, जैसा कि इसकी अनुपस्थिति में, व्यक्ति अधिक आत्मविश्वास प्राप्त करता है और अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बन जाता है। यह किसी के लिए सबसे कम मायने रखता है, खासकर इस अवधि के दौरान, क्योंकि मनुष्य ने इतनी मेहनत की है कि उसने पहले से ही गणना और उल्लेखनीय की स्थिति की कुछ योग्यता हासिल कर ली है। इस महिमा पर अधिकार की मुहर लगाने के लिए, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने भी कहा है कि, "मृत्यु एक आस्तिक के लिए एक उपहार है"।

स्थिति एक शिकारी के समान है जो किसी के शिकार गियर और सामग्री के साथ मैदान में है। तर्क के लिए, यदि कोई उस शिकार को प्राप्त करने में सफल हो जाता है जिसके लिए वह विशेष रूप से सभी तरह से आया है, लेकिन [उस प्रक्रिया में] अपना गियर खो देता है, तो वह अभी भी बेहतर है। वैकल्पिक रूप से, यदि कोई शिकार प्राप्त करने से पहले अपना शिकार गियर खो देता है, तो किसी की स्थिति उसकी निराशा के लिए बदतर हो जाएगी [किसी के उद्देश्य को प्राप्त करने में विफलता के कारण]। इसके लिए इसमें एक गहरा सबक है। ऐसा व्यक्ति अपनी असफलता को अपने हाथों से पूरा करता है। परलोक का प्रतिशोध एक से आगे निकल जाता है, जिसके परिणामस्वरूप असंख्य पीड़ाएं होती हैं।

कुछ अंगों में लकवा मार सकता है। किसी के हाथ-पैर काम करना बंद कर सकते हैं। किसी को याद रखना चाहिए कि किसी ने इन उपकरणों का उपयोग खो दिया है। जो ठीक नहीं हो सकता उसे सहना चाहिए। इसलिए, जब तक मनुष्य, मास्टर एजेंट, जीवित है, तब तक इन अंगों का महत्व गौण है। किसी की सच्चाई, इसलिए वास्तविकता उनमें नहीं है, न पीठ, पेट या सिर में। उस मामले के लिए, भले ही किसी के शरीर के सभी अंग, उसके शरीर ने काम करना बंद कर दिया हो, अपने सेवक होने से रोक दिया हो और किसी के नियंत्रण में न रहें, फिर भी किसी की अमरता संभव है, क्योंकि पशु आत्मा मानव आत्मा के समान नहीं है। तथापि, इसके दो पहलू हैं जिन पर पुन जोर दिए जाने की आवश्यकता है:

एक. एक प्रकार के अस्तित्व में [जिसे जीवन कहा जाता है], शरीर की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। भूख, प्यास, नींद आदि ऐसी घटनाएं हैं जो भौतिक रूप के बिना नहीं होती हैं या कार्य नहीं करती हैं, लेकिन मनुष्य के मरने पर मर जाती हैं।

दो. दूसरे अस्तित्व में [केवल 'मानव आत्मा' या "*रुह इंसानी*" के साथ], शरीर का कोई अस्तित्व नहीं है। यह अस्तित्व दिव्य सौंदर्य ("*जमाल इलाही*") की खोज के भगवान के ज्ञान ("*मारिफा*") का भव्य प्रिक्स है, उनकी शानदार भव्यता और महिमा उत्कृष्टता; सुंदर, विस्मयकारी और इतना रमणीय मनोरम, कि आनंद अपने सर्वोच्च परमानंद में स्तब्ध खड़ा है। ये अनन्त आशीषें हैं ("*बकियात उस-सलीहात*") जिनका उल्लेख परमेश्वर पवित्र पुस्तक (कुरान) में करता है। ये 'धन्य के शाश्वत आशीर्वाद, अनुसमर्थित भले' ईश्वर का अद्वितीय पुरस्कार हैं, जिसके लिए मानव आत्मा को हमेशा संतुष्ट रहना चाहिए। भगवान के अभिजात वर्ग, चुने हुए लोगों के पास यह गुण उनके स्वयं ("*नफ्स*") में सबसे आगे होता है जो स्वचालित रूप से उन्हें एक निरंतर आरोही उच्च आसन पर उठाता है। इसके विपरीत, उपेक्षा, अज्ञानता और मूर्खता इसका दूसरा पक्ष है जो कलंकित होने और आत्मा के अंधेपन के समान है:

وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِۦٓ أَعۡمَىٰ فَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ أَعۡمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلٗا ٧٢

"और जो कोई इस [संसार] में अंधा है, वह परलोक में अंधा होगा और [सत्य के] मार्ग से और भटक जाएगा। (कुरान, अध्याय 17, श्लोक 72)

जब तक आप मनुष्य में इन दो प्रकार की आत्माओं के बीच अंतर नहीं करते हैं, तब तक आप मृत्यु को नहीं समझ पाएंगे।

पशु आत्मा भौतिक पाठ्यक्रम के क्रम में है, कच्चा मुख्य रूप से वाष्पशील आनुवंशिकी से संबंधित है, जैसा कि पहले वर्णित है। पित्त, फाइब्रोसिस और अन्य मलमूत्र मिलकर इसका यौगिक बनाते हैं। उनके

मूल तत्व पानी, अग्नि, धूल और हवा हैं। इसलिए उनकी परस्पर क्रिया द्वारा चिह्नित परिणामी एकरूपता या भिन्नता को प्रासंगिक गर्मी, ठंड, नमी और सूखापन के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। चिकित्सा ज्ञान या उसका चिकित्सक - डॉक्टर - परिणामस्वरूप अपने महत्व के लिए पूरी तरह से जीवित रहता है।

हालांकि, वे यह नहीं जानते हैं कि अपने रोगियों के शरीर का इलाज करते समय, वे अनजाने में शरीर के भौतिक ढांचे को 'मानव आत्मा' द्वारा सवारी करने के लिए उपयुक्त बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जो मनुष्य की वास्तविक आत्मा है। प्रकृति में एंजेलिक, "*नफ्स अल-मुतमैना*" या मनुष्य की परिष्कृत आत्मा जो आंतरिक शांति और पूर्ण संतुष्टि के स्तर तक पहुंच गई है, में भव्य विशेषताएं हैं। मनुष्य की जीवन यात्रा किसी की अपनी इच्छा से नहीं होती है। किसी को ऐसा करने के लिए नियुक्त किया जाता है, ताकि वह इस खतरों के मार्ग के बारे में अपनी वास्तविक योग्यता दिखा सके और इसे उड़ते हुए रंगों के साथ लक्ष्य पोस्ट तक पहुंचा सके और कड़ी मेहनत और क्लेशों का प्रतिफल प्राप्त करे, जिसका सामना [सांसारिक जीवन के] इस कठिन मार्ग में वीरतापूर्वक किया गया था। भगवान कहते हैं:

قُلْنَا ٱهْبِطُوا۟ مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّى هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

"हमने कहा: 'तुम सब यहाँ से नीचे उतरो [अर्थात्, परमेश्वर की उपस्थिति में स्वर्ग से; यह आदम और हव्वा को एक साथ संबोधित किया गया था; मेरे मार्ग का अनुसरण करने वाले के पास मेरे मार्गदर्शन के लिए तुम्हारे पास आएगा, फिर जो कोई मेरे मार्गदर्शन का पालन करेगा, उस पर कोई भय नहीं होगा, और न ही वे शोक करेंगे। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 28)

दयालु परमेश्वर ने यह भी जोड़ा है:

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى خَٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿٧١﴾
فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَٰجِدِينَ ﴿٧٢﴾

"भगवान ने स्वर्गदूतों से कहा, 'मैं मिट्टी से इंसान बनाने जा रहा हूं, इसलिए जब मैंने इंसान को बनाया है और मेरे द्वारा बनाई गई एक आत्मा में सांस ली है ...'" (कुरान, अध्याय 38, आयत 71-72)

इस आयत में, इन दो आत्माओं ("रूह") के बीच के अंतर का सूक्ष्म संदर्भ है। एक को धूल के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है और प्रकृति में इसके संयम का अर्थ प्रदान करने के लिए शब्द का उपयोग किया गया है, जबकि "*नफख्रू फेहे मिन रूही*" या "मैंने एक में सांस ली मेरी आत्मा" 'अपने स्वयं के स्व' के लिए एक नाजुक संकेतक है। यह रूई की मशाल बनाकर उसमें आग लगाने जैसा है, जिससे रोग के कीटाणुओं को खत्म किया जा सके।

यह याद रखा जा सकता है कि प्रमुख कारक "मनुष्य के लिए ईश्वरीय कानून और आचार संहिता" है जो किसी के मार्गदर्शक, मॉडरेटर और मॉनिटर के रूप में कार्य करता है। अंतिम विश्लेषण में, हम फिर से उसी चीज़ पर आते हैं, अर्थात्, मनुष्य के अस्तित्व का सार, ईश्वर के "*मारिफा*" या सूक्ति को प्राप्त करने के लिए स्वयं के बोध में होना। अपने आप को कैसे समझें और पहचानें, यह इस बात की कुंजी है कि ईश्वर के "मारिफा" या सूक्ति को कैसे प्राप्त किया जाए। उसी तरह इन आत्माओं के बारे में सच्चाई को समझना ही परलोक का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना है।

विश्वास की मूल नींव ("दीन" या ईश्वर का मार्ग), अन्य पूर्व-आवश्यकताओं के बीच, ईश्वर और उसके द्वारा निर्धारित 'न्याय के दिन' में स्पष्ट विश्वास में निहित है। इसमें अपने एकांत में एक गुप्त समझौता है जहां हमें छूने की अनुमति नहीं है। न ही इसे आसानी से समझा या समझा जा सकता है क्योंकि इसकी गहरी गहराई में, "*मारिफा तुल हक*" और "*अखिराह*" छिपा हुआ है, यानी, सर्वोच्च भगवान की सच्चाई और उसके बाद के वादे की। तो, आप इसके ज्ञान और समझ को प्राप्त करने के प्रयास में पूरी तरह से प्रवेश कर सकते हैं और अपनी बुद्धि को समाप्त कर सकते हैं। इसका शोध इतना भयानक, इतना अलौकिक, इतना जटिल है कि यह इस हद तक अथाह है कि जिन लोगों ने इसके बारे में कम से कम सुना है, वे विस्मय में फंस गए, स्तब्ध रह गए और इसके अल्फ़ाज़ और ओमेगा को भी स्वीकार करने से इनकार कर दिया और कहा कि यह असंभव है, विचार की अपवित्रता पर आधारित है और व्यर्थता में पूरी तरह से अयोग्य अभ्यास पर आधारित है। न तो भविष्यद्वाणी की परंपराएं और न ही पवित्र कुरान इस मुद्दे पर [स्पष्ट रूप से] आधारित है। फिर तुम ऐसा करने का साहस कैसे कर पाओगे? यही कारण है कि लोग इसे सुन नहीं सकते। इसलिए भविष्यवक्ताओं ने कहा है:

كلموا الناس على قدر عقولهم

"लोगों से उनकी बुद्धि [और मानसिक क्षमताओं] के स्तर के अनुसार बात करें।

यही कारण है कि कुछ भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर के द्वारा अवगत कराया गया था, कि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उन विशेषताओं को न छुएं जिन्हें लोग समझने में सक्षम नहीं होंगे क्योंकि जब वे उन्हें समझने में सक्षम नहीं होंगे, तो वे उन पर विश्वास करने से इनकार कर देंगे जो उनके लिए हानिकारक होंगे।

मनुष्य की वास्तविक आत्मा ('मानव आत्मा') के बारे में सच्चाई का विस्तार से वर्णन किया गया है। 'पशु आत्मा' तब मर जाती है जब मनुष्य के शरीर के अंग निष्क्रिय और बेजान हो जाते हैं। 'मानव आत्मा' [जीवन या मृत्यु] की परवाह किए बिना प्रकट रहती है। इसलिए, मनुष्य का पुनरुत्थान, न्याय का दिन, पुनरुत्थान शब्दों का व्युत्पत्ति में अर्थ यह नहीं है कि 'शून्यता' के बाद, मनुष्य को फिर से अस्तित्व में लाया जाएगा। बल्कि, इसका मतलब है कि किसी को रूप, एक नया शरीर दिया जाएगा, जिस तरह से यह पहले किया गया था और फिर उसे फिर से अपेक्षित विशेषताओं और गुणों के साथ नवीनीकृत किया जाएगा। यह बहुत आसान होगा [भगवान के लिए पहली सृष्टि की तुलना में जिसमें शरीर और आत्मा दोनों बनाए गए थे]।

उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि अच्छे कर्मों से आत्मा की पवित्रता और भव्यता होती है। ऐसे गैर-अनुरूपतावादियों को स्वीकार करने में विफल क्यों होना चाहिए, यह किसी की समझ से परे है। इसलिए, किसी को तार्किक रूप से सीखना चाहिए कि संत (ज्ञानवादी), ईश्वर के अभिजात वर्ग, खुद को इस दुनिया के माध्यम से यात्रा में मानते हैं। ऐसा व्यक्ति, इस मार्ग पर यात्रा करते हुए, अपने लाभ के लिए माल का व्यापार और इकट्ठा करता है और नुकसान को रोकने के लिए गैर-लाभकारी सामग्री इकट्ठा करता है, वास्तव में अपने अंतिम गंतव्य, अर्थात्, परलोक के रास्ते में किसी के द्वारा किए गए अच्छे सौदेबाजी को ले जा रहा है। एक जानता है:

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ رَٰجِعُونَ

"हम परमेश्वर के हैं और उसी के लिए हमारी अंतिम वापसी (गंतव्य और घर वापसी) है। (कुरान, अध्याय 2, श्लोक 156)

इसलिए, व्यक्ति हर समय पारगमन में रहने की स्थिति के प्रति पूरी तरह से जीवित रहता है। किसी का वास्तविक देश यह दुनिया नहीं है। इस प्रकार, कोई व्यक्ति इस मार्ग पर आगे बढ़ता है और विभिन्न पड़ाव बिंदुओं (स्टॉप) और मील के पत्थर पर अपने प्रवास में अंतिम माल एकत्र करता है, यह पूरी तरह से जानते हुए कि जब कोई अपने लक्ष्य तक पहुंचता है, तो उसे अपने स्थायी निवास के देश में, परलोक में, एक के लिए उचित मूल्य मिलेगा।

आत्मा की यात्रा में चार अलग-अलग स्टेशन या मील के पत्थर हैं। आत्मा मनुष्य की वास्तविकता है जबकि शरीर नहीं है। आत्मा का एक विश्राम स्थल भी है - जिस स्थान से इसकी उत्पत्ति हुई है वह उसका वास्तविक घर या देश है और यह अपनी यात्रा में इस दुनिया में आया है और अपने मूल में वापस लौटने से पहले इसके कई मील के पत्थर हैं। आत्मा की यात्रा में हर मील का पत्थर, अपने आप में एक दुनिया है अगर कुछ दार्शनिक चिंतन के साथ देखा जाए। वे इस प्रकार हैं:

1. पहला मील का पत्थर "*आलम महसुसात*" या "भावना और संवेदनाओं का क्षेत्र" है।
2. दूसरा मील का पत्थर "आलम *तखैयुलत*" या "अवधारणा के दायरे [विचारों और विचारों का] है"।
3. तीसरा मील का पत्थर "आलम *मौहुमात*" या "अविवेकी लोगों के विवेक का क्षेत्र" है।
4. चौथा मील का पत्थर "आलम *मक़ुलात*" या "अच्छी व्यवस्था, उपलब्धि और आत्म-जागरूकता के क्षेत्र" का है। यह इस मील के पत्थर में है कि व्यक्ति को स्वयं या अपनी वास्तविकता और सत्य के बारे में जागरूकता मिलती है।

आइए निम्नलिखित उदाहरण से उनकी स्थिति को समझने का प्रयास करें:

एक. जब तक कोई "आलम *महसुसात*" या "भावना और संवेदनाओं के क्षेत्र" में रहता है या रहता है, तब तक वह एक पतंगे की तरह होता है जो जलती हुई लौ के चारों ओर घूमता रहता है और सहज रूप से मंडराता रहता है। पतंगे के पास आंखें हैं लेकिन सोचने और याद रखने की बुद्धि नहीं है। जलती हुई लौ के लिए पतंगे का आकर्षण अंधेरे से बचने और प्रकाश के प्यार से भड़कने के लिए इसकी आंतरिक विशेषता के लिए लौकिक है। चूंकि यह संतुलित विचार और सुरक्षा की शक्ति के साथ नहीं है, रोशनी में बाहर निकलने की तलाश में, यह गलती से जलती हुई लौ को उस उद्घाटन के रूप में मानता है, जिसके परिणामस्वरूप यह अंततः गरमागरम लौ पर गिरता है और मर जाता है। यदि कीट तर्क करने की क्षमता से संपन्न होता, तो वह अपने पंखों पर महसूस होने वाली पहली गर्म चमक के बाद लौ के पास नहीं जाता। यह कमी [बुद्धि की] कीट को किसी भी गणना की स्थिति तक नहीं पहुंचाता है। उदाहरण के लिए, इसके विपरीत, अन्य जानवर चोट लगने पर किसी चीज़ से दूर भागने की कोशिश करते हैं। छड़ी को देखते ही वे खतरे से भाग जाते हैं।

दो. "आलम तखैयुलत" *या "गर्भाधान के क्षेत्र [विचारों और विचारों का]" के दूसरे चरण में, मनुष्य मवेशियों और कमजोर दिमाग वाले जानवरों के दायरे में रहता है।*

तीन. तीसरा क्षेत्र उपरोक्त "आलम *मौहुमात*" या "अविवेकी लोगों के विवेक के क्षेत्र" का है। इस स्तर पर, मनुष्य बकरी और घोड़े के बराबर आता है, इसलिए कहने के लिए, अर्थात्, दूसरे चरण के कमजोर दिमाग वाले जानवरों के विपरीत, इस स्तर पर, व्यक्ति अपने शत्रुओं को पहचानता है

और प्राकृतिक आवेगों द्वारा खतरे को टालने की कोशिश करता है, अर्थात्, अपने जीवन के लिए भागने का प्रयास, जिस क्षण कोई भेड़िये या शेर पर अपनी नज़र डालता है, हालांकि किसी ने उन्हें पहले नहीं देखा होगा। एक में कुछ एक शक्तिशाली बैल, ऊंट या जिराफ से डरने के लिए नहीं कहता है, हालांकि, वे उनसे आकार में बड़े हैं। यह वृत्ति स्वाभाविक रूप से [और आंतरिक रूप से] परमेश्वर द्वारा उसमें निहित है। फिर भी ये जानवर इतने बुद्धिमान नहीं हैं, अर्थात, उस स्तर पर जहां उन्हें चौथे चरण में आने वाले स्वयं की देखभाल करने के लिए सक्षम माना जा सकता है।

चार. चौथा चरण "आलम *मकुलात*" या "अच्छी व्यवस्था, उपलब्धि और आत्म-जागरूकता के क्षेत्र" का है जैसा कि पहले कहा गया है। तीसरे चरण तक मनुष्य अस्पष्टता के क्षेत्र में रहता है। यह वास्तव में यहीं से है कि मनुष्य मनुष्य होने की स्थिति में प्रवेश करता है, अर्थात, मनुष्य की महिमा के दायरे में। इस चरण में ऐसी चीजें देखी जाती हैं जहां अनुमान और अंधविश्वास पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं।

"*आलम महसुसात*" या "भावना और संवेदनाओं के क्षेत्र" में, मनुष्य आने वाली चीजों से बचते हुए अपने सही परिप्रेक्ष्य में चीजों का आकलन और मूल्यांकन करना शुरू कर देता है। यहां, कोई चीजों को वैसे ही सारांशित करता है जैसे कोई उन्हें देखता है। चीजों की एक इकाई होती है, एक पहचान होती है। कोई उन्हें सही ढंग से वर्गीकृत करने का प्रयास करता है और आम तौर पर ऐसा करने में सफल होता है। स्वाभाविक रूप से, "*महसुसात*" या "इंद्रियों और संवेदनाओं के क्षेत्र" की दुनिया में, मनुष्य की एकाग्रता ऐसी भावनाओं पर आधारित होती है जो पृथ्वी पर चलने जैसी किसी की समझदार संवेदनाओं द्वारा एक व्यक्ति तक पहुंचाई जाती हैं। लेकिन अंतिम, चौथे चरण में, इसका तात्पर्य पानी पर चलने की तरह उससे कहीं अधिक करने में सक्षम होने की क्षमता से भी है। यह मनुष्य के उत्थान का चरण है, "आलम *म'कुलत*" या "अच्छी व्यवस्था, उपलब्धि और आत्म-जागरूकता का क्षेत्र"। यहां स्पष्ट तुलना में, एक घूमना एक अलग प्रकृति के तथ्यों की सत्यता पर आधारित हो सकता है, जिसे किसी की आत्मा द्वारा स्वीकार किया जाता है और इस तरह पानी पर चलने में सक्षम होने का लाभ उठाया जा सकता है। यह भविष्यवक्ताओं और ईश्वर के "वालि" या अंतरंग मित्रों या संतों की प्रमुख स्थिति है, जैसे हवा में चलना। लोगों ने पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा, क्या यीशु (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) या यीशु मसीह पानी पर पानी डाल सकते हैं? उसने उत्तर दिया:

وَلَوْ اِزْدَادَ يَقِيْنًا لَمَشٰى فِى الْهَوَاءِ

"अगर उनका दृढ़ विश्वास होता, तो वह हवा में चले जाते।

इससे पता चलता है कि ऐसी चीजें "आलम *इद्रक*" या "कल्पनीय या संभव के क्षेत्र" में हैं। इस प्रकार, मनुष्य के कई चरण हैं जो प्रतिष्ठा के पहले पायदान से लेकर अंतिम पायदान तक कद की सीढ़ी पर चढ़ते हैं और स्वर्गदूतों के लक्षण प्राप्त करते हैं जो मनुष्य को अपने "मेराज" या उपलब्धि और महिमा के शिखर पर ले जाते हैं। इस चढ़ाई में "*अस्फालस सफीलीन*" (निम्नतम में से निम्नतम) के सबसे निचले स्तर से लेकर "*आला इलियीन*" (उच्च में से उच्चतम) के चरम तक कई खतरे हैं जैसा कि पवित्र कुरान में कहा गया है:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا ٱلْإِنسَٰنُ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

"हम ने आकाश और पृथ्वी और पहाड़ों पर भरोसा चढ़ाया, परन्तु उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए; मनुष्य ने इसे ढोया जो निश्चित रूप से अन्यायी और अज्ञानी था। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)

मनुष्य के उत्थान में जानवरों और पत्थरों की निम्नतम स्थिति से लेकर स्वर्गदूतों के आसन तक विभिन्न चरण हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि "जमादात" में पृथ्वी पर जो कुछ भी है उसमें कोई खतरा नहीं है या पत्थर, वृद्धि और वनस्पति है। वे नहीं जानते। इसके विपरीत, "*आला इलियीन*" या उच्च के उच्चतम अपनी महिमा की ऊंचाई पर तैनात हैं। उनके लिए वहां से उतरना संभव नहीं है, जैसा कि पवित्र कुरान में लिखा है:

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ

"हम में से हर एक का वहां एक ज्ञात स्टेशन है। (कुरान, अध्याय 37, आयत 164)

जानवर "Asfalus Safileen" *में से हैं*, जो सबसे कम है। इसलिए, उनके लिए कोई प्रगति नहीं है। हालाँकि, [आध्यात्मिक सीढ़ी की] मध्य पायदान पर मनुष्य खतरे में है। कोई भी जानवरों की गहराई तक, सबसे निचले स्तर तक [उनके जैसा बनने के लिए] डूब सकता है। कोई भी स्वर्गदूतों के स्तर ("मलाइका") की ऊंचाइयों तक ऊंची उड़ान भर सकता है। इसलिए "*अशरफुल मखलूकत*" या सभी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ होने की ऐसी गंभीर जिम्मेदारी उठाने की क्षमता, पराक्रम [मनुष्य का] [सच्चे] सार का मामला है। इसका तात्पर्य यह है कि केवल मनुष्य ही इस चुनौती को स्वीकार कर सकता है, जो किसी के भव्य कद में "*अशरफुल मखलूकत*" या सभी रचनाओं में सबसे अच्छा है।

इसलिए, इस ग्रंथ का अर्थ और उद्देश्य चीजों में गहराई से देखना है, न केवल सतही रूप से देखने के लिए कि वे सतही रूप से क्या दिखाई देते हैं, बल्कि यह पता लगाने के लिए कि वे वास्तव में क्या हैं। जीवन के माध्यम से मनुष्य की यात्रा के उद्देश्य के बारे में यह प्रवचन उन लोगों के लिए विचार के लिए भोजन के रूप में है जो ज्ञान के शब्दों को उठाना चाहते हैं और अपने आंतरिक मूल्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। इस प्रकृति के बहुत से कार्य नहीं हैं और न ही बहुत से लोग हैं जो इसे समझना चाहते हैं या समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसलिए, विषय पर वर्तमान संवाद पर्याप्त होना चाहिए।

बहुत से लोग हैं जो न तो बुद्धिमान हैं और न ही वे ईश्वरीय कानून का पालन करते हैं। ऐसे लोग हैं जो खुद को "*अखिराह*" या परलोक की स्थिति के बारे में उदास पाते हैं। बल्कि उन्हें इस पर संदेह है। दरअसल, जब सांसारिक इच्छाएं उनसे बेहतर हो जाती हैं, तो परलोक का खंडन करना उन्हें उपयुक्त होता है। वे ऐसा करते हैं और अपना बचाव करने के बहाने बनाते हैं। शैतान अपने बुरे कर्मों से, अपने सभी आकर्षण और सहायता के साथ उन पर देखरेख करता है और उन्हें यह सोचने के लिए उकसाता है कि न्याय के दिन की सजा लोगों को डराने के लिए बनाई गई एक काल्पनिक मतिभ्रम है। जहां तक धर्मी लोगों के लिए स्वर्ग के वादे का संबंध है, वे इसे केवल करिश्माई दिखावे के रूप में भी ब्रांड करते हैं, मानसिक धूमधाम की एक कल्पना मनुष्य को शुष्क, नीरस जीवन की कठिनाइयों में डालने के लिए विकसित हुई है और कुछ नहीं। इसलिए, वे ईश्वरीय कानून के अनुयायियों को हेय दृष्टि से देखते हैं।

कुछ लोग लत्ता (विनम्र सूफियों की पोशाक) पहने हुए इस तरह के सभी विचारों से ऊपर होने का दिखावा करते हैं। इस तरह के दिखावे से उन्हें कम से कम मदद नहीं मिलती है। न ही उनके पास योग्यता का कोई पद है। वास्तव में, ऐसे धोखेबाज खुद को उतना ही नुकसान पहुंचाते हैं जितना कि अन्य साधारण लोगों को जो उनके द्वारा धोखा दिए जाते हैं और उन्हें कुछ आध्यात्मिक स्थिति के लोग मानते हैं, जिन्हें वे समझ नहीं सकते हैं। वास्तव में, उनके पास उनका समर्थन करने के लिए कोई तर्क या तर्क नहीं है। ऐसे लोगों में कोई वास्तविक छिपा हुआ मूल्य कैसे हो सकता है? उनकी आस्तीन में कुछ भी नहीं है। इन परिस्थितियों में, उन्हें स्पष्ट शब्दों में बताया जाना चाहिए कि यदि एक लाख चौबीस हजार पैगंबर, उस समय के सभी ऋषि, सभी विद्वान विद्वान ("*उलेमा*") और संत (ईश्वर के मित्र और अंतरंग या "*अवलिया*") सभी गलत थे और केवल वे ही सही हैं, तो उनकी अज्ञानता और अहंकार के प्रकाश में इस विषय में जोड़ने के लिए और कुछ नहीं है।

कोई कह सकता है कि शायद आप ही गलत हैं। इसलिए तुम परलोक और परमेश्वर के दंड के बारे में सच्चाई को नहीं समझ सके ("'*अधाब*"), आत्मा की यातना, हमारी संवेदी धारणाओं के प्रभुत्व के कारण "आत्मा" का बहुत ही नियम, जो पांच इंद्रियों द्वारा अनुभव नहीं किया जाता है, उसे स्वीकार करना कि ऐसी कमजोर जमीन पर गलत नहीं है। इस तरह के दंभ वाले व्यक्ति को तुरंत निदान किया जाना चाहिए कि वह अपने सही तत्वों में बिल्कुल भी नहीं है, खासकर जब कोई कहता है, "जैसे मैं जानता हूं कि दो एक से अधिक हैं, मुझे बताने की आवश्यकता नहीं है, मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि 'आत्मा' जैसी कोई चीज नहीं है। इसका कोई स्थायित्व नहीं है, और शारीरिक आनंद या दर्द को किसी भी परिस्थिति में आत्मा के सुख या दर्द के साथ नहीं माना जा सकता है। यह ऐसे लोग हैं जिनके बारे में परमेश्वर ने कहा है:

وَإِن تَدْعُهُمْ إِلَى ٱلْهُدَىٰ فَلَن يَهْتَدُوٓا۟ إِذًا أَبَدًا

"इसलिए, यदि आप उन्हें मार्गदर्शन के लिए बुलाते हैं, तो भी उन्हें कभी निर्देशित नहीं किया जाएगा। (कुरान, अध्याय 18, श्लोक 57)

मान लीजिए कि कोई इस तर्क को आगे बढ़ाता है, "मुझे अपना शेष जीवन धर्मपरायणता के घाट में क्यों बिताना चाहिए और अनावश्यक रूप से खुद को उन खुशियों से रोकना चाहिए जो दुनिया मुझे पेश करती है, जब मेरे पास इस बात का कोई सुराग नहीं है कि आप मुझे आत्मा की सत्यता के बारे में क्या बताने की कोशिश कर रहे हैं और परलोक क्योंकि वे मुझे दूर की कौड़ी लगते हैं? किसी भी मामले में, मुझे इन मामलों की जानकारी नहीं है। ऐसे मामले में, उत्तर यह है कि, "अब जब आपने इतना स्वीकार कर लिया है, तो आप ईश्वरीय नियम और मार्गदर्शन का पालन क्यों नहीं करते? यह तर्क पर आधारित है कि जब आपको किसी चीज के बारे में पता नहीं होता है, तो आपको कोई जोखिम नहीं लेना चाहिए। मान लीजिए कि आप एक प्लेट से खाने के लिए अपना हाथ बढ़ाते हैं और आपको बताया जाता है कि एक सांप ने अभी-अभी अपना मुंह उसमें डाला है, तो आप तुरंत भोजन से हट जाएंगे। यह कथन गलत हो सकता है, फिर भी, आपके अंदर की समझदारी आपको कभी भी भोजन में भाग नहीं लेगी, चाहे वह कितना भी स्वादिष्ट क्यों न हो। इसी तरह, मान लीजिए कि आप बीमार हैं और अपने जीवन के डर में हैं और जो व्यक्ति उपचार के आकर्षण लिखता है, वह आपसे एक को थोड़ी मात्रा में चांदी देने के लिए कहता है, ताकि कोई आपके लिए ताबीज तैयार करने में सक्षम हो सके, आप अपनी आशंकाओं के बावजूद इस मांग को स्वीकार करेंगे। इसके अलावा, यदि कोई दिव्यदर्शी आपको बताता है कि जब चंद्रमा अमुक अवस्था में पहुंच जाता है तो आपको अपने इलाज के लिए कुछ कड़वी दवा लेनी चाहिए। इसकी कल्पना

के बावजूद, आप अपने स्वास्थ्य के लिए किसी की सलाह का पालन करेंगे, इस आधार पर भी कि कोई सही हो सकता है।

तो एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर, कई ऋषि, विद्वान विद्वान ("*उलेमा*"), और संत या ईश्वर के अंतरंग ("*अवलिया*") *गलत* और सुनी-सुनाई बातें कैसे हो सकते हैं, जबकि एक नीम हकीम या ज्योतिषी सही हो सकता है? इससे मनुष्य को अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। यह संभावना है कि कोई इस आधार पर ऐसा करने के लिए प्रेरित हो सकता है कि यदि ये लोग सही हैं तो मैं परलोक को क्यों नकारूं, हो सकता है कि उनकी बात न सुनने और सांसारिक सुखों में आँख बंद करके लिप्त होने से, मैं अगली दुनिया में अपरिवर्तनीय रूप से परेशान हो सकता हूं। तो मुझे अब [अपनी अस्थिर स्थिति से दूर क्यों नहीं जाना चाहिए जो कायम नहीं रह सकती]?

काल्पनिक रूप से, यदि पूरी दुनिया को राई-मकई से भर दिया जाए और एक गौरैया को हर एक हजार साल में एक राई मकई लेने का काम सौंपा जाए, तो भी यह एक विवादास्पद बिंदु है कि राई-मकई अनंत काल तक पूरा होगा। तो यहां से न्याय के दिन तक परलोक की सजा का जोखिम क्यों उठाया जाए, यह सोचना चाहिए। लोग नावों और जहाजों में यात्रा करते हैं और अपने निर्वाह के लिए अपना माल बेचने के लिए कठिनाइयों का सामना करते हैं। मनुष्य को ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए? धर्मपरायणता, धैर्य और दृढ़ता स्ट्राइवर को अच्छे लाभांश का भुगतान करती है।

अली (ईश्वर की कृपा उन पर बनी रहे) (पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के एक महान साथी और चचेरे भाई ने एक धार्मिक बहस में एक नास्तिक से कहा, "यदि आप जो कह रहे हैं वह सही है तो आप बच जाएंगे और हम बच जाएंगे लेकिन अगर हम जो कह रहे हैं वह सही है [और आप जो कह रहे हैं वह गलत है] तो केवल हम बच जाएंगे और आपको शाश्वत ईश्वरीय प्रतिशोध का सामना करना पड़ेगा। अली (भगवान की कृपा उन पर हो) एक ऋषि थे। वह तर्क को अधिक शक्तिशाली रूप से आगे नहीं बढ़ा सकता था। उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं कहा क्योंकि उन्हें जो कह रहे थे उसमें कोई संदेह था, बल्कि उन्होंने नास्तिक की मानसिकता को देखते हुए अपने बयान के परिसर को इतनी मजबूती से तैयार किया था।

इसलिए, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि एक व्यक्ति जो अपने परलोक की कीमत पर सांसारिक मामलों में अपना समय बेकार (बर्बाद) करता है ("*अखिराह*"), इसके बाद कोई खतरे में है। यहां दिए गए मजबूत तर्कों की ताकत और दिए गए उदाहरणों के आलोक में, असंतुष्ट के लिए कोई जोखिम नहीं लेना और टेरा फ़िरमा (ठोस जमीन) पर रहना उचित है।

وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ

"और शांति उस पर हो जो मार्गदर्शन का पालन करता है।

हमने ईश्वर, स्वयं ("*नफ्स*"), *इस दुनिया और परलोक के ज्ञान (*"मारिफा") *पर प्रवचन को सारांशित किया है*। ईश्वर की इच्छा से अब हम अनन्त *खुशी और अनन्त सफलता के लिए* चालीस आवश्यक तत्वों ("अराकान" या कदम) की व्याख्या करेंगे।

इस तरह इमाम ग़ज़ाली ने अपनी महान पुस्तक "किमिया-ए-सादत" या "शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन की कीमिया या परिवर्तनकारी *एजेंट" में शाश्वत आनंद और चिरस्थायी सफलता के परिवर्तनकारी एजेंट की चार उपाधियों (या आवश्यकताओं) की अपनी अद्भुत व्याख्या को समाप्त किया*। फिर उन्होंने शाश्वत आनंद और चिरस्थायी सफलता के चालीस सिद्धांतों का निम्नलिखित परिचय प्रदान किया [6]:

हम पहले ही निम्नलिखित पर कुछ विस्तार से चर्चा कर चुके हैं:

- एक. भगवान का *ज्ञान ("मारिफा*"),
- दो. स्वयं को जानना ("*नफ्स*"),
- तीन. दुनिया की वास्तविकता को जानना ("*दुनिया*"), और
- चार. परलोक ("अखिराह*"*) की वास्तविकता को जानना।

परमेश्वर की स्वीकृति और उसकी आशीषें प्राप्त करने का रहस्य, उसकी आराधना करने में और उसकी आज्ञाकारिता में निहित है। परिणामस्वरूप मनुष्य को निम्नलिखित कार्य करने में सावधानी बरतनी चाहिए:

अ. व्यक्ति को न केवल परमेश्वर का सबसे विनम्र और आज्ञाकारी सेवक होना चाहिए और उसकी आराधना करनी चाहिए, बल्कि उसके पास एक अच्छे इंसान का असर, व्यक्तित्व, अच्छा आचरण भी होना चाहिए। किसी का सामान्य आचरण इस प्रकार दूसरों के लिए आकर्षक हो जाएगा [जो सभी ईश्वर के साथी सेवक हैं, चाहे उनकी जाति, धर्म, रंग, या ऐसा कुछ भी हो], अपने स्वयं के अलावा।

आ. यह बात है कि कोई व्यक्ति कैसा दिखता है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। समाज में भी इस तरह से व्यवहार करना चाहिए कि उसका आचरण ईश्वरीय नियम और मार्गदर्शन की सीमा में बना रहे। तब किसी को इस तरह पहचाना जाएगा।

इ. उपरोक्त व्यक्ति के बाहरी आचरण का गठन करता है जिसे अन्य लोग देखते हैं। अब हम उसकी आत्मा [या आंतरिक वास्तविकता] पर आते हैं। इस प्रकार, यह मनुष्य पर निर्भर है कि वह अपने हृदय को बुराई और उसकी तबाही से बचाए [कि यह किसी के आंतरिक अस्तित्व पर उसके बाहरी अस्तित्व के लिए अशुभ परिणामों के साथ तबाही मचाता है]।

ई. व्यक्ति को न केवल उपर्युक्त "क्या न करें" का ध्यान रखना चाहिए, बल्कि इसके "क्या करें" का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए, अर्थात, अपने हृदय, अपनी आत्मा को बुराई से बचाने के बाद, व्यक्ति को एक ही समय में आत्मा को अच्छे सद्गुण और महान आंतरिक गुणों से सजाना और अलंकृत करना चाहिए।

इस प्रकार, आत्मा में जो बुरा और हानिकारक है उसे न जाने देने के "क्या न करें" का पालन करके और उन सभी चीजों को करने के "क्या करें" का पीछा करके जो अच्छे और शुद्ध हैं और आत्मा के सुंदर आंतरिक गुणों को विकसित करते हैं, व्यक्ति अपनी आत्मा को भोजन के साथ खिला रहा होगा जो इसकी भलाई के लिए अनुकूल है। इस प्रकार, व्यक्ति "*मुहलिकत*" या आंतरिक बुराई के घातक प्रभावों से बच जाएगा और आत्मा के "*मुंजियत*" या आंतरिक [उदात्त] गुणों द्वारा मजबूत किया जाएगा जो इसे शुद्ध,

सुशोभित और सुशोभित करते हैं, जिस पर किसी की आत्मा को गर्व होगा। ये चार आवश्यक तत्व [परिवर्तन की कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट जो अनन्त खुशी और अनन्त सफलता लाते हैं] प्रत्येक को दस भागों में विभाजित किया गया है और वे इस प्रकार हैं ...

इस बिंदु पर, ग़ज़ाली शाश्वत आनंद और अनन्त सफलता के चालीस सिद्धांतों (या कदमों) की व्याख्या शुरू करती है। इन सिद्धांतों को लंबाई के कारण यहां पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है और पाठकों को इस ग्रंथ के संदर्भ खंड में प्रदान की गई इस महान पुस्तक का अनुवाद प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

आंतरिक आध्यात्मिक परिवर्तन - जीवन के उद्देश्य को खोजने और उस तक पहुंचने की कुंजी

जीवन का उद्देश्य, जिसकी प्राप्ति सीधे शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता से जुड़ी हुई है, गज़ाली द्वारा व्याख्या की गई है, उनकी अंतिम पुस्तक "*मिन्हाज अल-आबिदीन इला जन्नतु रब अल-आलमीन*" या "ईश्वर के उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान के स्वर्ग की ओर ले जाने वाला उनका सबसे अच्छा मार्ग" या लघु शीर्षक "उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग"। यह छोटी पुस्तक आध्यात्मिक रोशनी और ईश्वर के "मारिफा" *(या ज्ञान) तक पहुंचने के लिए सात कदम के मार्ग को परिभाषित करती* है, जिसे उनके द्वारा जीवन के वास्तविक उद्देश्य के रूप में वर्णित किया गया है। इमाम ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग" के परिचय में निम्नलिखित चरणों की रूपरेखा तैयार की है, तर्क दिया है कि मानव जीवन का उद्देश्य ईश्वर की पूजा है जो सूक्ति या "मारिफा" की स्थिति में ईश्वर को जाने बिना संभव नहीं है। इसलिए ईश्वर की ज्ञान-विज्ञान का होना जीवन का वास्तविक उद्देश्य है और इस प्रकार कोई व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को जानने और प्राप्त करने के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है [8]:

सभी प्रशंसा महान परमेश्वर के लिए है जो सबसे दयालु है, जिसने अपनी पूर्ण शक्ति, पृथ्वी और आकाश से बनाया और अपनी अनन्य बुद्धि से ब्रह्मांड के मामलों को ठीक किया। अपनी सृष्टि के बीच से, उन्होंने अपनी आराधना और आज्ञाकारिता के लिए जिन्नों और मनुष्यों का निर्माण किया, जैसा कि उन्होंने कुरान में कहा है:

وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ

"मैंने *जिन्नों* और मानवजाति को केवल अपनी आराधना के लिए बनाया है। (कुरान, अध्याय 51, श्लोक 56)

अब मार्ग उसके सामने बहुत सीधा और प्रकाशित है जो उसकी आराधना और आज्ञाकारिता के मार्ग पर चलना चाहता है। सभी प्रकार के प्रमाण और मार्गदर्शन उन लोगों के लिए स्पष्ट रूप से उपलब्ध हैं जिनके पास एक समझदार दृष्टि है। हालाँकि, यह केवल उच्च परमेश्वर ही है जिसके पास मार्गदर्शन के सीधे मार्ग पर मार्गदर्शन करने या त्रुटि के अंधेरे में धकेलने और जिसे वह चाहता है उसे भटकाने की अनन्य शक्ति है। वह अच्छी तरह से जानता है कि कौन मार्गदर्शन के सीधे मार्ग पर चल रहा है और कौन गलती में है।

ईश्वर के दयालु दूत, मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), सभी पैगंबरों और दूतों के नेता (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो) और उनके परिवार और वंशजों पर, न्याय के दिन तक, ईश्वर की अनगिनत आशीषें और नमस्कार।

गौरवशाली ईश्वर अपनी कृपा से मार्गदर्शन करें, सभी मुसलमानों को उन कार्यों पर जो उनकी स्वीकृति और आनंद को आकर्षित करते हैं। परम पूज्य ईश्वर के प्रति भक्ति और आज्ञाकारिता सभी ज्ञान और शिक्षा के अधिग्रहण का फल और उद्देश्य है। जीवन का महान लाभ और मानव अस्तित्व का मुख्य लक्ष्य, दासता की अभिव्यक्ति और उसके प्रति समर्पण में निहित है। महान ईश्वर के प्रति दासता के इस रवैये में *अवलिया* (ईश्वर और ज्ञानवादियों के मित्र और अंतरंग), शक्तिशाली का मार्ग, गणमान्य व्यक्तियों (यानी, आध्यात्मिक प्राप्तकर्ताओं) का मार्ग, उदार के उद्देश्य, धर्मपरायण का प्रतीक, धर्मी का पेशा, बुद्धिमानों का पसंदीदा, भाग्यशाली लोगों के लिए भाग्य का मार्ग और स्वर्ग की इच्छा रखने वालों के लिए स्वर्ग का मार्ग शामिल है। महिमामय परमेश्वर ने कहा है:

وَ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ

"मैं तुम्हारा रब हूँ, इसलिए केवल मेरी ही आराधना करो" (कुरान)

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا

"[यह उन लोगों से कहा जाएगा जो स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तो ईश्वर की स्वीकृति प्राप्त करेंगे], 'यह उन प्रयासों का प्रतिफल है जो आपने [आपके सांसारिक जीवन में] किए हैं जिन्हें [ईश्वर द्वारा] बहुत प्रशंसा के साथ स्वीकार किया गया है'" (कुरान)

जब मैंने मार्ग को बारीकी से देखा और उस पर अच्छी तरह से विचार किया, तो मैंने पाया कि यह एक बहुत ही कठिन और खतरनाक मार्ग है। यह बहुत चौड़ी और कठिन घाटियों से भरा रास्ता है और बाधाओं और आपदाओं से अवरुद्ध है। राजमार्ग लुटेरे और छिपे हुए दुश्मन (यानी, मनुष्य और शैतान का निचला स्व) घात लगाकर पड़े हुए हैं। कुछ ही दोस्त और मददगार हैं। चूंकि यह स्वर्ग, ईडन गार्डन की ओर जाने वाला रास्ता है, इसलिए यह वास्तव में कठिन और खतरनाक होना चाहिए। यह पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार है:

اَلَا وَاِنَّ الْجَنَّةَ حُفَّتْ بِالْمَكَارِهِ وَاِنَّ النَّارَ حُفَّتْ بِالشَّهَوَاتِ

"स्वर्ग अप्रिय और अवांछनीय चीजों से ढका हुआ है और नरक को इच्छाओं और वासनाओं से ढक दिया गया है।

दूसरे शब्दों में, जो स्वर्ग की इच्छा रखता है, उसे इस जीवन में कई घृणित और अप्रिय परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, और जो नरक चाहता है वह अपनी वासनाओं और इच्छाओं को संतुष्ट करने में लीन होता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आगे कहा है:

اَلا وِاِنَّ الْجَنَّةَ حُفَّتْ بِالْمَكَارِهِ وَاِنَّ النَّارَ حُفَّتْ بِالشَّهَوَاتِ

"खबरदार! स्वर्ग एक ऊंची खड़ी जमीन पर स्थित है और नरक एक चिकनी नीची जमीन पर स्थित है।

इसका मतलब है कि स्वर्ग तक चढ़ना मुश्किल है और नरक में उतरना आसान है। दूसरे शब्दों में, स्वर्ग का रास्ता बहुत कठिन है और नरक का रास्ता बहुत आसान है।

इसके अलावा एक और समस्या यह है कि मनुष्य अपने स्वभाव से बहुत कमजोर है और दुनिया हर तरह की मुश्किलों से भरी हुई है। धार्मिक मामलों पर पूर्णकालिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है और सांसारिक मामलों में अपने सभी व्यस्तता के कारण मनुष्य के पास इन सब के लिए अपर्याप्त खाली समय होता है। जीवन छोटा है और समय की आपदाएँ बहुत गंभीर हैं और मृत्यु निकट है। इस मार्ग पर चलने वाले मनुष्य को यह जानना चाहिए कि यात्रा के लिए प्रावधान अपरिहार्य है जो और कुछ नहीं बल्कि आराधना और आज्ञाकारिता [ईश्वर की] है। यदि किसी ने इस दुनिया में खुद को यह प्रावधान प्रदान नहीं किया है, तो वह मृत्यु के बाद इसे प्राप्त नहीं कर सकता है। जिसने खुद को इससे सुसज्जित किया है, वह सफलता के लक्ष्य तक पहुंच जाएगा और दोनों दुनियाओं में समृद्ध होगा। जो इस प्रावधान से वंचित रहता है वह नुकसान में गंभीर है और नष्ट होने के लिए अभिशप्त है। इसलिए, यह वास्तव में एक बहुत ही कठिन और खतरनाक रास्ता है।

इस मार्ग को अपनाने की इच्छा रखने वाले बहुत कम हैं। इनमें से अभी भी कम वे हैं जो दृढ़ संकल्प के साथ अपने इरादे को व्यवहार में लाते हैं। जो लोग अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सक्षम होते हैं वे बहुत कम होते हैं। हालाँकि, जो लोग वांछित लक्ष्य तक पहुँचते हैं वे [परमेश्वर के] सम्माननीय सेवक होते हैं जिन्हें उच्च परमेश्वर ने अपने परिचित और रिश्ते [निकटता और अंतरंगता] के लिए चुना है। यह वह है जिसने उनकी मदद की और उनकी रक्षा की और उन्हें अपनी दया से ऐसे सफल भाग्यशाली व्यक्तियों के बीच स्वर्ग में प्रवेश दिलाया।

जब मुझे फिरदौस का रास्ता इतना कठिन और खतरों से भरा लगा, तो मैंने प्रावधान करने का ध्यान रखा और आवश्यक आपूर्ति और जरूरतों का पता लगाने में सक्षम हो गया। मुझे बहुत उम्मीद है कि इन प्रावधानों और आपूर्तियों के साथ, भगवान की इच्छा से, स्वर्ग की यात्रा सफलता और शांति के साथ पूरी होगी। इन प्रावधानों और आपूर्तियों में पूजा करने, अभ्यास करने की इस क्षमता को रखने और आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता शामिल है। यह सब केवल परमेश्वर की सहायता से ही किया जा सकता है। इसलिए, मैंने स्वर्ग की यात्रा को सफलतापूर्वक शुरू करने के विषय पर कई पुस्तकों का संकलन किया है, जैसे "*इह्या अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार", "*किताब अल-कुर्बती इल अल्लाह*" या "ईश्वर के साथ अंतरंगता प्राप्त करने की पुस्तक", आदि।

इन सभी पुस्तकों में अच्छे (यानी, सूक्ष्म) शैक्षणिक मुद्दे और दार्शनिक बिंदु हैं जिन्हें आम जनता समझ नहीं सकती है। इसलिए, उन्होंने इन पुस्तकों पर ताना मारना और प्रतिकूल टिप्पणियां करना शुरू कर दिया। हालांकि, उनके इस रवैये में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पवित्र कुरान से बेहतर कोई रचना नहीं हो सकती है जो सभी लोकों (यानी, सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों) के भगवान की रचना है, लेकिन अविवेकी लोगों ने इस दिव्य पुस्तक को भी अपनी प्रतिकूल टिप्पणियों से नहीं बख्शा और कहा:

إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ

"यह पुराने [समय] की दंतकथाओं के अलावा और कुछ नहीं है। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 25)

इस प्रकार, जब उन्होंने ईश्वरीय पुस्तक के साथ इस तरह का व्यवहार किया, तो वे अपने तानों से कैसे बच सकते थे, मानव रचना की एक पुस्तक। हालाँकि, शिक्षित और बुद्धिमान लोगों के लिए यह उचित है कि वे परमेश्वर के प्राणियों के साथ विवाद न करें, बल्कि उनके साथ दयालु व्यवहार करें [उनके गलत व्यवहार के बावजूद]। इसलिए, मैंने सभी राजाओं के राजा परमेश्वर से प्रार्थना की, कि वह एक ऐसी पुस्तक को संकलित करने में मेरी मदद करे जिससे सभी सहमत हों और जो [सभी] लोगों के लिए फायदेमंद हो।

दुनिया के पालनकर्ता, जो असहाय लोगों की प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं, ने मुझे दीन (भगवान के लिए मार्ग) के गुप्त बिंदुओं और संकेतों (यानी, सूक्ष्मताओं) *और* इस पुस्तक के संकलन के लिए एक पूरी तरह से अद्वितीय सेटअप (संगठन) सिखाकर मेरी प्रार्थना को स्वीकार किया, जिसे मैं भगवान की मदद से अब बताने जा रहा हूं। वह यह है कि जब कोई व्यक्ति पहली बार [ईश्वर की] पूजा का मार्ग अपनाने का संकल्प लेता है, तो उसे ईश्वर से मार्गदर्शन और सहायता मिलती है। पवित्र कुरान इस सहायता और मार्गदर्शन को संदर्भित करता है:

أَفَمَن شَرَحَ ٱللَّهُ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ

"वह जिसका हृदय ईश्वर ने इस्लाम के लिए फैलाया है (यानी, ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण का मार्ग), वह अपने भगवान के प्रकाश में है। (कुरान, अध्याय 39, आयत 22)।

पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) की एक हदीस (कथन) भी है, जिसका अर्थ है कि जब दिव्य प्रकाश किसी के दिल में प्रवेश करता है, तो यह उसमें विशालता, क्षमता और खुलापन पैदा करता है। नेक साथियों ने पूछा: "हे ईश्वर के दूत! क्या इस प्रकाश का कोई संकेत है जिसके द्वारा इसे पहचाना जा सकता है?" उन्होंने (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने उत्तर दिया: "ये धोखाधड़ी और धोखे (दुनिया) के निवास से दूरी की भावनाएं हैं, अनंत काल के निवास (परलोक) की ओर मुड़ना और इसके आगमन से पहले मृत्यु की तैयारी करना चाहते हैं"। यदि किसी में ये गुण और प्रवृत्तियाँ हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि उसके हृदय में प्रकाश प्रवेश कर गया है।

जब मनुष्य के हृदय में आराधना के मार्ग पर चलने का इरादा उठता है, तो वह सोचने लगता है कि वह जीवन, शक्ति, बुद्धि, वाणी की शक्ति और कई अन्य आशीषों और सांत्वना के साधनों के संबंध में उच्च परमेश्वर की आशीषों से समृद्ध हो गया है, जो उसे परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए हैं। इनसे वह खुद को परेशानियों, नुकसानों, संकटों और आपदाओं से बचाता है। इसलिए, वह यह विश्वास करना शुरू कर देता है कि कोई ऐसा प्राणी होना चाहिए जिसने उसे ये सभी आशीर्वाद और इनाम दिए हैं और यदि वह उस प्राणी के प्रति आभारी और आज्ञाकारी नहीं है, तो वह उसे दंड देगा और उसकी आशीषें छीन लेगा।

वह यह भी सोचने लगता है कि सच्चे हितैषी (ईश्वर) ने लोगों को उसके बारे में ज्ञान प्रदान करने के लिए पैगंबर (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो) भेजा है। इन पैगंबरों (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो) ने ईश्वर की मदद से, मानव शक्ति और क्षमता से परे अलौकिक चमत्कारों को प्रदर्शित किया। पैगंबरों (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो) ने लोगों को सिखाया कि उनका केवल एक पालनकर्ता प्रभु है जिसके पास हर चीज पर अधिकार है। वह सर्वज्ञ, शाश्वत और शाश्वत है। उन्होंने तुमको अच्छे कर्म करने और पापों और विकारों से दूर रहने के लिए कहा है। वह उन लोगों को दंडित करने में सक्षम है जो अवज्ञाकारी हैं और जो आज्ञाकारी हैं उन्हें पुरस्कृत करने में सक्षम है। वह दिलों के रहस्यों और उनसे गुजरने वाली धारणाओं को जानता है। उसने मोक्ष और पुरस्कार देने का वादा किया है। उन्होंने लोगों को अपनी सजा और पीड़ा के खिलाफ चेतावनी भी दी है। उसने उन्हें ईश्वरीय व्यवस्था के आदेशों का पालन करने में नियमित रूप से रहने की आज्ञा दी है।

ये सभी निर्देश और शिक्षाएं ईश्वर के सेवकों के दिलों में एक दृढ़ विश्वास पैदा करती हैं कि ये सभी दावे तर्कसंगत दृष्टिकोण से काफी संभव हैं और कुछ भी असंभव नहीं है। यह विश्वास लोगों के दिलों में महान ईश्वर का भय और उसके सामने जवाबदेही के बारे में चिंता पैदा करता है। यह भय और चिंता उन्हें लापरवाही और लापरवाही के लिए जगाती है, अंतिम तर्क को पूरा करती है और उनकी दलीलों और बहानों को दूर करती है और उन्हें परमेश्वर के संकेतों पर विचार करने का आग्रह करती है। नतीजतन, एक स्वस्थ दिमाग वाला व्यक्ति अपने उद्धार और सुरक्षा के स्थान के लिए तरीकों और साधनों की खोज करता है। यह सब उसे ब्रह्मांड के निर्माता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का तरीका दिखाता है, जो ब्रह्मांड और उसमें क्या है, इस पर अपनी समझ और ज्ञान के साथ चिंतन करता है। उसे उसकी सृष्टि पर विचार करके ब्रह्मांड के निर्माता को जानने के लिए निर्देशित किया जाता है, ताकि वह अदृश्य पर विश्वास कर सके और जान सके कि उसके पास केवल एक ही गुरु और निर्माता है जिसने उस पर ईश्वरीय व्यवस्था के आदेशों का पालन करने, जो सही है उसके लिए प्रयास करने और जो गलत है उससे दूर रहने का कर्तव्य लगाया है। इस प्रकार, पूजा के मार्ग में पहली घाटी ब्रह्मांड के निर्माण पर चिंतन करना है ताकि उसके निर्माता का ज्ञान प्राप्त किया जा सके। इसे "ज्ञान और जानने वाले ईश्वर की घाटी" (या '*उकबा-तू अल-इल्म वा अल-मारिफाह*) कहा जाता है।

इन आदेशों और दायित्वों को सीखने के बाद, वह आज्ञाकारिता और सेवा की ओर मुड़ता है। इस बीच, वह अपने जीवन में किए गए अनगिनत पापों और ज्यादतियों को याद करता है और उससे आग्रह किया जाता है कि वह अपने सभी पापों से पश्चाताप करे और परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करने से पहले शुद्ध करे। इस स्तर पर, वह एक और घाटी का सामना करता है जिसे "पश्चाताप की घाटी" (या '*उकबा-तू अत-तौबा)* कहा जाता है। इसलिए, वह इस "पश्चाताप की घाटी" को पार करने के बाद खुद को पूजा और भक्ति में संलग्न करेगा। उसी समय, वह "बाधाओं की घाटी" (या *'उकबाह-तुल' अवा-आईक)* नामक एक और घाटी का सामना करेगा। यह नकारात्मक शक्तियों की घाटी है जो उसे आज्ञाकारिता और भक्ति से रोकेगी। अब वह पाता है कि वह चार की संख्या में बाधाओं के कारण पूजा और भक्ति के साथ पूर्ण न्याय नहीं कर सकता है:

(1) दुनिया;
(2) रचनाएँ;
(3) [निचला] स्व ("*नफ्स*"); और
(4) शैतान।

परमेश्वर का सेवक अपने मार्ग में इन बाधाओं का सामना करता है। वह पूजा करने के लिए हार मान लेता है या उदासीन हो जाता है, कभी-कभी सांसारिक आकर्षण, रचनाओं, स्वयं या शैतान के प्रलोभनों के कारण। इसलिए, दुनिया को त्यागकर, सृष्टिओं से एकांत में जाकर और बल और दृढ़ संकल्पों के साथ स्वयं और शैतान का विरोध करके इन बाधाओं से छुटकारा पाना आवश्यक है।

मनुष्य का 'स्व' ("*नफ्स*") इन सभी बाधाओं में सबसे मजबूत है। अन्य बाधाओं से छुटकारा पाना आसान है लेकिन यह स्वयं सबसे दृढ़ है, क्योंकि यह मानव जीवन का हथियार है और यह हमेशा मृत्यु तक मनुष्य का साथ देता है। इसे मिटाना भी बहुत मुश्किल है, बल्कि असंभव है। हालाँकि, इसे *तक़्वा* (पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर और धार्मिकता के प्रति भय) की लगाम के साथ नियंत्रण में रखा जा सकता है, ताकि इसे आज्ञाकारिता के अधीन किया जा सके और विद्रोह से रोका जा सके। इस प्रकार, यह एक स्थायी घाटी भी है और इसे पार करने के लिए भगवान की सहायता की आवश्यकता है।

परमेश्वर की सहायता से इस घाटी को पार करने के बाद, मनुष्य को कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ेगा जो उसे पूरे ध्यान और समर्पण के साथ आराधना करने के लिए खुद को समर्पित नहीं करने देंगी। ये संख्या में चार हैं:

- एक. जीविका: मनुष्य का स्व ("*नफ्स*") उसे गरीबी से डराकर पूजा से दूर रखने की कोशिश करता है। भक्ति में लगे रहने और दुनिया से खुद को अलग करने से (यानी, दुनिया के प्रति हृदय का लगाव), वह अपने आश्रितों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त आजीविका अर्जित नहीं कर सकता है।

- दो. भय और आशंका: मनुष्य उस परियोजना और नौकरी की उपयुक्तता या अनुपयुक्तता के बारे में संदेह और संदेह में रहता है जिसे वह शुरू करना चाहता है। वह असफलताओं से डरता है।

- तीन. आपदाएँ और कठिनाइयाँ: मनुष्य सोचता है कि ईश्वर का मार्ग अपनाने से उसे लोगों के विरोध और नाराजगी के साथ-साथ आपदाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उसे विभिन्न परेशानियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

- चार. ईश्वरीय फरमान: यह ईश्वरीय आदेश या भाग्य कभी-कभी मनुष्य का पक्ष लेता है और कभी-कभी मनुष्य के खिलाफ जाता है और अक्सर कड़वाहट से भरा होता है।

कभी-कभी, मनुष्य इन बाधाओं का सामना करता है जिसे "बाधाओं की घाटी" *(या 'उकबा-तुल' अवारिध) कहा जाता है*। उन्हें सफलतापूर्वक पार करने के लिए उसे चार चीजों की आवश्यकता होती है:

- एक. जीविका के मामले में भगवान पर पूरा भरोसा रखना।

- दो. भय और संदेह के मामले में सब कुछ भगवान को सौंपना।

- तीन. किसी पर आने वाली आपदाओं और कठिनाइयों को धैर्य के साथ सहन करना।

- चार. ईश्वरीय आदेश के मामले में ईश्वर की इच्छा के प्रति निष्क्रिय रूप से समर्पण करना।

जब कोई व्यक्ति इन सभी गुणों को उसमें डाल देता है और परमेश्वर की सहायता से इस घाटी को पार कर लेता है, तो वह दूसरी घाटी का सामना करेगा। वह महसूस करेगा कि उसका स्वयं पूजा में लिप्त होने के लिए इच्छुक नहीं है और इस मामले में असाधारण लापरवाही का शिकार हो गया है; यह धार्मिकता से विमुख हो गया है और पापों और बुराइयों में रुचि रखता है। अब ऐसी स्थिति में, स्वयं में रुचि पैदा करने के लिए एक प्रेरणा की आवश्यकता है ("*नफ्स*") पूजा और आज्ञाकारिता की ओर मुड़ने और पापों और दोषों से दूर रहने और उसमें ईश्वर का भय पैदा करने के लिए। यह प्रेरणा दो कृत्यों में निहित है:

1. आशा [भगवान में], और
2. [भगवान का] डरना।

दूसरे शब्दों में, मनुष्य को इनाम और प्रतिफल की आशा करनी चाहिए जिसका वादा परमेश्वर ने धर्मपरायणता, धार्मिकता और अच्छे कर्मों के लिए प्रतिफल के रूप में किया है। आशा करने का यह कार्य स्वयं को पूजा, आज्ञाकारिता और अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करेगा। इसी तरह, एक आदमी को उस गंभीर दंड और उन यातनाओं और कठिनाइयों के बारे में सोचना चाहिए जिनका उसे परलोक में सामना करना पड़ सकता है। जब यह भय हृदय में पैदा होता है, तो मनुष्य अवज्ञा और पापों को त्याग देगा। इस घाटी को "आग्रह और प्रेरणा की घाटी" (या *'उकबा-तुल बवैथ) कहा जाता है*। जब यह घाटी रास्ते में खड़ी हो, तो मनुष्य को उपरोक्त दिशाओं को ध्यान में रखते हुए इसे पार करना चाहिए।

इन सभी घाटियों को पार करने के बाद, उसे मन की पूरी एकाग्रता और उचित समर्पण के साथ [भगवान की] पूजा और अच्छे कर्मों के लिए खुद को समर्पित करने से कोई नहीं रोक सकता है। इस स्तर पर, वह ऐसे गुणों की उपस्थिति को महसूस करेगा जो उसे पूरी एकाग्रता के साथ पूजा और आज्ञाकारिता में लिप्त होने के लिए प्रेरित करेंगे।

आराधना में खुद को शामिल करने के बाद, मनुष्य को लगेगा कि दो बड़ी आपदाएँ अभी भी उसकी आराधना को बिगाड़ रही हैं। इन आपदाओं में से एक है दिखावा या आडंबर और दूसरा है घमंड ('*उजुब* या आत्म-धार्मिकता)। अपनी आराधना का प्रदर्शन करने का प्रेम उसकी पूजा के उद्देश्य को ही विफल कर देता है और उसे पूरी तरह से नष्ट कर देता है। कभी-कभी उसके धर्म के कर्मों के कारण उसके हृदय में अभिमान पैदा होता है और उसे लगने लगता है कि वह एक बहुत ही धर्मनिष्ठ और संत व्यक्ति बन गया है और फिर वह आत्म-धोखे [और आत्म-धार्मिकता] का शिकार हो जाता है तो धार्मिकता के पूरे कार्य व्यर्थ हो जाते हैं। इस तरह, अब उनके रास्ते में एक और घाटी खड़ी है जिसे "पूजा को बर्बाद करने वाले कारकों की घाटी" (या '*उकबा-तुल कवादेह) कहा जाता है*। इस घाटी को सुरक्षित रूप से पार करने के लिए, उसे दो अन्य विशेषताओं की आवश्यकता होती है: (1) ईमानदारी और (2) परमेश्वर की कृपा और दया। इन गुणों की सहायता से उसे अपनी आराधना को उच्च ईश्वर की ईमानदारी और विश्वासयोग्यता से सजाना चाहिए और यह विश्वास करना चाहिए कि उसके सभी गुण और अच्छे गुण केवल ईश्वर की सहायता और दया के कारण हैं। [एक कवि ने फ़ारसी में कहा है:]

"उसमें सौभाग्य उसकी अपनी शक्ति और प्रयासों के कारण नहीं है, बल्कि यह दयालु ईश्वर की सहायता और कृपा के कारण है।

इस तरह की भावना के अभाव में, इस बात की पूरी संभावना है कि अच्छे कर्म बर्बाद हो रहे हैं और ये शब्द, भगवान न करे, उन पर लागू हो सकते हैं: "*खसीर अद-दुनिया वा अल-अखिराह*" (उन्होंने दुनिया के

साथ-साथ परलोक को भी खो दिया)। उसे भगवान की मदद से इस घाटी को पार करना चाहिए। इन सभी घाटियों को पार करने के बाद, मनुष्य पूजा और सभी आपदाओं से मुक्ति के लक्ष्य को प्राप्त करता है।

अब उसे पता चलता है कि वह हमेशा के लिए महान ईश्वर के उपहारों और दया में डूब गया है। ईश्वर की असीम कृपा के कारण ही वह पूजा, सत्कर्म और पापों और विकारों से पूर्ण मुक्ति का आनंद ले रहा है। इसका मतलब एक गंभीर नुकसान होगा यदि वह इस उदार गुरु, भगवान की उपेक्षा करता है। उस स्थिति में, वह वली (मित्र) और ईश्वर के प्रिय सेवक के रूप में अपनी स्थिति खो देगा। वह उसके आशीर्वादों और उसके अच्छे कर्मों से वंचित हो सकता है। इसलिए, वह परमेश्वर की स्तुति करता है और उसे धन्यवाद देता है। हम इसे "स्तुति और धन्यवाद की घाटी [भगवान को]" कहते हैं (*'उकबा-तुल हम्द वा अस-शुक्र) ।*

जब कोई व्यक्ति इस घाटी को पार करता है, तो वह भी परमेश्वर की सहायता से होता है, तो उसे एहसास होता है कि वह अपनी मंजिल तक पहुँचने वाला है और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने वाला है। इस मार्ग पर आगे बढ़ने के बाद, वह परमेश्वर की दया और अनुग्रह की भूमि और ईश्वरीय प्रेम और ईश्वर तक पहुंच के मैदान में पहुंचेगा। उसे परमेश्वर की प्रसन्नता के स्थान पर, और स्वर्गदूतों के निवास में प्रवेश दिया जाएगा। उसे ईश्वर की निकटता और उन लोगों की भव्य सभा में प्रवेश का विशेष दर्जा दिया जाएगा जो हमेशा महान परमेश्वर का आह्वान और प्रार्थना करते हैं। वह सृष्टिकर्ता के उपहारों और उपहारों का हकदार हो जाएगा। वह आध्यात्मिक स्वर्गदूतों की संगति में इतनी गहराई से लीन हो जाएगा कि वह अपने जीवन का शेष भाग परमेश्वर की याद के बगीचे में बिताएगा। शारीरिक रूप से, वह इस दुनिया में होगा लेकिन आध्यात्मिक और वस्तुतः उसका दिल परलोक के मामलों से जुड़ा रहेगा। दुनिया के मामलों में उनका प्यार और रुचि धीरे-धीरे गायब हो जाएगी। हर पल वह ईश्वर से मिलने की इच्छा के साथ मृत्यु की पुकार की प्रतीक्षा कर रहा होगा। कॉल अंततः खुशी की खबर के साथ उसके पास आएगी। उसे इस क्षणभंगुर दुनिया से परलोक की शाश्वत दुनिया में स्थानांतरित कर दिया जाएगा, जहां उसे बड़े सम्मान, सहजता, आराम, विलासिता और प्रेम के साथ स्वर्ग में ले जाया जाएगा। दिव्य स्वागत और मनोरंजन इतना समृद्ध और शानदार होगा कि उसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता। यह अनोखी स्थिति और ये आशीर्वाद और इनाम दिन-ब-दिन बढ़ते रहेंगे। यहां तक कि देवदूत भी उसकी सफलता और उच्च पदों पर [भगवान के सामने] पदोन्नति पर उससे ईर्ष्या करेंगे।

हम परम पूज्य परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी दया से हम सभी को ऐसे सेवकों में शामिल करे और अपने महान उपहारों और उपहारों के साथ हमें अनुग्रह करें और हमें उसके अस्वीकृत और निंदा किए गए सेवकों से बाहर करें। वह हम सभी को अपने ज्ञान को व्यवहार में लाने, अपनी इच्छा और खुशी के अनुसार अपने जीवन को पारित करने में मदद करे, और हमारे ज्ञान को हम पर अभिशाप न बनने दें। यह सब उसके लिए बहुत आसान है क्योंकि वह दया दिखाने वाले सभी लोगों में सबसे दयालु है।

और यह परमेश्वर के लिए बिल्कुल भी कठिन नहीं है।

निम्नलिखित वह क्रम और सेटअप है जिसका मैंने शुरुआत में उल्लेख किया है। इस आदेश और व्यवस्था का सार यह है कि सात घाटियाँ पूजा और भक्ति के मार्ग में खड़ी हैं [भगवान के लिए और इन घाटियों को पार करने से ईश्वर की ज्ञानता होती है जो किसी के जीवन का उद्देश्य है, जो बदले में, शाश्वत खुशी और अंतहीन विजय की ओर ले जाती है]:

1. ज्ञान की घाटी और ईश्वर को जानना,
2. पश्चाताप की घाटी,
3. बाधाओं की घाटी,
4. बाधाओं की घाटी,
5. आग्रह और प्रोत्साहन की घाटी,
6. पूजा को बर्बाद करने वाले कारकों की घाटी, और
7. स्तुति और कृतज्ञता की घाटी [भगवान के प्रति]।

इन सभी घाटियों की चर्चा मेरी पुस्तक "*मिन्हाज अल-'आबिदीन [इला जन्नतु रब्ब अल-अलमीन]*" (या "उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग [भगवान का उन्हें सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान के स्वर्ग की ओर ले जाना]")। मैं प्रासंगिक अर्थों और महत्वपूर्ण बिंदुओं को संक्षेप में बताऊंगा और अलग-अलग अध्यायों में उनके बारे में कुछ विवरण भी दूंगा, इसके लिए मैं भगवान की मदद चाहता हूं और "*ला हौला वा ला कुवुता इल्ला बिल्लाह*" (ईश्वर के अलावा कोई शक्ति और शक्ति नहीं है)।

जीवन के उद्देश्य की आगे की व्याख्या

इमाम ग़ज़ाली ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" की शुरुआत में मानव जीवन के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया है और कहा है कि कुरान के छह उद्देश्य हैं और कुल दस उद्देश्यों के साथ जब कुछ उप-उद्देश्य इसमें शामिल हैं। कुरान का पहला और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य, जो अन्य सभी उद्देश्यों को पीछे छोड़ देता है, मुख्य उद्देश्य की सेवा करने वाले होने के नाते, ईश्वर को जानना है, अर्थात, ईश्वर की ज्ञान (मारिफा) की स्थिति को प्राप्त करना है। कुरान के अन्य सभी उद्देश्य इस मुख्य उद्देश्य के अधीन हैं और इस मुख्य उद्देश्य को प्राप्त करने की सेवा में हैं। इमाम ग़ज़ाली ने इस अद्भुत पुस्तक "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" [9] की शुरुआत में निम्नलिखित कहा है:

कुरान एक महासागर की तरह है जो विभिन्न प्रकार के गहनों और कीमती सामानों को कवर करता है

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلْقُرْءَانَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَآ

क्या वे कुरान के गहरे अर्थों को समझने के लिए उस पर विचार नहीं करते हैं, या क्या उनका मन (यानी, दिल) भीतर से बंद है? (कुरान, अध्याय 47, श्लोक 24)

भगवान के नाम पर, सबसे दयालु, कभी दयालु

परमेश्वर के नाम का उल्लेख करने के बाद, मैं उसकी स्तुति के साथ उसकी महिमा करता हूँ जो हर पुस्तक की शुरुआत होनी चाहिए। उनकी आशीषें उनके दूतों पर बनी रहें! - एक प्रार्थना जो हर प्रवचन के समापन का निर्माण होनी चाहिए।

फिर मैं तुम्हें तुम्हारी नींद से जगाना चाहता हूँ। 0 आप, जो कुरान का बहुत विस्तार से पाठ करते हैं, जो इसके अध्ययन को एक व्यवसाय के रूप में लेते हैं, और जो इसके कुछ बाहरी अर्थों और वाक्यों को आत्मसात करते हैं। आप कब तक समुद्र के किनारे घूमते रहेंगे, कुरान के अर्थों के चमत्कारों के लिए अपनी आँखें बंद करते रहेंगे? क्या यह तुम्हारा कर्तव्य नहीं था कि तुम इन अर्थों के अथाह सागर के बीच में नौकायन करें ताकि उनके चमत्कारों को देख सकें, उनकी सर्वोत्तम उपज इकट्ठा करने के लिए उनके द्वीपों की यात्रा करें, और उनकी गहराई में गोता लगाएँ ताकि तुम उनके गहने प्राप्त करके अमीर बन सको? क्या तुम उनके मोतियों और गहनों से वंचित होने पर शर्म महसूस नहीं करते हो, क्योंकि तुम उनके किनारों और बाहरी रूपों को देखने में दृढ़ता रखते हो?

क्या आपको यह जानकारी नहीं है कि कुरान एक महासागर की तरह है और यह कुरान से है कि पूर्वजों और आधुनिक लोगों के विज्ञान की शाखा है, जैसे नदियाँ और झरने समुद्र के किनारे से निकलते हैं? आप उन लोगों का अनुकरण क्यों नहीं करते हैं जो अपनी लहरों के माध्यम से चलते थे और इस तरह लाल गंधक प्राप्त करते थे, उनकी गहराई में गोता लगाते थे और इस तरह लाल कोरन्डम, चमकते मोती और हरे रंग के क्राइसोलाइट को बाहर निकाला, उनके तटों के साथ यात्रा की और इस तरह ग्रे एम्बरग्रीस और ताजा खिलने वाली मुसब्बर-लकड़ी इकट्ठा की, और अपने द्वीपों से जुड़ गए और इस तरह अपने जानवरों से सबसे बड़ा मारक और सबसे मजबूत कस्तूरी प्राप्त की? ध्यान दें कि, इस्लामी भाईचारे के कर्तव्य को पूरा करते हुए और ईश्वर से आपकी प्रार्थना के आशीर्वाद की आशा करते हुए, अब मैं आपको इन लोगों की यात्रा के तरीके, उनके गोताखोरी और उनके तैरने के तरीके के बारे में मार्गदर्शन करना चाहता हूं [कुरान के गहरे अर्थों के अथाह महासागर में]।

कुरान और उसके कीमती सामान के उद्देश्य छह प्रकार के हैं

कुरान का रहस्य, इसका सबसे शुद्ध गूढ़, और इसका अंतिम उद्देश्य लोगों को ईश्वर के पास बुलाना है, सबसे शक्तिशाली, इस दुनिया और परलोक के भगवान, ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी की परतों के निर्माता, और जो कुछ भी उनके बीच है और जो कुछ भी नम उप-भूमि के नीचे है। इस कारण से, कुरान और उसकी आयतें छह प्रकार तक सीमित हैं, जिनमें से तीन मिसाल और महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं और [शेष] तीन उनका अनुसरण करते हैं, उन्हें समृद्ध करते हैं और उन्हें पूरा करते हैं। जहां तक तीन महत्वपूर्ण विभाजनों का सवाल है, वे ईश्वर की परिभाषा से संबंधित हैं, जिसके लिए मनुष्य बुलाए जाते हैं [ईश्वर को जानने और ज्ञान या *मारिफा* प्राप्त करने के लिए], सीधे मार्ग की दृढ़ता की परिभाषा जिसमें उसकी ओर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है [यानी, आध्यात्मिक मार्ग जो किसी को ईश्वर की ओर ले जाता है], और उसे प्राप्त करने के समय स्थिति की परिभाषा [ज्ञान या *मारिफा की स्थिति में*]।

जहां तक तीन विभाजनों का सवाल है जो उन्हें समृद्ध करते हैं और उन्हें पूरा करते हैं, एक उन लोगों की स्थितियों का वर्णन करता है जो परमेश्वर की पुकार का जवाब देते हैं, और उनके साथ उनके नाजुक व्यवहार, इस रहस्य और उद्देश्य का वर्णन करता है कि [दूसरों में] एक इच्छा को उत्तेजित करना [इन शर्तों की प्राप्ति के लिए] और उन्हें [इसके लिए] प्रोत्साहित करना। यह उन लोगों की स्थितियों का भी वर्णन करता है जो कॉल का जवाब देने से पीछे हटते हैं और भगवान द्वारा उन्हें सजा देने का तरीका, रहस्य और इस उद्देश्य का उद्देश्य विचार और भय को भड़काना है। दूसरा विभाजन उन लोगों की स्थितियों का वर्णन करता है जो परमेश्वर को नकारते हैं, और सत्य पर बहस करने और उसके खिलाफ बहस करने में उनकी

लज्जा और उनकी अज्ञानता को प्रकट करता है। इस सब अस्तित्व का रहस्य और उद्देश्य, झूठ के पक्ष में, प्रकट करना और घृणा पैदा करना, और, सत्य के पक्ष में, स्पष्ट आशंका, पुष्टि और बाधा। तीसरा विभाजन परमेश्वर के मार्ग के चरणों और इसके लिए प्रावधान और तैयारी करने के तरीके को परिभाषित करता है।

कुरान के छह उद्देश्यों की व्याख्या

कुरान की आयतों का **<u>पहला विभाजन</u>** उस व्यक्ति की परिभाषा से संबंधित है जिसके लिए पुरुषों को बुलाया जाता है। यह ईश्वर के ज्ञान (मारिफा *या ज्ञान)* की व्याख्या है (वह ऊंचा हो सकता है!) और यह लाल गंधक है। इस ज्ञान में सच्चे व्यक्ति के सार का ज्ञान, उसके गुणों का ज्ञान, और उसके कार्यों का ज्ञान शामिल है, और इन तीनों को कोरन्डम कहा जाना चाहिए, क्योंकि ये लाल गंधक से प्राप्त लाभों में सबसे खास हैं।

जिस तरह कोरन्डम के ग्रेड होते हैं - उनमें से लाल, नीले-भूरे और पीले होते हैं; उनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक कीमती होते हैं - इसलिए ज्ञान के ये तीन रूप एक ही ग्रेड के नहीं हैं। इसके विपरीत, उनमें से सबसे कीमती ईश्वर के सार ("*धात*") का ज्ञान है, और इसलिए इसे लाल कोरन्डम कहा जाना चाहिए। इसके बगल में भगवान के गुणों ("*सिफत")* का ज्ञान है, और यह नीला-भूरा कोरन्डम है। इसके साथ ही ईश्वर के कार्यों ("*अफल")* का ज्ञान है, और यह पीला कोरन्डम है।

चूंकि इन कोरन्डम में सबसे कीमती सबसे बड़ा और दुर्लभ है, और इसकी दुर्लभता के कारण [यहां तक कि] राजा भी इसका थोड़ा सा ही अधिकार प्राप्त कर सकते हैं, जबकि वे कभी-कभी इससे कमतर चीजों का बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं, इसलिए दिव्य सार का ज्ञान भी दायरे में सबसे कम है, जिसे हासिल करना सबसे कठिन है, विचार करने के लिए सबसे पेचीदा, और चर्चा प्राप्त करने से सबसे दूर। यही कारण है कि कुरान में इस ज्ञान के केवल नोट्स और संकेत हैं, और इसके संदर्भ पूर्ण पवित्रीकरण का उल्लेख करते हैं जैसे कि ईश्वर के शब्द (वह महान हो!), "उसके जैसा कुछ भी नहीं है" (कुरान), और *सूरह* (अध्याय) ईमानदारी का ("*इखलास*") और पूर्ण महानता का उल्लेख जैसे कि उनके शब्द, "उसकी जय हो! वह उच्च है और उससे ऊपर है जिसका वे [अर्थात्, बहुदेववादी] उसके बारे में वर्णन करते हैं! आकाश और पृथ्वी का प्रवर्तक!" (कुरान)।

जहां तक दिव्य गुणों ("*सिफात")* का सवाल है, उनका दायरा व्यापक है, और उनके बारे में भाषण की कमर व्यापक है। यही कारण है कि दिव्य ज्ञान, शक्ति, जीवन, वाणी, बुद्धि, श्रवण, देखना, आदि का वर्णन करने वाले श्लोक असंख्य हैं। जहां तक दैवीय कार्यों की बात है, उनकी तुलना समुद्र से की जा सकती है, जिसके किनारे बहुत चौड़े हैं और जिनकी सीमा का पता जांच से नहीं लगाया जा सकता है। बल्कि ईश्वर और उसके कार्यों के अलावा अस्तित्व में कुछ भी नहीं है। उसके अलावा जो कुछ भी मौजूद है वह उसके कार्य हैं; हालाँकि, कुरान में दृश्यमान दुनिया में मौजूद उनमें से स्पष्ट रूप से शामिल है जैसे कि आकाश, तारे, पृथ्वी, पहाड़, पेड़, जानवर, समुद्र, पौधे, मीठे पानी को [बादलों से] भेजना और पौधों और जीवन के अन्य रूपों को बनाए रखने के अन्य सभी साधन। ये इंद्रियों के लिए स्पष्ट दिव्य कार्य हैं। उनके कार्यों में सबसे श्रेष्ठ, उनमें से सबसे अद्भुत, और जो अपने निर्माता की महिमा की ओर सबसे स्पष्ट रूप से इंगित

करते हैं, वे वे हैं जो इंद्रियों के लिए स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन अदृश्य दुनिया से संबंधित हैं (*"आलम अल-मलकूट")* / वे स्वर्गदूत, निराकार प्राणी, आत्मा और आत्मा हैं, अर्थात्, मनुष्य का वह हिस्सा जो ईश्वर को जानता है (वह ऊंचा हो!); ये अंतिम दो भी अदृश्य और अदृश्य दुनिया के कुल योग में से हैं और कब्जे और इंद्रिय धारणा की दुनिया से बाहर हैं।

इंद्रियों के लिए स्पष्ट नहीं होने वाले दिव्य कार्यों में स्थलीय स्वर्गदूत हैं जिन्हें मानव जाति की देखभाल के लिए सौंपा गया है, और वे वे स्वर्गदूत हैं जिन्होंने आदम के सामने खुद को दंडवत किया (शांति और परमेश्वर की आशीषें उस पर बनी रहें!)। उनमें से वे शैतान भी हैं जिन्हें मानवजाति पर अधिकार दिया गया है, और वे वे हैं जिन्होंने आदम के सामने खुद को दण्डवत् करने से इनकार कर दिया था। [इसके अलावा,] उनमें से आकाशीय स्वर्गदूत हैं, जिनमें से सबसे ऊंचे रैंक में महादूत ("*अल-कार्बियुन")* हैं, जो स्वर्ग में एकांत में हैं, मनुष्यों पर कोई ध्यान नहीं देते हैं; बल्कि वे परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ पर ध्यान नहीं देते हैं (वह महान हो सकता है!) क्योंकि वे अपने प्रभु महामहिम की सुंदरता और उसकी महिमा में लीन हो जाते हैं; वे अपनी निगाहें उसकी ओर ही सीमित रखते हैं, बिना थके दिन-रात उसकी महिमा करते हैं। इसे असंभव मत समझो कि परमेश्वर के सेवकों में कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसे उसकी महिमा आदम और उसके बच्चों (यानी, मानवता) पर ध्यान देने से विचलित करती है। मनुष्य स्वयं को इस हद तक बड़ा नहीं कर सकता। सचमुच, परमेश्वर के रसूल (वह उसे आशीर्वाद दे और उसका अभिवादन करे!) ने कहा, "निश्चय ही परमेश्वर के पास एक सफेद पृथ्वी है जहाँ सूर्य की यात्रा इस संसार के दिनों के समान तीस दिनों की है; यह [इस संसार से] तीस गुना अधिक प्राणियों से भरा हुआ है जो नहीं जानते कि पृथ्वी पर परमेश्वर की अवज्ञा की जाती है, न ही वे जानते हैं कि परमेश्वर (वह महान हो!) ने आदम और *इबलीस* (शैतान) को बनाया है । इब्ने अब्बास (रइश्वर उनसे प्रसन्न हों) ने इस परंपरा का वर्णन किया है। परमेश्वर का राज्य वास्तव में व्यापक है! जान लो कि अधिकांश लोग परमेश्वर के अधिकांश कार्यों के बारे में नहीं जानते हैं, विशेष रूप से इन कार्यों में से सबसे अच्छे कार्यों के बारे में। बल्कि उनकी समझ समझ और कल्पना की दुनिया तक ही सीमित है, जो अदृश्य दुनिया के परिणामों में से अंतिम है और शुद्धतम पिथ से सबसे दूर के छिलके की तरह है। जो इस अवस्था से आगे नहीं गया है, उसने अनार के छिलके के अलावा कुछ भी नहीं देखा है, या मनुष्य के चमत्कारों के अलावा उसके बाहरी आकार को छोड़कर। फिर, ये कुरान के *सुरों* (अध्यायों) और छंदों के पहले विभाजन के कुल योग का गठन करते हैं, और उनमें विभिन्न प्रकार के कोरन्डम मौजूद हैं। हम जल्द ही आपको विशेष रूप से उनके बारे में प्रकट की गई आयतों का पाठ करेंगे, क्योंकि वे कुरान का सार, इसका दिल, इसका सार और इसका रहस्य हैं।

<u>दूसरा विभाजन</u> परमेश्वर की ओर आगे बढ़ने के मार्ग की परिभाषा से संबंधित है (वह ऊँचा हो सकता है!)। यह अपने आप को ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित करने के द्वारा है जैसा कि उन्होंने कहा था, "अपने आप को बहुत भक्तिपूर्वक उसके लिए समर्पित करें" (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 8)। उसके प्रति भक्ति उसके प्रति (अपने दिल और आत्मा से) आगे बढ़ने और उसके अलावा अन्य चीजों से दूर होने से प्राप्त की जाती है; और यह उसके वचनों में व्यक्त किया गया है, "उसके सिवा कोई परमेश्वर नहीं है; इसलिए उसे एक संरक्षक के रूप में लें" (कुरान, अध्याय 73, श्लोक 9)। उसके प्रति उन्नति केवल उसके स्मरण में दृढ़ता से प्राप्त की जा सकती है, जबकि उसके अलावा अन्य चीजों से दूर हो जाती है, जो विरोधी जुनून से प्रभावित होती है, इस दुनिया की परेशानियों से खुद को शुद्ध करके, और उनसे आत्मा की शुद्धि द्वारा [यानी, सभी बुराइयों, बुराइयों, और नकारात्मक प्रवृत्तियों और झुकाव]। इस शुद्धि का परिणाम परलोक में समृद्धि है, जैसा कि ईश्वर ने कहा था, "उसने वास्तव में समृद्धि प्राप्त की है जिसने खुद को शुद्ध किया है और अपने भगवान के नाम को याद करता है और इसलिए अनुष्ठान प्रार्थना करता है" (कुरान)। इस प्रकार

[आध्यात्मिक] मार्ग [ईश्वर की ओर ले जाने वाला] दो मामलों द्वारा समर्थित है, अर्थात्, दृढ़ता और विरोध - ईश्वर की याद में दृढ़ता (वह ऊंचा हो सकता है!) और उस का विरोध जो उससे दूर हो जाता है। यह ईश्वर की यात्रा (*अस-सफर*) है। ईश्वर की इस यात्रा में, न तो यात्री की ओर से और न ही उसकी ओर से गति होती है जिसके पास वह यात्रा करता है, क्योंकि दोनों एक साथ हैं। क्या तुमने परमेश्वर के वचनों को नहीं सुना है (वह महान हो!) - और वह उन सभी में सबसे सच्चा है जो बोलते हैं:

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ

"हम उसकी गले की नस से भी अधिक निकट हैं" (कुरान, अध्याय 50, आयत 16)।

सच्चाई यह है कि साधक और खोजे गए की तुलना दर्पण में मौजूद चित्र से की जा सकती है: चित्र की सतह पर जंग लगने के कारण उसमें चित्र प्रकट नहीं होता है; हालांकि, जब आप दर्पण को पॉलिश करते हैं तो उसमें चित्र प्रकट होता है, न तो चित्र की ओर गति से और न ही चित्र की ओर उसकी गति से, लेकिन घूंघट हटाने से। परमेश्वर (वह महान हो!) उसके सार के द्वारा प्रकट होता है और छिपा नहीं जाता है, क्योंकि प्रकाश को छिपाना असंभव है, और प्रकाश के द्वारा जो कुछ छिपा हुआ है वह स्पष्ट हो जाता है, और परमेश्वर आकाश और पृथ्वी की ज्योति है। आंख की पुतली से प्रकाश का छिपाना केवल दो मामलों में से एक के कारण होता है - या तो आंख की पुतली में मैलापन के कारण, या इसमें कमजोरी के कारण क्योंकि यह महान चमकदार प्रकाश को सहन करने में असमर्थ है जैसे चमगादड़ की आंखें सूर्य के प्रकाश को सहन करने में असमर्थ होती हैं। तो फिर, आत्मा की आंख से मैलापन को साफ करने और उसकी पुतली को मजबूत करने के अलावा कुछ भी आपके लिए अनिवार्य नहीं है। उस स्थिति में, ईश्वर आत्मा में होगा जैसा कि चित्र दर्पण में है, ताकि जब वह अचानक आत्मा के दर्पण में खुद को प्रकट करता है, तो आप यह कहने में जल्दबाजी करते हैं कि वह आत्मा के अंदर है और मानव प्रकृति (*नासूट*) ने दिव्य प्रकृति (लाहूत) को धारण कर लिया है, जब तक कि भगवान आपको दृढ़ शब्द से मजबूत नहीं करते हैं ताकि आपको एहसास हो कि चित्र दर्पण के अंदर [वास्तव में] नहीं है, लेकिन [केवल] इसमें परिलक्षित होता है। यदि चित्र दर्पण के अंदर आराम करता है तो यह अकल्पनीय होगा कि यह एक समय में कई दर्पणों में परिलक्षित हो सकता है; बल्कि [मामला यह होगा कि] उस समय जब यह एक दर्पण के अंदर आराम करता था, तो यह दूसरे से चला जाता था। हालाँकि, ऐसा तथ्य कम से कम नहीं है, क्योंकि परमेश्वर एक ही समय में कई ज्ञानवादियों के सामने स्वयं को प्रकट करता है। यह सच है कि वह स्वयं को कुछ दर्पणों [आत्माओं के] सबसे पूरी तरह से, सबसे स्पष्ट रूप से, सबसे प्रत्यक्ष और सबसे स्पष्ट रूप से, और दूसरों के लिए सबसे गुप्त और अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता है, और यह [अंतर] दर्पण [हृदय के] की स्पष्टता, इसकी पॉलिश, इसके आकार की शुद्धता और इसकी सतह की सही चौड़ाई के अनुरूप है। यही कारण है कि पैगंबर (मुहम्मद) ने कहा, "ईश्वर निश्चित रूप से खुद को आम तौर पर लोगों के सामने प्रकट करता है, लेकिन विशेष रूप से अबू बक्र [एक महान पैगंबर साथी और संत] के लिए"।

[आध्यात्मिक] उन्नति [ईश्वर की ओर] और उसकी प्राप्ति (*वुसुल*) का ज्ञान भी कुरान के समुद्रों से एक गहरे समुद्र की तरह है। हम जल्द ही आपके लिए [कुरान की] आयतें इकट्ठा करेंगे जो आपको [आध्यात्मिक] उन्नति के मार्ग पर [ईश्वर की ओर] मार्गदर्शन करेंगी ताकि आप उन पर उनकी संपूर्णता में विचार कर सकें। हो सकता है कि जो खोला जाना चाहिए वह आपके लिए खोल दिया जाए। यह विभाजन [कुरान के अध्यायों और छंदों का] चमकते मोतियों का गठन करता है।

तीसरा विभाजन [कुरान की आयतों का] ईश्वर को प्राप्त करने के समय मनुष्य की स्थिति को परिभाषित करता है [निकटता और ज्ञान या *मारिफा* की स्थिति में]। इसमें विश्राम और आनंद का उल्लेख शामिल है जिसका वह सामना करेगा। वह शब्द जो सभी प्रकार के विश्राम में व्यापक है, वह स्वर्ग है, और इनमें से सबसे ऊंचा है परमेश्वर को देखने का आनंद (वह महान हो!)। इसमें [भी] उन लोगों द्वारा झेले जाने वाले अपमान और दंड का उल्लेख शामिल है जो [उसके मार्ग] को पार करने की उपेक्षा के माध्यम से उससे छिपे हुए हैं। वह शब्द जो सभी प्रकार के दर्द में व्यापक है, वह है नरक, और उनमें से सबसे तीव्र है घूंघट (हिजाब) [ईश्वर से] और [उससे दूर] दूर जाने के कारण होने वाला दर्द (भगवान हमें इससे बचाएं!)। इस कारण से, उसने सबसे पहले अपने वचनों में इसका उल्लेख किया (वह ऊँचा उठे!):

كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ

"बिल्कुल नहीं। उस दिन वे निश्चित रूप से अपने प्रभु से परदा डाले जाएंगे। (कुरान, अध्याय 83, श्लोक 15)।

इस विभाजन में आगे दोनों समूहों, [यानी, स्वर्ग के लोग और नरक के लोग] की पूर्ववर्ती स्थितियों का उल्लेख शामिल है। इन स्थितियों को पुनरुत्थान, मृतकों को जीवित करने, गणना करने, संतुलन [लोगों के अच्छे और बुरे दोनों कामों को तौलने के लिए], और पुल [नरक के ऊपर जिसे हर कोई स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए पार करेगा] के रूप में व्यक्त किया जाता है। इनके स्पष्ट बाहरी अर्थ हैं, जो आम लोगों के लिए भोजन के स्थान पर कब्जा कर लेते हैं; इनमें [भी] अस्पष्ट रहस्य हैं, जो विशेष लोगों (यानी, ज्ञानवादी या मित्र और ईश्वर के अंतरंग) के लिए जीवन के स्थान पर कब्जा कर लेते हैं। कुरान की आयतों और उसके अध्यायों का एक तिहाई भाग इनके विवरण से संबंधित है। हम उन्हें [इस पुस्तक में] इकट्ठा करने का इरादा नहीं रखते हैं, क्योंकि वे इकट्ठा और गिने जा सकने से कहीं अधिक हैं। उनके मामले में, विचार और खोज की गुंजाइश है। यह तीसरा विभाजन हरे रंग के क्राइसोलाइट का गठन करता है।

चौथा विभाजन [कुरान के अध्यायों और आयतों का] उन लोगों की स्थितियों से संबंधित है जिन्होंने [ईश्वर के मार्ग] को पार किया है और जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया है और उसके मार्ग से भटक गए हैं। पूर्व की स्थितियाँ आदम, नूह (नूह), इब्राहीम (इब्राहिम), मूसा (मूसा), हारून (हारून), जकर्याह, यूहन्ना (याह्या), यीशु (ईसा), मरियम (मरियम), दाऊद (दाउद), सुलैमान (सुलेमान), योना (यूनुस), लूत (लूत), हनोक (इदरीस), खिद्र, शुआयब, एलियास और मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो), गेब्रियल, माइकल, [अन्य] स्वर्गदूत, और इसी तरह। जिन लोगों ने परमेश्वर को नकार दिया है और उसके मार्ग से भटक गए हैं, उनकी स्थितियाँ निम्रोद, फिरौन, *'आद,* लूत के लोग, *तुब्बा के लोग*, उपवन (आयका) के लोग, मक्का के अविश्वासी, मनुष्य की सृष्टि के उपासक, शैतान, आदि की कहानियों की कहानियों की तरह हैं। इस विभाजन का लाभ भय की उत्तेजना, चेतावनी देने और विचार को बढ़ावा देने में निहित है। इस विभाजन में रहस्य, संकेत और संकेत भी शामिल हैं, जिनके लिए लंबे समय तक चिंतन की आवश्यकता होती है। ग्रे एम्बरग्रीस और ताजा खिलने वाली मुसब्बर-लकड़ी लोगों के इन दो समूहों की स्थितियों के विवरण में पाई जाती है। उनके बारे में प्रकट आयतें इतनी अधिक हैं कि उन्हें खोजने और उन्हें इकट्ठा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

पांचवां विभाजन [कुरान के अध्यायों और छंदों का] सत्य के खिलाफ अविश्वासियों के तर्कों, स्पष्ट प्रमाणों द्वारा उनके अपमान की स्पष्ट व्याख्या, और उनके झूठ और आत्म-धोखे के आश्चर्यजनक प्रकटीकरण से संबंधित है। उनका झूठ तीन प्रकार का होता है: एक में परमेश्वर के बारे में बोलना शामिल है (वह महान हो!), जो उसके लिए उपयुक्त नहीं हैं, जैसे कि स्वर्गदूत उसकी बेटियाँ हैं, कि उसकी संतान है, कि उसके साथी हैं, आदि। दूसरा है ईश्वर के रसूल मुहम्मद (भगवान उसे आशीर्वाद दें और उसे बधाई दें!) को एक जादूगर, भविष्यवक्ता और झूठे के रूप में मानना, उनकी भविष्यवक्ता में विश्वास करने से इनकार करना, और यह कहना कि वह अन्य लोगों की तरह एक आदमी है ताकि वह अनुसरण करने के लायक न हो। तीसरा है अंतिम दिन का इनकार, पुनरुत्थान से इनकार, मृतकों को जीवित करना, स्वर्ग, नरक, और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और अवज्ञा के परिणामों से इनकार करना। उसके (वह महान हो!) में अविश्वासियों के खिलाफ सबूतों के साथ प्रमाणित तर्क मौजूद सूक्ष्मताएं और वास्तविकताएं हैं जिनमें एक महान मारक पाया जाना है। इस [पांचवें] विभाजन के विषय में पद भी स्पष्ट रूप से असंख्य हैं।

छठा विभाजन [कुरान के अध्यायों और छंदों का] मार्ग के चरणों में दायित्वों की पूर्ति को परिभाषित करता है और उन हथियारों को तैयार करके प्रावधान करने और तैयारी करने के तरीके को परिभाषित करता है जो चरणों में डाकुओं और लुटेरों को पीछे हटा देंगे। इसकी व्याख्या यह है कि संसार उन लोगों के चरणों में से एक है जो परमेश्वर की यात्रा करते हैं (वह उच्च हो सकता है!), और शरीर एक वाहन है। जो व्यक्ति मंच और वाहन के प्रबंधन की उपेक्षा करता है वह अपनी यात्रा पूरी नहीं कर सकता है। जब तक वह अपनी आजीविका के मामलों को व्यवस्थित नहीं करता है, तब तक ईश्वर के प्रति पूर्ण भक्ति का कार्य (वह उच्च हो!) जो उसके मार्ग पर चलने के समान है, प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यह भक्ति [बदले में] तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक कि उसका शरीर स्वस्थ न हो और उसकी संतान जारी न रह जाए। ये दोनों अपने अस्तित्व के संरक्षण के माध्यम से और उन चीजों को पीछे हटाने के माध्यम से पूर्ण हो जाते हैं जो उन्हें भ्रष्ट करती हैं और उन्हें नष्ट करती हैं। जहां तक उनके अस्तित्व के संरक्षण के साधनों का सवाल है, वे खा रहे हैं और पी रहे हैं जो शरीर की निरंतरता के लिए हैं और संभोग के लिए हैं जो संतानों की निरंतरता के लिए है। भोजन को जीवन के साधन के रूप में बनाया जाता है, और मादाओं को प्रजातियों की निरंतरता के साधन के रूप में बनाया जाता है। लेकिन खाद्य पदार्थ और महिलाएं अपनी जन्मजात गुणवत्ता के अधिकार पर विशेष नहीं हैं। यदि इस मामले को उन्हें विशेष बनाने के नियमों को परिभाषित किए बिना छोड़ दिया जाता है [केवल कुछ के लिए], तो लोगों ने इसकी उपेक्षा की होती और आपस में लड़ाई लड़ी होती, और यह उन्हें [परमेश्वर के पास] मार्ग पर चलने से विचलित कर देता; वास्तव में, यह उन्हें विनाश की ओर ले जाता।

इसलिए, कुरान ने बिक्री, सूदखोरी, ऋण देने और प्राप्त करने, उत्तराधिकारों के विभाजन, आवश्यक खर्चों के कारणों, लूट के विभाजन, दान, विवाह, दासों की मुक्ति और युद्ध में कैदियों को ले जाने से संबंधित छंदों में धन के संबंध में विशेषता के नियमों की व्याख्या की है। कुरान ने धन के संबंध में विशेषता के तरीके को भी परिभाषित किया है, आरोप के समय, स्वीकारोक्ति, शपथ और गवाहों द्वारा। जहां तक महिलाओं के संबंध में विशेषता का सवाल है, यह विवाह, तलाक, तलाक से वापसी, विधवा या तलाकशुदा महिला को दोबारा शादी करने से पहले सौंपी गई सेवानिवृत्ति की कानूनी अवधि, खुला (तलाक लेने का एक महिला का अधिकार), दहेज (शादी के समय उसके पति द्वारा महिला को देय एक अनिवार्य राशि) और उन महिलाओं से संबंधित छंदों में भी वर्णित है जिनके साथ रक्त संबंध और संबंध के कारण विवाह गैरकानूनी है। विवाह-संस्कार। उन तत्वों को खदेड़ने के साधन जो शरीर की सुदृढ़ता और संतान की

निरंतरता दोनों को भ्रष्ट करते हैं, वे दंड हैं जो मनुष्य को उन तत्वों से रोकते हैं। ये सज़ा हमलावरों के साथ युद्ध और अन्यायी लोगों के खिलाफ संघर्ष, दंड, क्षतिपूर्ति, फटकार, प्रायश्चित, रक्त-फिरौती [हत्या पीड़ितों के परिवारों के लिए] और [निर्दोष लोगों के खिलाफ किए गए गलत कामों के लिए] प्रतिशोध की तरह हैं। न्याय और रक्त-फिरौती को [दूसरे के] जीवन और अंग को नष्ट करने के प्रयास से निवारक के रूप में निर्धारित किया गया है। चोरी और राजमार्ग डकैती के लिए दंड को उस चीज को पीछे हटाने के साधन के रूप में निर्धारित किया गया है जो धन को नष्ट करता है, जो आजीविका का साधन है। व्यभिचार के लिए दंड, झूठे आरोप उस से निवारक के रूप में निर्धारित किए गए हैं जो संतानों और वंशों के मामलों को अव्यवस्थित करते हैं और मानव प्रजातियों और क्रमिक पीढ़ियों की निरंतरता के साधनों को भ्रष्ट करते हैं। हमलावरों के खिलाफ संघर्ष को उस चीज़ को प्रतिकर्षित करने के रूप में नियुक्त किया गया है जो सत्य को नकारने वालों के कारण होगा, अर्थात्, आजीविका और पूजा के साधनों की अव्यवस्था, दोनों के द्वारा ईश्वर को प्राप्त करने का कार्य पूरा होता है। अन्यायी लोगों के साथ संघर्ष को उस भ्रम को दूर करने का आदेश दिया जाता है जो तब प्रकट होता है जब अवज्ञाकारी लोग उस सरकार के नियंत्रण से फिसल जाते हैं जो उस व्यक्ति को सौंपा जाता है [यानी, नेता] जो उन लोगों की रक्षा करता है जो [ईश्वर के मार्ग] को पार करते हैं और धर्मियों का समर्थन करते हैं, सभी लोकों के भगवान के दूत के सहायक के रूप में। इन मामलों के बारे में प्रकट आयतें तुमसे छिपी नहीं हैं। वे मौलिक सिद्धांतों, फायदे, ज्ञान और लाभों को मूर्त रूप देते हैं, जो सभी को वह व्यक्ति समझता है जो प्रकट [दिव्य] कानून की सुंदरता पर विचार करता है जो इस जीवन के मामलों से संबंधित निर्णयों की सीमाओं का वर्णन करता है। इस छठे विभाजन [कुरान की आयतों के भी] में वह शामिल है जिसे वैध, गैरकानूनी और ईश्वर की सीमाएं कहा गया है। यह इस विभाजन के अंतर्गत आने वाले छंदों में है कि सबसे मजबूत कस्तूरी पाई जाती है।

ये [कुरान की सभी आयतों के छह विभाजन या वर्गीकरण] तब उन शिक्षाओं का संगम बनाते हैं जो कुरान के अध्यायों और उनकी आयतों में निहित हैं। यदि आप इन छह विभाजनों को उनकी इच्छित शाखाओं के साथ एक स्ट्रिंग पर पिरोते हैं, तो आप पाएंगे कि [कुरान की आयतों के] दस प्रकार हैं। [वे ईश्वरीय सार [या ईश्वर का होना/ *धात*], दिव्य गुण [*सिफत]*, दिव्य कार्य (*अफल),* आने वाला जीवन [इस सांसारिक जीवन के मृत्यु के साथ समाप्त होने के बाद], सीधा मार्ग (यानी, ईश्वर और ज्ञानवाद या मारिफा की ओर जाने वाला आध्यात्मिक मार्ग), शुद्धिकरण और सौंदर्यीकरण [आत्मा की, यानी, *तज़कियाह* या आध्यात्मिकता से संबंधित शिक्षाएं जो ईश्वर की ज्ञान की ओर मार्गदर्शन करती हैं], संतों की स्थितियाँ (जिन्होंने सूक्ति और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त की), ईश्वर को अस्वीकार करने वालों की शर्तें, अविश्वासियों के साथ [उनकी] बहस [उन्हें सत्य का प्रकाश देखने में मदद करने के लिए], और [अंत में] कानूनी निर्णयों की सीमाएँ [मानव समाजों के लाभ के लिए जीवन, संपत्ति, शांति और समृद्धि को संरक्षित करने के लिए]।

दिल का पॉलिश किया हुआ दर्पण और उसमें परिलक्षित होने वाली सच्चाई का प्रकाश

ग़ज़ाली आत्मा की वास्तविकता के बारे में और विस्तार से बताती है कि कैसे यह ईश्वर की सूक्ति ("मारिफा") की स्थिति तक पहुंचने में सक्षम है, जो मानव जीवन का उद्देश्य है और जिस पर शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की प्राप्ति निर्भर करती है, तीसरे खंड में (जिसे "आत्मा के विनाशकों का चौथाई" भी कहा जाता है) उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "*इह्या 'उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" (4 खंड) इस प्रकार है [10]:

यह ज्ञात होना चाहिए कि ज्ञान का स्थान हृदय है, जिससे मेरा तात्पर्य सूक्ष्म सूक्ष्म पदार्थ से है जो शरीर के सभी अंगों पर शासन करता है और उसके सभी सदस्यों द्वारा पालन और सेवा की जाती है। समझदार की वास्तविक प्रकृति के साथ अपने संबंध में, यह बदलते दिखावे के रूपों के संबंध में एक दर्पण की तरह है। क्योंकि जिस तरह जो बदलता है, उसका एक रूप होता है, और उस रूप की छवि दर्पण में परिलक्षित होती है और उसमें दर्शाई जाती है, उसी तरह हर समझदार की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है, और इस प्रकृति का एक रूप होता है जो हृदय के दर्पण में परावर्तित और प्रकट होता है। यहां तक कि दर्पण एक चीज है, व्यक्तियों के रूप दूसरे, और दर्पण में उनकी छवि का प्रतिनिधित्व एक तिहाई। इस प्रकार, कुल मिलाकर तीन चीज़ें, इसलिए यहाँ भी तीन चीज़ें हैं: हृदय, चीज़ों की विशिष्ट प्रकृति और हृदय में इनका प्रतिनिधित्व और उपस्थिति। बुद्धि उस हृदय के लिए खड़ी है जिसमें चीजों की विशिष्ट प्रकृति की छवि मौजूद है। समझदार चीजों की विशिष्ट प्रकृति के लिए खड़ा है। समझ दर्पण में छवि के प्रतिनिधित्व के लिए खड़ा है।

उदाहरण के लिए, लोभी के कार्य के साथ-साथ उस चीज की आवश्यकता होती है जो पकड़ता है, जैसे कि हाथ, जिसे पकड़ा जाता है, जैसे तलवार, और तलवार को हाथ में रखकर तलवार और हाथ को एक साथ लाने का कार्य जिसे लोभी का कार्य कहा जाता है, इसलिए दिल में समझदार की छवि की उपस्थिति को भी समझ कहा जाता है। वास्तविकता अस्तित्व में थी और इसलिए हृदय में भी थी लेकिन कोई समझ मौजूद नहीं थी, क्योंकि समझ हृदय में वास्तविकता की उपस्थिति के लिए खड़ी है। इसी तरह, तलवार भी अस्तित्व में थी और हाथ भी, लेकिन 'पकड़ने और पकड़ने की क्रिया' नाम की कुछ भी नहीं थी क्योंकि तलवार वास्तव में हाथ में नहीं आई है। यह सच है कि लोभी का अर्थ है हाथ में तलवार की उपस्थिति, जबकि समझदार स्वयं हृदय में नहीं आता है। क्योंकि आग स्वयं उस व्यक्ति के हृदय में नहीं आती है जो आग को जानता है, बल्कि वह जो वास्तव में उसकी परिभाषा और वास्तविक प्रकृति में मौजूद है जो उसके रूप से मेल खाती है। इसलिए, दर्पण के साथ हृदय की तुलना अधिक उपयुक्त है, क्योंकि मनुष्य स्वयं वास्तव में दर्पण में मौजूद नहीं है, लेकिन केवल एक छवि मौजूद है जो उससे मेल खाती है, और इस प्रकार, समझदार की वास्तविक प्रकृति के अनुरूप हृदय में एक छवि की उपस्थिति को समझ कहा जाता है।

दर्पण पांच कारणों से रूपों को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है: पहला, इसके गठन में एक दोष के कारण, उदाहरण के लिए, कच्चे लोहे का एक टुकड़ा इसे मोड़ने और आकार देने और पॉलिश करने से पहले; दूसरा, इसकी सतह पर गंदगी और जंग और सुस्ती के कारण, भले ही यह गठन में एकदम सही हो; तीसरा, क्योंकि यह वस्तु की दिशा से किसी और चीज़ की ओर मुड़ जाता है, उदाहरण के लिए, यदि वस्तु दर्पण के पीछे थी; चौथा, दर्पण और वस्तु के बीच रखे गए घूंघट के कारण; और पांचवां, वांछित वस्तु की दिशा की अज्ञानता के कारण, ताकि इसे वस्तु की स्थिति और दिशा के सामने रखना असंभव हो।

इसी तरह, हृदय एक दर्पण है जो इसमें सभी चीजों की वास्तविकता की वास्तविक प्रकृति को प्रतिबिंबित करने के लिए तैयार है। दिलों में ज्ञान की कमी होती है, जिसकी कमी केवल निम्नलिखित पांच कारणों से होती है:

पहला कारण अपने स्वयं के स्वभाव में एक अपूर्णता है, जैसे कि एक बच्चे का दिल जो अपनी अपूर्णता के कारण समझदार चीजों को प्रतिबिंबित नहीं करता है।

दूसरा कारण अवज्ञा के कार्यों के कारण सुस्ती और कई वासनाओं के कारण हृदय के चेहरे पर जमा गंदगी के कारण है, क्योंकि ये हृदय की पवित्रता और स्वच्छता को रोकते हैं। वास्तविकता अपने अंधेरे और उस पर जमा गंदगी के अनुपात में उसमें प्रकट होना बंद कर देती है। इसके लिए, ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने अपने कथन का उल्लेख किया, "जब कोई व्यक्ति पाप करता है, तो उसके मन की कुछ चीज उसे छोड़ देती है और फिर से उसके पास वापस नहीं आती है। कहने का तात्पर्य यह है कि उसके दिल में एक नीरसता आती है जिसका प्रभाव हमेशा के लिए रहता है, तब भी जब उसका उद्देश्य इसे एक अच्छे काम से दूर करना होता है। लेकिन अगर उसने पिछले बुरे काम के बिना अच्छा काम किया होता, तो दिल निस्संदेह और अधिक चमकेगा। हालाँकि, जब बुरा कर्म पहले होता था, तो अच्छे कर्म का मूल्य खो जाता था, हालाँकि उसके द्वारा बुरे कर्म से पहले हृदय को उसकी स्थिति में बहाल कर दिया गया था, लेकिन इससे उसका प्रकाश नहीं बढ़ाया गया था। यह एक स्पष्ट नुकसान और एक अपरिहार्य दोष है। जिस दर्पण पर दाग लगा दिया गया है और फिर पॉलिशिंग कपड़े से पोंछ दिया गया है, वह उस तरह नहीं है जिसे बिना किसी पिछले दाग के अपनी स्पष्टता बढ़ाने के लिए पॉलिशर से पोंछ दिया गया है। इसलिए परमेश्वर की आज्ञाकारिता अपनाना और भूखों की माँगों का विरोध करना, हृदय को उज्ज्वल करना और उसे शुद्ध करना। तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहते हैं-

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ

"जो लोग हमारे तरीकों से प्रयास करते हैं, हम निश्चित रूप से और निश्चित रूप से उन्हें अपने मार्गों पर मार्गदर्शन करेंगे। (कुरान, अध्याय 29, श्लोक 69)

ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: "ईश्वर उसे ज्ञान का उत्तराधिकारी बनने के लिए प्रेरित करता है जो सबसे अच्छा काम करता है जिसे वह जानता है कि वह नहीं जानता है। (यह कथन अनस के अधिकार पर "अबू नईम" नामक भविष्यद्वाणी परंपराओं के संग्रह में बताया गया है)।

तीसरा कारण यह है कि हृदय को वास्तविकता की दिशा से दूर किया जा सकता है जो खोजी जाती है। परमेश्वर के धर्मी और आज्ञाकारी सेवक का हृदय, यद्यपि उज्ज्वल है, वास्तविकता का स्पष्ट कथन नहीं हो सकता है, क्योंकि वह वास्तविकता की खोज नहीं करता है, न ही उसके पास मांगी गई वस्तु की दिशा के विपरीत अपना दर्पण [हृदय का] है। शायद, उसका सारा ध्यान शारीरिक अधीनता की गहराई या उसकी आजीविका के साधनों की व्यवस्था करने से लिया जाता है और उसका विचार ईश्वरीय उपस्थिति और छिपी हुई दिव्य वास्तविकताओं पर विचार करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। इसलिए उसके सामने केवल वही प्रकट होता है जिसके बारे में वह सोचता है, चाहे वह उसके धार्मिक कार्यों के सूक्ष्म दोष हों या आत्मा के छिपे हुए दोष यदि वे उसके दिमाग पर कब्जा कर लेते हैं, या यदि वह उनके बारे में सोचता है तो आजीविका प्राप्त करने के हित हैं। यदि किसी का ध्यान कार्यों और आज्ञाकारिता के कार्यों के विवरण पर सीमित करना, स्पष्टता के साथ वास्तविकता के रहस्योद्घाटन को रोकता है, तो उस व्यक्ति के बारे में आपका क्या अनुमान है जो अपनी ऊर्जा इस वर्तमान दुनिया की वासनाओं और सुखों और उससे जुड़ी चीजों में खर्च करता है? ऐसे व्यक्ति से सच्चे प्रकाशन का पर्दा कैसे नहीं डाला जाना चाहिए?

चौथा कारण है घूंघट। आज्ञाकारी व्यक्ति जिसने अपनी भूख पर काबू पा लिया है और खुद को एक निश्चित विशिष्ट वास्तविकता के लिए विशेष रूप से समर्पित कर दिया है, हो सकता है कि उसे यह प्रकट न किया

जाए क्योंकि यह उसके बचपन से ही किसी विश्वास से छिपा हुआ है, और उसने आँख बंद करके इसका पालन किया है और अच्छे विश्वास में इसे स्वीकार किया है। यह विश्वास उसे वास्तविकता की वास्तविक प्रकृति से दूर करता है और उन सिद्धांतों की सख्त व्याख्याओं के विरोध में उनके दिल में कुछ भी प्रकट होने से रोकता है जिन्हें उन्होंने आँख बंद करके स्वीकार कर लिया है। यह भी एक बड़ा पर्दा है जो अधिकांश मुस्लिम विद्वानों और उन लोगों पर हावी हो जाता है जो न्यायिक स्कूलों के उत्साही अनुयायी हैं, यदि अधिकांश धर्मी पुरुष नहीं हैं जो स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभुत्व पर विचार करते हैं; क्योंकि वे अपनी हठधर्मिता के आँख बंद करने से छिपे हुए हैं जो उनकी आत्माओं में कठोर हो गए हैं और उनके दिलों में मजबूती से बस गए हैं, और उनके और वास्तविकताओं की धारणा के बीच एक पर्दा बन गए हैं।

पांचवां कारण उस दिशा की अज्ञानता है जिससे मांगी गई वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाना चाहिए। क्योंकि नौसिखिया उस चीज़ का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता जो अज्ञात है, सिवाय इसके कि वह उन विज्ञानों को याद करके जो उसकी इच्छा से संबंधित हैं। एक बार जब वह उन्हें याद करता है और उन्हें अपने भीतर एक विशेष क्रम में व्यवस्थित करता है, जिसके लिए सीखा गया नाम 'कटौती की प्रक्रिया', तो उसे मांगी गई वस्तु की दिशा मिल जाएगी और उसकी वास्तविक प्रकृति उसके दिल में स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाएगी। क्योंकि जो चीजें सहज नहीं हैं जिन्हें कोई जानना चाहता है, उन्हें अर्जित ज्ञान के जाल के अलावा नहीं पकड़ा जा सकता है; वास्तव में, ज्ञान की कोई भी वस्तु ज्ञान की दो पूर्ववर्ती वस्तुओं को छोड़कर प्राप्त नहीं की जाती है जो एक विशेष तरीके से संबंधित और संयुक्त होते हैं, और उनके संयोजन से ज्ञान की एक तीसरी वस्तु प्राप्त होती है। ज्ञान की प्रत्येक वस्तु के दो विशेष स्रोत होते हैं और उनके संयोजन का एक विशेष तरीका होता है और इस संयोजन से ज्ञान की व्युत्पन्न वस्तु प्राप्त होती है जिसकी मांग की जाती है। इन स्रोतों की अज्ञानता और उनके संयोजन के तरीके के बारे में समझ में बाधा डालता है। इसके एक उदाहरण के रूप में, पहले से ही उल्लेख किया गया है कि वस्तु किस दिशा में है, इसकी अज्ञानता है।

एक और उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति का है जो अपना चेहरा आईने में देखना चाहता है। यदि वह दर्पण को अपने चेहरे के सामने रखता है, तो वह इसे अपने चेहरे की स्थिति के विपरीत नहीं रखता है, जो इस प्रकार उसमें दिखाई नहीं देता है। यदि वह इसे अपने चेहरे के पीछे रखता है और उसका सामना करता है, तो उसने दर्पण को अपनी आंखों से दूर कर दिया है और इसलिए वह दर्पण या उसमें चेहरे के प्रतिबिंब को नहीं देख सकता है। इसलिए, उसे अपने चेहरे के पीछे रखने के लिए एक और दर्पण की आवश्यकता होती है, जिसमें पहला दर्पण इस तरह से होता है कि वह इसे देख सके और उसे दो दर्पणों को रखने के बीच उचित संबंध का निरीक्षण करना चाहिए ताकि उसके चेहरे की छवि उसके विपरीत दर्पण में प्रतिबिंबित हो, और इस दर्पण की छवि दूसरे दर्पण में परिलक्षित होती है जो आंख का सामना करती है। तब आंखें उसके चेहरे की छवि को समझती हैं। इसलिए, ज्ञान की खोज में, ऐसे अजीब तरीके हैं जिनमें कुटिल मोड़ और तिरछे तरीके हैं, जो दर्पण के संबंध में हमने बताए गए लोगों की तुलना में अजनबी हैं, और वास्तव में पृथ्वी के चेहरे पर दुर्लभ वह है जो उन स्पष्ट तरीकों से स्पष्ट रूप से देखने के तरीके के लिए निर्देशित है।

ये वे कारण हैं जो हृदय को चीजों की वास्तविक प्रकृति को जानने से रोकते हैं। अन्यथा, प्रत्येक हृदय संवैधानिक रूप से वास्तविकताओं को जानने में सक्षम है, क्योंकि यह एक प्रभुत्वपूर्ण और महान चीज है, जो इस विशेष संपत्ति और महान गुण द्वारा दुनिया के अन्य पदार्थों से अलग है, जिसके लिए इसे सर्वशक्तिमान ईश्वर के कथन द्वारा संदर्भित किया गया है:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا
ٱلْإِنسَٰنُ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

"निश्चय ही हम ने स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों पर भरोसा चढ़ाया, और उन्होंने इसे सहने से इन्कार किया और डरते थे, परन्तु मनुष्य ने उसे धारण करने का वचन दिया। वास्तव में, वह अन्यायी और अज्ञानी था। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)

यह उस विशेष विशेषता को संदर्भित करता है जो मनुष्य को स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों से अलग करती है, जिसके द्वारा वह परमेश्वर के भरोसे को सहन करने में सक्षम होता है। यह विश्वास अनुभवात्मक (आध्यात्मिक) ज्ञान और एकेश्वरवाद है।

हर इंसान का दिल अपने मूल संविधान में इस भरोसे को निभाने के लिए उपयुक्त और सक्षम होता है, लेकिन जिन कारणों का हमने उल्लेख किया है, वे उसे इस बोझ को उठाने और इस विश्वास को साकार करने से रोकते हैं। इस संबंध में, ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: "प्रत्येक बच्चा 'फित्रा' (मनुष्य की सच्ची जन्मजात प्रकृति जो ईश्वरीय वास्तविकता और सार्वभौमिक सत्य के साथ पूरी तरह से अनुरूप है) पर पैदा होता है, और यह केवल उसके माता-पिता हैं जो उसे यहूदी, ईसाई या मैगियन बनाते हैं। (यह कथन भविष्यसूचक कथनों के संग्रह द्वारा रिपोर्ट किया गया है पैगंबर साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर सहीह मुस्लिम)। ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने आगे कहा: "यदि यह तथ्य नहीं होता कि शैतान आदम के बच्चों (यानी, मनुष्यों) के दिलों पर मंडराते हैं, तो वे स्वर्ग के प्रभुत्व को देखने में सक्षम होते। यह इनमें से कई बाधाओं का संदर्भ है जो हृदय और प्रभुत्व के बीच का पर्दा हैं।

इसका संदर्भ इब्ने उमर (रइश्वर उनसे प्रसन्न हो) के अधिकार के कथन में भी है, जिसमें उन्होंने कहा: "ईश्वर के दूत (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) से पूछा गया था: 'हे ईश्वर के दूत! भगवान कहाँ है? धरती पर या स्वर्ग में?' उसने उत्तर दिया: 'उसके विश्वासी प्राणियों के दिलों में। एक खास कहानी के मुताबिक, परमेश्वर ने कहा: "न तो मेरी धरती और न मेरे स्वर्ग में मैं रह सकता था, लेकिन मेरे दास का कोमल और शान्त मन। यह आगे बताया गया है कि ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से पूछा गया था: "पुरुषों में सबसे अच्छे कौन हैं?" उसने उत्तर दिया: "हर एक विश्वासी जिसका हृदय शुद्ध हो जाता है [और सभी आंतरिक गंदगी से शुद्ध हो जाता है]। उन्होंने पूछा: "शुद्ध हृदय क्या है?" उसने उत्तर दिया: "यह ईश्वर का भय मानने वाला शुद्ध हृदय है जिसमें न तो कोई धोखाधड़ी, न असमानता, न विश्वासघात, न विद्वेष, न ईर्ष्या [इस प्रकार हृदय शुद्ध और सभी बुराइयों से रहित है]।

इस संदर्भ में, उमर इब्ने अल-खत्ताब (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "मेरे दिल ने मेरे रब को तब देखा, जब धर्मपरायणता के कारण, उन्होंने पर्दा हटा दिया। क्योंकि यदि स्वयं और उसके हृदय के बीच का पर्दा उठा लिया जाता है, तो दृश्य भौतिक संसार और अदृश्य अदृश्य का प्रभुत्व उसके हृदय में स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है, और वह एक बगीचा देखता है, जिसके एक हिस्से की चौड़ाई आकाश और पृथ्वी की है। इसका कुल विस्तार आकाश और पृथ्वी से भी बड़ा है, क्योंकि आकाश और पृथ्वी दृश्य भौतिक दुनिया के लिए खड़े हैं, जो हालांकि, विस्तार में व्यापक और कम्पास में दूरगामी है, फिर भी पूरे के संबंध में सीमित है। लेकिन अदृश्य अदृश्य का प्रभुत्व असीम है, जिसमें वे रहस्य शामिल हैं जो आंखों की दृष्टि से परे हैं

और केवल अंतर्दृष्टि से ही देखे जाते हैं। यह सच है कि इसका केवल एक हिस्सा ही आंखों को दिखाई देता है और केवल अंतर्दृष्टि से ही महसूस किया जाता है। यह सच है कि इसका केवल एक हिस्सा ही हृदय को दिखाई देता है, लेकिन अपने आप में और ईश्वर के ज्ञान के संबंध में, यह अनंत है।

भौतिक दुनिया और अदृश्य प्रभुत्व को एक वर्गीकरण के तहत एक साथ लिया जाता है, जिसे प्रभुत्वीय उपस्थिति कहा जाता है, क्योंकि प्रभुत्वीय उपस्थिति सभी मौजूदा चीजों को शामिल करती है। क्योंकि ईश्वर, उसके कार्यों और [उसके] प्रभुत्व के अलावा कुछ भी अस्तित्व में नहीं है; और उसके सेवक उसके कामों का एक हिस्सा हैं। कुछ लोगों के अनुसार, हृदय को जो दिखाई देता है, वह स्वयं उद्यान है; लेकिन सत्य के लोगों के अनुसार, यह बगीचे के योग्य होने का साधन है और बगीचे में उसके कब्जे की सीमा उसके ज्ञान की सीमा के अनुपात में है, और जिस हद तक भगवान और उसके गुण और उसके कार्य उसके सामने प्रकट हुए हैं। अंगों की पूजा और कार्यों के इन सभी कार्यों का उद्देश्य हृदय की शुद्धि, सुधार, रोशनी और ज्ञान है। क़ुरआन में ख़ुदा कहते हैं:

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ﴿٩﴾

"समृद्ध [सफल और खुशी का प्राप्तकर्ता] वह है जो इसे (यानी, हृदय) शुद्ध करता है। (कुरान, अध्याय 91, श्लोक 9)

[आंतरिक] शुद्धिकरण का उद्देश्य इसमें विश्वास की रोशनी प्राप्त करना है; मेरा मतलब है कि ईश्वर के ज्ञान का चमकता हुआ प्रकाश (यानी, सूक्ति या *"मारिफा"*)। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कथन में यही बात है:

فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ

"ईश्वर जिसे भी मार्गदर्शन करना चाहता है, वह इस्लाम के लिए अपने हृदय का विस्तार करता है (यानी, ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण और आत्मा की पवित्रता और रोशनी जो विश्वास का सच्चा प्रकाश और ईश्वर की ज्ञानता इसमें लाती है)। (कुरान, अध्याय 6, श्लोक 125)

أَفَمَن شَرَحَ ٱللَّهُ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَٰمِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِۦ

"फिर, क्या वह जिसका हृदय परमेश्वर ने उसके प्रति आत्म-समर्पण की इच्छा के साथ खोल दिया है, ताकि वह अपने पालनकर्ता (यानी, भगवान) से एक प्रकाश [जो बहता है] से प्रकाशित हो, [हृदय के अंधे और बहरे से तुलना की जा सके?]" (कुरान, अध्याय 39, श्लोक 22)

इस रोशनी और विश्वास [और ईश्वर में निश्चितता] की तीन डिग्री हैं: पहली डिग्री आम लोगों का विश्वास है जो विशुद्ध रूप से अंधी नकल है। दूसरी डिग्री शैक्षिक धर्मशास्त्रियों का विश्वास है जो तार्किक तर्क के साथ मिश्रित है। तीसरी डिग्री ज्ञानवादियों का विश्वास है, जो निश्चितता [और विश्वास की निश्चितता] के प्रकाश के साथ स्पष्ट रूप से देख रहा है।

मैं आपको एक उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट कर दूंगा: उदाहरण के लिए, आपकी स्वीकारोक्ति कि जैद, सदन में है, तीन डिग्री है। पहला यह है कि किसी ने आपको बताया है, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आपने सच्चा होने का अनुभव किया है और कभी भी झूठ बोलने के लिए नहीं जाना जाता है और कभी भी उसके वचन पर संदेह नहीं किया है। आपका हृदय, मात्र सुनने से, शांति से उसकी रिपोर्ट प्राप्त करता है और उससे संतुष्ट होता है। यह केवल अंध स्वीकृति से विश्वास है, और इस तरह की प्रकृति आम लोगों का

विश्वास है। क्योंकि जब वे भेदभाव की उम्र में पहुंचे, तो उन्होंने अपने पिता और माताओं से ईश्वर के अस्तित्व, उसके ज्ञान, इच्छा, शक्ति और उसके बाकी गुणों के बारे में सुना; साथ ही ईश्वर के रसूल पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), उनकी सत्यता और उनका संदेश भी भेजा गया है। उन्होंने जैसा सुना वैसा ही प्राप्त किया और उसमें स्थापित हो गए और उससे संतुष्ट हो गए, और उनके मन में कभी भी यह नहीं आया कि वे अपने पिता, माताओं और शिक्षकों ने उन्हें जो बताया उससे असहमत हों क्योंकि उन्होंने उन्हें उच्च सम्मान दिया था। यह विश्वास परलोक में उद्धार का कुशल कारण है, और जो लोग इसे अपनाते हैं वे दाहिने हाथ के लोगों (यानी, सबसे निम्न) रैंक में हैं (यानी, वे लोग जो उद्धार प्राप्त करेंगे) लेकिन उन लोगों में से नहीं हैं जो परमेश्वर के करीब आते हैं। क्योंकि इस [स्तर] विश्वास में एक रहस्यमय अनावरण है, न ही अंतर्दृष्टि, न ही निश्चितता के प्रकाश से हृदय का विस्तार, क्योंकि त्रुटियों के लिए व्यक्तियों से जो सुना जाता है, न कि वास्तव में समूहों से, जो सिद्धांत से संबंधित है, उसमें झूठ बोलना संभव है। यहूदियों और ईसाइयों के दिल भी अपने पूर्वजों से जो सुनते हैं उससे संतुष्ट होते हैं। मुसलमान सच्चाई पर विश्वास करते हैं, इसलिए नहीं कि उन्होंने इसका अध्ययन किया है, बल्कि इसलिए कि सत्य का वचन उन्हें दिया गया है।

विश्वास की दूसरी डिग्री यह है कि आप [स्वयं] घर के भीतर से जैद के शब्दों और आवाज को सुनते हैं, लेकिन एक दीवार के पीछे से और आप इससे घर में उसकी उपस्थिति के तथ्य का अनुमान लगाते हैं। तब आपका विश्वास, आपकी स्वीकारोक्ति और आपकी निश्चितता कि वह घर में है, केवल सुनी-सुनाई बातों के माध्यम से आपके विश्वास से अधिक मजबूत है। क्योंकि यदि आपको बताया जाता है कि वह घर में है और फिर यदि आप उसकी आवाज सुनते हैं, तो आप इसके बारे में और अधिक निश्चित हो जाते हैं, क्योंकि आवाज उस व्यक्ति को आकार और रूप को इंगित करती है जो इसे रूप को देखने की शर्त पर सुनता है। इसलिए, उसका दिल इसे उस व्यक्ति की आवाज मानता है। यह प्रमाण के साथ मिश्रित विश्वास है। त्रुटि का पालन करना भी संभव है क्योंकि एक आवाज दूसरी आवाज के समान हो सकती है। साथ ही, आवाज की नकल करने के माध्यम से दिखावा संभव है। यह सुनने वाले के दिमाग में नहीं आता है, क्योंकि उसने इस तरह के किसी आरोप के बारे में नहीं सोचा था, या किसी का भी इस तरह के विघटन और नकल का कोई उद्देश्य था।

विश्वास की तीसरी डिग्री घर में प्रवेश करना और उसे देखना और उसे अपनी आंखों से देखना है। यह वास्तविक अनुभवात्मक ज्ञान और निश्चित अवलोकन है। यह उन लोगों के ज्ञान की तरह है जो परमेश्वर के निकट आते हैं और सत्य के सच्चे प्रेमियों के बारे में कहते हैं, क्योंकि उनका विश्वास गवाही पर आधारित होता है। इस विश्वास में आम आदमी और शैक्षिक धर्मशास्त्रियों का विश्वास शामिल है और उनके पास यह बहुत स्पष्ट अतिरिक्त लाभ है जो त्रुटि की संभावना के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता है। यह सच है कि इस वर्ग के विश्वासी ज्ञान में उनकी उपलब्धियों और अनावरण की डिग्री के अनुसार रैंक में भिन्न होते हैं।

ज्ञान की डिग्री में अंतर का एक उदाहरण यह है कि एक आदमी जैद को घर में तब देखता है जब वह आंगन में पास में होता है और जब सूरज उग रहा होता है और इसलिए वह उसे पूरी तरह से देखता है, जबकि दूसरा उसे कमरे में या कुछ दूरी पर या शाम को देखता है ताकि उसका रूप पर्याप्त रूप से स्पष्ट हो कि वह सुनिश्चित हो सके कि यह वह है, लेकिन उनके फॉर्म के सूक्ष्म विवरण और छिपी हुई विशेषताएं उन्हें स्पष्ट नहीं की गई हैं। ईश्वरीय रूप से प्रकट सत्यों को देखने की डिग्री में भिन्नता इस प्रकार की है। ज्ञान प्राप्ति में अंतर के संबंध में ऐसा लगता है जैसे घर में जैद, अम्र, बकर आदि को देखा जाता है जबकि दूसरा जैद को ही देखता है। ज्ञात चीजों की प्रचुरता के कारण पूर्व का ज्ञान निस्संदेह बाद वाले की तुलना में अधिक है।

यह विज्ञान के संबंध में हृदय की स्थिति है और परमेश्वर सबसे अच्छी तरह जानता है कि क्या सही है।
…..

दिल के चमत्कार और रहस्य

यह ज्ञात होना चाहिए कि हृदय के चमत्कार इस दायरे से परे हैं कि इंद्रियां क्या अनुभव करने में सक्षम हैं, क्योंकि हृदय भी इंद्रिय की धारणा से परे है। समझ इतनी कमजोर है कि समझ में नहीं आ रही है, सिवाय एक ठोस उदाहरण के माध्यम से, जो इंद्रियों के माध्यम से नहीं माना जाता है। इसलिए हम इसे दो उदाहरणों के माध्यम से कमजोर समझ वाले लोगों को समझाएंगे।

पहले उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि पृथ्वी में एक जलाशय खोदा गया है, जिसमें पानी को ऊपर की सतह से धाराओं के माध्यम से जमा किया जा सकता है जो इसमें बहती हैं। जलाशय के तल को भी खोदा जा सकता है और उसमें से गंदगी को तब तक हटाया जा सकता है जब तक कि शुद्ध पानी का फव्वारा न पहुंच जाए, और फिर उसमें से पानी तब तक फूटता रहता है जब तक कि शुद्ध पानी का फव्वारा न पहुंच जाए, और फिर पानी जलाशय के तल से फूट पड़ता है। पानी शुद्ध और अधिक स्थिर है और शायद अधिक प्रचुर और प्रचुर मात्रा में है। तब हृदय जलाशय की तरह होता है और ज्ञान जल की तरह होता है। पांच बाहरी इंद्रियां धाराओं की तरह हैं। ज्ञान को संभवतः [पांच] इंद्रियों की धाराओं के माध्यम से और तब तक देखी गई चीजों पर विचार करके हृदय तक पहुंचाया जा सकता है जब तक कि यह ज्ञान से भर न जाए। एकांत और सेवानिवृत्ति द्वारा इन धाराओं को इससे रोकना और आंखों को देखने से रोकना और फिर हृदय की गहराई में हल करना और इसे शुद्ध करने और उससे आवरणों की परतों को दूर करने के लिए जब तक कि ज्ञान का फव्वारा इसके भीतर से न फट जाए। लेकिन आप कह सकते हैं: "ज्ञान हृदय से ही कैसे फूट सकता है, जबकि वह इससे वंचित है?" जान लें कि यह दिल के रहस्यों के चमत्कारों में से एक है। व्यावहारिक धर्म के विज्ञान में इससे निपटने की अनुमति नहीं है [क्योंकि यह गूढ़ ज्ञान से संबंधित है]।

जो उल्लेख किया जा सकता है वह यह है कि चीजों की वास्तविक प्रकृति संरक्षित टैबलेट ("*लोह महफ़ूज़*") में लिखी गई है, और वास्तव में उन स्वर्गदूतों के दिलों में जो [दिव्य वास्तविकता के लिए] के करीब लाए गए हैं। जैसे ही एक वास्तुकार खाली कागज पर निर्माण की योजना बनाता है और फिर उन्हें डिजाइन या मूलरूप के अनुसार वास्तविकता में लाता है। इस प्रकार, आकाश और पृथ्वी के निर्माता ने संरक्षित टैबलेट पर शुरू से अंत तक दुनिया का एक आदर्श लिखा और फिर इसे मूलरूप के अनुसार वास्तविकता में लाया। उस दुनिया से जिसे मूलरूप की छवि में वास्तविकता में लाया गया है, बाहरी इंद्रियों और प्रतिधारण कल्पना को अभी भी एक और छवि प्रेषित की जाती है। क्योंकि जो कोई आकाश और पृथ्वी को देखता है और फिर अपनी आँखें बंद कर लेता है, वह अपनी कल्पना में आकाश और पृथ्वी की छवि को देखता है ताकि ऐसा हो जैसे वह उन्हें देख रहा हो; और यदि आकाश और पृथ्वी नष्ट हो जाते और वह स्वयं बच जाता, तो वह अपने भीतर आकाश और पृथ्वी की छवि को ऐसे पाता जैसे कि वह उन्हें देख रहा हो और उन्हें देख रहा हो। फिर उसकी कल्पना से, एक प्रभाव हृदय तक प्रेषित होता है, ताकि उसमें प्रतिनिधित्व किया जा सके, चीजों की वास्तविक प्रकृति जो संवेदना और कल्पना में प्रवेश कर गई है।

दिल में प्रतिनिधित्व उस दुनिया से मेल खाता है जिसे कल्पना में दर्शाया जाता है, जो बदले में दुनिया से मेल खाता है क्योंकि यह अपने आप में मौजूद है, मनुष्य की कल्पना और हृदय के लिए बाहर। यह

मौजूदा दुनिया संरक्षित टैबलेट में मौजूद मूलरूप से मेल खाती है। इस प्रकार, दुनिया के अस्तित्व के चार डिग्री हैं। संरक्षित टैबलेट में अस्तित्व है जो इसके भौतिक अस्तित्व से पहले है। इसकी अगली कड़ी इसका वास्तविक अस्तित्व है, जिसके बाद इसका कल्पनाशील अस्तित्व होता है - मेरा मतलब है कि कल्पना में इसकी छवि का अस्तित्व। इसके कल्पनाशील अस्तित्व के बाद इसका बौद्धिक अस्तित्व होता है, मेरा मतलब है कि हृदय के भीतर इसकी छवि का अस्तित्व। इनमें से कुछ होने के आदेश आध्यात्मिक हैं और कुछ भौतिक चरित्र के हैं। आध्यात्मिक में से, कुछ दूसरों की तुलना में अपने होने के क्रम में अधिक आध्यात्मिक हैं। यह ईश्वरीय ज्ञान से आने वाली एक दयालुता है क्योंकि परमेश्वर ने आपकी आंखों की पुतली को इस तरह से बनाया है कि, इसके छोटेपन के बावजूद, इसके भीतर दुनिया, आकाश और पृथ्वी की छवि को उनके सभी व्यापक रूप से फैले हुए विस्तार के साथ चित्रित किया गया है। फिर यह संवेदना के क्षेत्र में अस्तित्व से कल्पना में अस्तित्व तक जाता है, और इससे हृदय में अस्तित्व तक जाता है। क्योंकि तुम कभी भी किसी भी चीज़ को नहीं समझ सकते सिवाय उस चीज़ के जो तुम तक पहुँच गया है, और यदि उसने तुम्हारे अस्तित्व के भीतर पूरी दुनिया की छवि नहीं रखती, तो तुम्हें उस चीज़ का कोई ज्ञान नहीं होगा जो स्वयं से अलग है। उसकी महिमा हो, जिसने इन चमत्कारों को हृदय और आँखों में व्यवस्थित किया है और फिर हृदय और आँखों को उनकी धारणा के प्रति अंधा कर दिया है ताकि अधिकांश प्राणियों के हृदय स्वयं के और उनके चमत्कारों से अनभिज्ञ हो जाएँ।

आइए अब हम उस उद्देश्य पर वापस जाएं और कहें: "यह बोधगम्य है कि दुनिया की वास्तविक प्रकृति का प्रतिनिधित्व हृदय में किया जा सकता है, एक बार इंद्रियों से और एक बार संरक्षित टैबलेट से, भले ही यह बोधगम्य हो कि सूर्य की छवि को एक बार आंखों में सीधे देखने से और एक बार उस पानी को देखने से दर्शाया जाना चाहिए जिस पर सूर्य चमकता है जो प्रतिबिंबित करता है इसकी छवि। इसलिए, जब भी हृदय और संरक्षित टैबलेट के बीच पर्दा उठाया जाता है, तो हृदय उन चीजों को देखता है जो उसमें हैं और ज्ञान उसमें फूट पड़ता है, ताकि उसे इंद्रियों के रास्ते से अपना ज्ञान प्राप्त न करना पड़े। यह पृथ्वी की गहराई से पानी के फूटने के समान है। जब भी हृदय इंद्रियों से प्राप्त कल्पना में चीजों में व्यस्त हो जाता है, तो यह इसे संरक्षित टैबलेट की जांच करने से रोक देता है, जैसे कि जब पानी को धाराओं में संरक्षित किया जाता है, तो इसे पृथ्वी से फूटने से रोका जाता है; या जैसे ही वह पानी में देखता है जो सूर्य की छवि को दर्शाता है, वह स्वयं सूर्य को नहीं देख रहा है।

इस प्रकार, हृदय के दो दरवाजे हैं। एक द्वार अदृश्य के प्रभुत्व की ओर खुलता है जो संरक्षित टैबलेट और स्वर्गदूतों की दुनिया है। दूसरा द्वार पांच बाहरी इंद्रियों की ओर खुलता है जो दृश्य भौतिक दुनिया को पकड़ते हैं। यह दृश्यमान संसार भी कुछ हद तक अदृश्य के प्रभुत्व से मिलता-जुलता है। अब यह तथ्य कि इंद्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के लिए हृदय का द्वार खोला जाता है, यह एक ऐसी चीज है जिसे आप समझते हैं। लेकिन इसके दरवाजे के बारे में जो अदृश्य के प्रभुत्व और संरक्षित टैबलेट की जांच के लिए खुलता है, आपको दर्शन के चमत्कारों पर ध्यान करने और नींद में दिल के अवलोकन के माध्यम से कुछ ज्ञान है कि भविष्य में क्या होगा या अतीत में क्या था, इंद्रियों की ओर से किसी भी अधिग्रहण के बिना।

हालाँकि, यह द्वार केवल उसके लिए खोला जाता है जो स्वयं को केवल परमेश्वर की याद के लिए समर्पित करता है। ईश्वर के दूत, पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा है: "विचारों के एकाग्र दिमाग वाले लोगों ने नेतृत्व किया है। उनसे पूछा गया: "वे कौन हैं?" उसने जवाब दिया: "जो लोग परमेश्वर के स्मरण पर मोहित हैं, क्योंकि उनके इस भक्ति के अभ्यास ने अपने पापों का बोझ अपने ऊपर से हटा दिया है, और वे पुनरुत्थान के दिन पर बिना बोझ के आएंगे।" फिर उसने परमेश्वर के कथन का

वर्णन करते हुए उनका वर्णन किया: "तब मैं अपनी ओर मुंह करके उनकी ओर निकट आऊँगा। क्या तुम इस बारे में सोचते हो कि कोई क्या जानता है, मैं उसे कौन सी चीज देना चाहता हूँ, जिसकी ओर मैं अपना मुँह घुमाता हूँ?" फिर उसने कहा: "पहली बात जो मैं उन्हें देता हूँ वह यह है कि मैं अपने प्रकाश का कुछ उनके दिलों में डालता हूँ और जब मैं उनके बारे में समाचार देता हूँ तो वे मेरे बारे में समाचार देते हैं। (यह कथन हदीस संग्रह सहीह मुस्लिम, अल-हकीम, अल-बैहाकी और अत-तबारानी द्वारा भविष्यवक्ता साथी अबू हुरैरा के अधिकार पर रिपोर्ट किया गया है)।

इन ख़बरों का प्रवेश द्वार भीतरी द्वार है। तो फिर इसमें भविष्यवक्ताओं और संतों के ज्ञान और विद्वान और दार्शनिकों के ज्ञान के बीच का अंतर निहित है: पूर्व का ज्ञान हृदय के भीतर से उस द्वार के माध्यम से आता है जो अदृश्य के प्रभुत्व की ओर खोला जाता है, जबकि दार्शनिकों का ज्ञान इंद्रियों के द्वारों के माध्यम से आता है जो भौतिक दुनिया के लिए खुलते हैं। हृदय की दुनिया के चमत्कार और दृश्य और अदृश्य दुनिया के बीच इसके डगमगाने को व्यावहारिक धर्म के विज्ञान में पूरी तरह से नहीं निपटाया जा सकता है। लेकिन यह एक उदाहरण है जो आपको दो प्रकार के ज्ञान के प्रवेश के स्थान में अंतर सिखाएगा।

दूसरा उदाहरण आपको दो प्रकार के कार्यों के बीच अंतर बताएगा; मेरा मतलब विद्वानों का और संतों का काम है। सीखे गए लोग स्वयं ज्ञान प्राप्त करने और उसे हृदय में इकट्ठा करने का काम करते हैं, लेकिन सूफियों के बीच के संत, हृदय को चमकने, साफ करने, स्पष्ट करने और सुसज्जित करने के अंत तक ही श्रम करते हैं। यह संबंधित है कि एक बार चीनी और बीजान्टिन यूनानियों ने कला और चित्रकला में अपनी कारीगरी की सुंदरता के बारे में एक निश्चित राजा के सामने एक-दूसरे की प्रतिस्पर्धा की। इसलिए राजा ने उन्हें एक पोर्टिको देने का फैसला किया ताकि चीनी इसके एक तरफ और बीजान्टिन यूनानियों को दूसरी तरफ सजा सकें और उनके बीच एक पर्दा लटका दिया जाए ताकि प्रत्येक समूह दूसरे को देखने से रोका जा सके। बीजान्टिन अपने साथ कई सुंदर रंग लेकर आए, लेकिन चीनी बिना किसी रंग के प्रवेश कर गए और अपनी तरफ चमकाने और उसे सजाने लगे। जब बीजान्टिन समाप्त हो गए, तो चीनियों ने दावा किया कि वे भी समाप्त हो गए थे। राजा उनके बयान और जिस तरह से उन्होंने बिना किसी रंग के समाप्त और सजाया था, उससे आश्चर्यचकित था। तो उनसे पूछा गया: "आपने बिना किसी रंग के काम कैसे पूरा किया?" उन्होंने उत्तर दिया: "आपका इससे कोई लेना-देना नहीं है; बस घूंघट उठाओ। तो, इसे उठा लिया गया और दूसरी तरफ देखा, वहाँ बीजान्टिन कौशल के चमत्कारों को अतिरिक्त रोशनी और चमकदार चमक के साथ चमका रहा था, जबकि दूसरा पक्ष बहुत अधिक सुसज्जित होने के कारण एक पॉलिश किए गए दर्पण की तरह हो गया था। इस प्रकार, उनके पक्ष की सुंदरता इसकी अतिरिक्त स्पष्टता से बढ़ गई जो दूसरे पक्ष की सुंदरता को शानदार ढंग से दर्शाती थी। हृदय को शुद्ध करने, चमकाने और शुद्ध करने में संतों (या ज्ञानवादियों) की देखभाल जब तक कि वास्तविकता की वास्तविक प्रकृति अत्यंत रोशनी के साथ स्पष्ट रूप से सामने न आ जाए, तब तक यह चीनियों के काम की तरह है। ज्ञान प्राप्त करने और सजाने के बारे में विद्वानों और दार्शनिकों की देखभाल, और दिल में इस अलंकरण का प्रतिनिधित्व बीजान्टिन के काम की तरह है।

लेकिन जो भी हो, आस्तिक का हृदय कभी नहीं मरता है, न ही मृत्यु के समय उसका ज्ञान मिट जाता है और न ही उसकी स्पष्टता धुंधली हो जाती है। इस पर अल-हसन ने अपनी कहावत का उल्लेख किया: "धूल विश्वास के आसन को नहीं खाएगी। यह ज्ञान पहुँच का एक साधन है जो व्यक्ति को ईश्वर के निकट लाता है। लेकिन हृदय ने स्वयं ज्ञान से जो प्राप्त किया है, या जो उसने शुद्धता और हृदय पर लिखने वाले ज्ञान को प्राप्त करने की क्षमता प्राप्त की है, वह उसे अधिक ज्ञान से दूर करने में सक्षम नहीं बनाता है। रहस्यमय ज्ञान सीखने के अलावा किसी के लिए कोई खुशी नहीं है और कुछ हद तक खुशी दूसरों की

तुलना में महान है, जैसे पैसे के बिना कोई धन नहीं है। क्योंकि जिसके पास *दिरहम* है, वह धनवान है, और जिसके पास भंडार भरे हुए हैं, वह धनवान है। [शाश्वत] खुशी की डिग्री के बीच का अंतर रहस्यमय ज्ञान और विश्वास में उनके अंतर के अनुसार है, जैसे कि धन के पुरुषों की डिग्री के बीच का अंतर उनके पैसे की कमी और प्रचुरता के अनुसार होता है।

इस बिंदु पर, इस ग्रंथ का पहला भाग जो मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की प्राप्ति से संबंधित है, समाप्त हो जाता है। अब इस ग्रंथ का दूसरा भाग शुरू होता है।

दूसरा भाग: मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य तक पहुंचने और शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय की प्राप्ति के मार्ग की व्याख्या

इस ग्रंथ के पहले भाग में प्रस्तुत ग़ज़ाली की विभिन्न महान पुस्तकों के चयन भी जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के तरीकों और परिणामस्वरूप शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता की व्याख्या करते हैं। इस ग्रंथ के तीसरे भाग में इस उद्देश्य के लिए जबरदस्त लाभ की विभिन्न पुस्तकों की सूची दी जाएगी - उनमें से लगभग सभी ग़ज़ाली द्वारा लिखी गई हैं - जिनका अध्ययन सही मार्ग की अपार समझ और मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस ग्रंथ के इस दूसरे भाग में, एक भविष्यसूचक कथन और एक महान ज्ञानवादी की परंपरा को उस मार्ग पर व्याख्या करने के लिए प्रस्तुत किया जाएगा जो जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति और शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की प्राप्ति की ओर ले जाता है। भविष्यसूचक कथन इस महान आध्यात्मिक पथ की बाधाओं की व्याख्या करता है और परंपरा किसी के अंतिम लक्ष्य तक पहुंचने की विधि की व्याख्या करती है। ग़ज़ाली ने अपनी पिछली पुस्तक "*मिन्हाज अल-अबिदीन इला जन्नतु रब अल-अलमीन*" या "ईश्वर के उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग, उन्हें सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान के स्वर्ग की ओर ले जाना" में इस भविष्यसूचक कथन का उल्लेख किया है, और आडंबर और ज्ञान के अपने संग्रह के तीसरे खंड में दिखावा और दिखावा *करने के अध्याय में, "इह्या अल-उलूम अद-दीन"* या "ईश्वर के लिए मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" इस प्रकार है [11]:

अब्दुल्लाह बिन मुबारक (ईश्वर की दया उन पर बनी रहे) ने खालिद बिन मदान (ईश्वर की दया उन पर बनी रहे) से सुनाया है कि उन्होंने मुआद बिन जबल से अनुरोध किया था - एक महान भविष्यवक्ता साथी (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) - उन्हें एक हदीस (पैगंबर मुहम्मद की एक परंपरा [ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर बना रहे]) सुनाएं, जिसे उन्होंने अपनी कठिनाई और गंभीरता के कारण प्रतिदिन याद किया और पूर्वाभ्यास किया। मुआध (भगवान उससे प्रसन्न हों) ऐसा करने के लिए सहमत हो गए, लेकिन वह बहुत देर तक रोता रहा। फिर उन्होंने कहा:

"मैं पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मिलने के लिए कितनी उत्सुकता से तरसता हूं!

एक बार मैं पवित्र पैगम्बर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के साथ था। वह ऊंट की सवारी कर रहा था और वह (PBUH) मुझे अपने पीछे बैठने के लिए ले गया। जब हम आगे बढ़े, तो पवित्र पैगंबर (PBUH) ने आकाश की ओर देखा और कहा: "सभी प्रशंसा परमेश्वर के लिए है जो अपने प्राणियों

को आदेश देता है जैसा कि वह उचित समझता है। फिर मेरी ओर मुड़ते हुए, उसने (PBUH) कहा: "मैं तुमसे कुछ कह रहा हूं, अगर तुम इसे याद करोगे तो इससे तुम्हें फायदा होगा, लेकिन अगर तुम इसे भूल जाओगे तो तुम्हारे पास परम परमेश्वर के सामने कोई तर्क नहीं होगा।

मुआध! स्वर्ग बनाने से पहले, महामहिम परमेश्वर ने सात स्वर्गदूतों को बनाया, जो हर स्वर्ग के लिए एक थे और द्वार के आयामों के अनुसार आकाश के प्रत्येक द्वार पर एक स्वर्गदूत को एक रक्षक के रूप में नियुक्त किया था। जब दो [संरक्षक] देवदूत *'किरमन कतिबीन* (दो स्वर्गदूत जो हर इंसान के दो कंधों पर होते हैं और सभी कर्मों को दर्ज करते हैं, चाहे वे अच्छे हों या बुरे) सेवकों के कर्मों के साथ उठते हैं; उनमें सूर्य के प्रकाश के समान प्रकाश होता है। जब वे पहले स्वर्ग के द्वार पर पहुंचते हैं, तो वहां पहरेदार के रूप में खड़ा देवदूत 'किरमन *कतीबीन* (हर इंसान के संरक्षक देवदूत) से सेवक [भगवान के] (यानी, वह इंसान जिसके कार्यों को भगवान के पास ले जाया जा रहा है) के चेहरे पर काम करने के लिए कहता है। देवदूत कहता है: मैं 'चुगली' का दूत हूं। मेरे प्रभु, परमेश्वर ने मुझे आज्ञा दी है कि मुझे एक पिट्ठे के काम को ऊपर नहीं जाने देना चाहिए।

'कीरामन कतीबीन फिर से नौकर के कुछ और कर्मों के साथ दूसरे स्वर्ग पर चढ़ती है जो धूप की तरह चमकती है। देवदूत उन्हें वहीं रोकता है और उन्हें नौकर के चेहरे पर काम करने के लिए कहता है, क्योंकि इस काम से उसका इरादा सांसारिक संसाधनों को अर्जित करना था। मेरे परमेश्वर ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं उस व्यक्ति के काम को स्वीकार न करूं जिसने परमेश्वर के अलावा किसी और के लिए काम किया है। स्वर्गदूत तब उसे शाप देते हैं (इसके लिए अरबी शब्द "*लाना*" है जिसका अर्थ है भगवान को अपने सेवक से अपनी दया को रोकने के लिए बुलाना)।

तब स्वर्गदूत सेवक के अन्य [अच्छे] कर्मों जैसे भिक्षादान, उपवास और अन्य अच्छे कर्मों के साथ उठते हैं जिन्हें वे बहुत पुण्य और मूल्यवान मानते हैं। लेकिन जब वे तीसरे स्वर्ग पर पहुंचते हैं, तो रखवाली करने वाला देवदूत उन्हें रोकता है और उन्हें कर्ता के चेहरे पर कर्मों को थोपने के लिए कहता है। [रखवाली करने वाला] देवदूत कहता है कि वह 'गर्व' का दूत है। उसे उसके रब द्वारा आज्ञा दी गई है कि वह कर्मों को ऊपर न जाने दे, जैसा कि कर्ता कर्मों के माध्यम से अन्य लोगों पर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करना चाहता था [गर्व और अहंकार से]।

'कीरामन कतीबीन फिर से इस सेवक [भगवान के] कुछ और [अच्छे] कर्मों के साथ उठती है जो सितारों की तरह चमकते हैं। इनमें प्रार्थना, 'हज' (या तीर्थयात्रा), '*तस्बीह* (भगवान का स्मरण और महिमा), उपवास आदि जैसे सुंदर कार्य शामिल हैं। जब वे चौथे आसमान पर पहुँचते हैं, तो रखवाली करने वाला देवदूत उन्हें रोकता है और उन्हें कर्ता के चेहरे पर कर्मों को थोपने के लिए कहता है। स्वर्गदूत उनसे कहता है: मैं 'आत्म-धार्मिकता' का दूत हूं और मुझे मेरे रब द्वारा आज्ञा दी गई है कि कर्मों को [परमेश्वर के पास] ऊपर न चढ़ने दें क्योंकि कर्ता ने अपने कर्मों को आत्म-धार्मिकता के साथ मिलाया था।

फिर देवदूत उनके अन्य पुण्य कर्मों को दुल्हन की तरह सजाते हैं जिनमें '*हज*' (या तीर्थयात्रा), ईश्वर के मार्ग में प्रयास करना आदि शामिल हैं, जो सूर्य की तरह चमकते हैं। पांचवें आसमान पर ले जाते हैं। पहरा देने वाला देवदूत [पांचवें स्वर्ग के द्वार पर] उन्हें यह कहते हुए रोकता है: मैं 'ईर्ष्या' का दूत हूं। कर्ता उन लोगों से ईर्ष्या करता रहता है जिन्हें परमेश्वर ने अपनी दया से उन्हें अपना इनाम दिया है। मनुष्य परमेश्वर के उदार अनुदान [अपने साथी मनुष्यों को] से प्रसन्न नहीं है। मेरे रब ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं अपने कामों को ऊपर न जाने दूं।

फिर देवदूत अपने कर्मों जैसे स्नान, पूर्ण शुद्धि, प्रार्थना, उपवास, '*हज*' (या तीर्थयात्रा) आदि के साथ छठे स्वर्ग पर जाते हैं। वहां तैनात रक्षक देवदूत, उन्हें यह कहते हुए रोकता है: मैं 'दया' का दूत हूं। अपने कर्मों को उसके चेहरे पर थोप दिया क्योंकि उसने कभी किसी पर दया नहीं दिखाई। वह दूसरों को परेशानी और दुर्भाग्य में देखकर प्रसन्न होता था। मेरे रब ने मुझे आज्ञा दी है कि मुझे उसके कामों को ऊपर नहीं उठने देना चाहिए।

इसके बाद, *'कीरामन कटिबीन'* इस व्यक्ति के कुछ और कार्यों के साथ सातवें आसमान पर चढ़ती है जिसमें दान, प्रार्थना, उपवास, ईश्वर के मार्ग में प्रयास, '*तकवा*' (पवित्र भय, श्रद्धा और ईश्वर का भय) आदि शामिल हैं। ये कर्म गड़गड़ाहट और बिजली जैसी तेज आवाजें देते हैं। सातवें आसमान पर फरिश्ता कहता है: मैं 'प्रसिद्धि और दिखावा' का दूत हूं। इस व्यक्ति ने 'उलेमा' (विद्वानों) और पद और गरिमा के पुरुषों की कंपनी और सभाओं में घूमने के अपने कार्यों के माध्यम से प्रसिद्धि अर्जित करने का इरादा किया है। मेरे रब ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं इस आदमी के कामों को ऊपर न जाने दूं।

इस प्रकार, जो कार्य विशुद्ध रूप से महान ईश्वर के लिए नहीं किया गया है, वह '*रिया*' (दूसरों को प्रभावित करने के लिए किया गया दिखावा, आडंबर या कर्म) है और वह ऐसे कर्मों को स्वीकार नहीं करता है। तब देवदूत उनके अच्छे कर्मों जैसे प्रार्थना, *जकात* (अनिवार्य गरीब-देय या दान), '*हज*' (तीर्थयात्रा), *उमरा* (मिनी तीर्थयात्रा), सौहार्दपूर्ण चरित्र, मौन, ईश्वर का स्मरण आदि के साथ उठते हैं। सातवें स्वर्ग के स्वर्गदूत उनके साथ विदा करने के लिए तब तक जाते हैं जब तक कि वे दिव्य दरबार तक नहीं पहुंच जाते जहां सभी पर्दे हटा दिए जाते हैं और वे भगवान के सामने गवाही देते हैं कि इस सेवक के कार्य विशेष रूप से भगवान के लिए किए जाते हैं।

इस समय, महान परमेश्वर कहेंगे: हे स्वर्गदूत उन सेवकों के कामों की देखभाल करते हैं, परन्तु मैं उनके हृदय की देखभाल करता हूं। मैं जानता हूँ कि इन कर्मों के द्वारा, उसने मेरी प्रसन्नता की तलाश करने का इरादा नहीं किया था, न ही उसने उन्हें केवल मेरे लिए किया था। मुझे पता है कि वह वास्तव में अपने कर्मों से क्या चाहता था। मेरा '*लाना*' (मेरी दया से वंचित) उस पर हो कि उसने आपको और लोगों को भी धोखा दिया। हालाँकि, वह मुझे धोखा नहीं दे सकता था क्योंकि मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि दिलों के अंतरतम को छिपाया जाता है। कोई भी मुझसे छिपा नहीं रह सकता है और न ही मेरी पकड़ से बच सकता है, चाहे वह मुझसे दूर रहने की कितनी भी कठिन कोशिश करे। मुझे इस बात की पूरी जानकारी है कि अतीत में क्या हुआ है और भविष्य में क्या होगा। मेरा ज्ञान उन सभी को समाहित करता है जो मर चुके हैं और जो अभी आने वाले हैं। मैं उनके पूरे विवरण के साथ सभी रहस्यों से पूरी तरह वाकिफ हूं। कोई भी अपने कर्मों से मुझे धोखा नहीं दे सकता। मेरा सेवक अज्ञानियों को धोखा दे सकता है, लेकिन मुझे धोखा नहीं दे सकता, क्योंकि मैं अदृश्य का ज्ञाता हूं। इसलिए, मैं उस पर अपना '*लाना*' (मेरी दया से वंचित) भेजता हूं। सात [रखवाली करने वाले] स्वर्गदूत [जो सात स्वर्गों के द्वारों की रक्षा करते हैं] और तीन हजार स्वर्गदूत, सभी उस पर अपना 'लाना' (भगवान की दया से वंचित करने के लिए भगवान का आह्वान करते हुए) भेजते हैं। तब स्वर्गवासी कहते हैं कि उस पर उनका श्राप ('लाना') और ऐसे धोखेबाज को शाप देने वालों के शाप हैं।

इन सभी विवरणों को सुनने के बाद, मुआध (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) फूट-फूट कर रोने लगे और कहा: हे ईश्वर के दूत! इस आपदा से कैसे छुटकारा पाएं? पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: हे मुआद! अपने भविष्यवक्ता की पूरी आस्था और दृढ़ विश्वास के साथ आज्ञा का पालन करें। मुआद (ईश्वर

उस पर प्रसन्न हो) ने कहा: आप ईश्वर के दूत हैं और मैं मुआध बिन जबल हूं। मुझे उद्धार कैसे मिल सकता है? ईश्वर के पैगंबर (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: हे मुआद! यदि आपके कर्म सही नहीं हैं, तो अपनी जीभ को दूसरों के बारे में बुरा बोलने और दूसरों को अपमानित करने से बचाएं, विशेष रूप से अपने भाइयों और '*हफ़ाज़* (जिन्होंने पूरे पवित्र कुरान को दिल से किया है)। अपने भाइयों और अन्य व्यक्तियों के मामलों में हस्तक्षेप न करें। अपने स्वयं के बुरे स्व को जाने दें (*नफ्स*), दूसरों का अनादर करने से बचें। अपने मुस्लिम भाइयों के बारे में बुरा बोलकर अपनी प्रशंसा न करें। कभी भी दूसरों को नीचा दिखाकर श्रेष्ठता स्थापित करने के बारे में नहीं सोचो। प्रसिद्धि अर्जित करने के लिए आडंबर का सहारा न लें। अपने आप को दुनिया के मामलों में इतनी उत्सुकता से व्यस्त न करें कि परलोक के मामलों की पूरी तरह से उपेक्षा करें। अगर कोई आपके साथ बैठा है, तो तीसरे व्यक्ति से गुप्त रूप से बात न करें [या फुसफुसाएं]। लोगों के बीच अपनी श्रेष्ठता दूसरों के सामने व्यक्त न करें, ऐसा न हो कि आपके कर्म दुनिया में और परलोक में बर्बाद हो जाएं। अपनी सभाओं में बेशर्मी (अश्लीलता) और अश्लीलता के विषयों पर बात करने से बचें, ऐसा न हो कि लोग आपके दुर्व्यवहार के कारण तुमसे बच जाएं। अपनी जीभ से दूसरों के सम्मान को चोट न पहुंचाएं, ऐसा न हो कि नरक के कुत्ते आपको टुकड़े-टुकड़े कर दें। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने पवित्र कुरान में कहा है:

وَٱلنَّٰشِطَٰتِ نَشۡطٗا ٢

"और जब वे हड्डियों से मांस को फाड़ देते हैं। (कुरान, अध्याय 79, श्लोक 2)

फिर मैंने कहा: हे ईश्वर के दूत! इन सभी आदेशों पर कार्य करने की क्षमता किसके पास है? पैगंबर (PBUH) ने कहा: उस सेवक के लिए कार्रवाई आसान है जिसके लिए भगवान आराम प्रदान करते हैं। दूसरों के लिए वह नापसंद करता है जिसे आप अपने लिए नापसंद करते हैं। [इस तरह के कार्य आपको आपका उद्धार दिला सकते हैं]। (हाफिज इराकी ने किया है *ग़ज़ाली के "*इह्या उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार"* में मौजूद सभी *हदीसों का* हदीस प्रमाणीकरण और इस भविष्यसूचक परंपरा के स्रोत संदर्भ को "*किताब अज़्-ज़ुहद ली इब्न अल-मुबारक*" या "इब्न अल-मुबारक द्वारा बेस डिज़ायर्स से परहेज की पुस्तक" और "*इब्न अल-जावज़ी फी अल-मौदुआत*" के रूप में वर्णित किया गया है।

खालिद बिन मदान (ईश्वर उन पर दया करे) ने कहा कि मुआध ने पवित्र कुरान का उतना पाठ नहीं किया जितना उन्होंने इस *हदीस* (या भविष्यद्वाणी का वर्णन) पढ़ा। वह अक्सर अपनी सभाओं में इस *हदीस* के बारे में बात करते थे।

दिल भय और घुटन से कांप उठते हैं और मन इस हदीस (भविष्यसूचक कथन) में प्रकट चेतावनियों और बड़े जोखिमों के बारे में सोचकर परेशान हो जाते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि आप परमेश्वर की सुरक्षा और शरण प्राप्त करें और अपने आप को उसके द्वार पर रखें, रोते हुए और सभी विनम्रता और समर्पण के साथ पूरे दिन और रात। आपको इस पीड़ा से परमेश्वर की दया के अलावा कोई सुरक्षा नहीं है। तुम इस समुद्र को पार नहीं कर सकते बिना परमेश्वर की करुणा की दृष्टि के बिना। आपके लिए यह आवश्यक है कि आप लापरवाही की नींद से उठें, जीवन के उद्देश्य और उद्देश्य को समझें और इस भयानक घाटी में स्वयं के खिलाफ एक बहादुर संघर्ष शुरू करें, ताकि आप परलोक में मोक्ष प्राप्त कर सकें और उन लोगों के साथ न जा सकें जो नुकसान और बर्बादी के लिए अभिशप्त हैं। हालाँकि, सहायता केवल परमेश्वर से ही आएगी और वह ही सबसे दयालु है।

अब यहां एक महत्वपूर्ण कथन प्रस्तुत किया जाएगा जो जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने का तरीका बताता है। ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "*अय्युहाल वलाद*" या "माई डियर बिलीव सन" में इस कथन का उल्लेख किया है जो ग़ज़ाली की लघु पुस्तकों के 3-खंड संग्रह *"मजमुआ रसा-इल इमाम ग़ज़ाली*" या "इमाम ग़ज़ाली द्वारा लघु पुस्तकों का संग्रह" में इस प्रकार मौजूद है [12]:

ऐसा कहा जाता है कि छात्रों और *मुरीदों* के बीच (शिष्य जो एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के मार्गदर्शन में सभी बुरी इच्छाओं और प्रवृत्तियों से अपनी आत्मा की शुद्धि की प्राप्ति के माध्यम से आध्यात्मिक पूर्णता और ज्ञान की तलाश करते हैं, जिन्होंने बदले में प्रशिक्षण, मार्गदर्शन के माध्यम से आत्मा की इस शुद्धि और ईश्वर के सामने उच्च पद को पूरी तरह से प्राप्त किया है, और एक अन्य आध्यात्मिक मार्गदर्शक की निकटता) शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं), हातिम वाद (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं, जो बाद में शेख शाकीक के आध्यात्मिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के माध्यम से एक महान आध्यात्मिक गुरु बन गए) नाम का एक छात्र और शिष्य था। एक दिन शेख शेख शेख बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने उनसे कहा:

"ऐ हातिम! कितने समय से मेरी संगति (आध्यात्मिक निकटता) में हूं और जो मैं (सिखा रहा हूं) उसे सुन रहा हूं?

शैख हातिम इस्म (ईश्वर उन पर अपनी दया बरसाएं) ने उत्तर दिया: "तैंतीस साल!"

शेख शाकीक बल्खी ने पूछा:

"उस [लंबे] समय में, आपने मुझसे क्या लाभ प्राप्त किया है?"

शेख हातिम इस्म (ईश्वर उन पर अपनी दया बरसाएं) ने उत्तर दिया:

"[मैंने] [तुमसे] आठ लाभ प्राप्त किए हैं।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने जवाब दिया:

"*इन्ना लिल्लाही वा इन्ना इलाये रजीऊन*।

"हम ईश्वर के हैं और हम उसी के लिए लौटेंगे (यह कुरान की ओर से एक प्रार्थना है जो हानि और दुःख के समय की जाती है)।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने फिर कहा:

"ऐ हातिम! मैंने अपना जीवन शिक्षण और प्रशिक्षण में बिताया है और आपने मुझसे अभी-अभी आठ लाभ प्राप्त किए हैं?

शेख हातिमवाद (ईश्वर उन पर अपनी दया बरसाएं) ने उत्तर दिया:

"हे मेरे गुरु! यदि आपने [मुझे] सच्चाई के लिए पूछा तो वास्तविकता वही है जो मैंने आपको बताई थी। मुझे और अधिक [लाभ] की आवश्यकता नहीं है और ज्ञान से ये लाभ काफी पर्याप्त हैं क्योंकि मुझे यकीन है कि मैं इन आठ लाभों के माध्यम से इस जीवन में और परलोक के जीवन में मोक्ष [और सफलता] प्राप्त करूंगा।

शेख शाक़ीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने उनसे पूछा:

"ठीक है! मुझे बताओ, वे आठ लाभ क्या हैं?"

हातिम बिन इज़्म द्वारा वर्णित लाभ

"हे मेरे गुरु! **<u>पहला फायदा</u>** यह है कि मैंने इस दुनिया के लोगों को देखा और देखा कि हर किसी का एक प्रिय है। लेकिन [दुनिया के] लोगों के ये प्रिय ऐसे हैं कि उनमें से कुछ (यानी, प्रियजन) उनके (यानी, लोग) उनके साथ तब तक हैं जब तक कि उनकी बीमारी जो मृत्यु नहीं लाती है, उनमें से कुछ मृत्यु तक उनके साथ हैं, उनमें से कुछ तब तक उनके साथ हैं जब तक कि वे अपनी कब्रों तक नहीं पहुंच जाते, और दफनाने के बाद सभी प्रिय वहां से लौट आते हैं। उनका कोई भी प्रिय उनके साथ उनकी कब्रों में उनके साथ नहीं जाता है और उनके साथ [अंधेरे, एकांत, संकीर्णता और कब्र के आतंक में] उनकी कंपनी प्रदान करने के लिए। मैंने इस पर विचार किया और अपने आप से कहा कि केवल वही एक अच्छा प्रिय है जो कब्र में उनके साथ जाता है और अपने प्रेमी के साथ रहता है, जो कंपनी प्रदान करेगा, जो कब्र को रोशन करेगा, जो कयामत के दिन और उसके गंतव्यों पर भागीदार होगा (स्टेशन जो दफन के बाद न्याय के दिन तक जाते हैं)। मैंने देखा कि एकमात्र प्रिय जिसके पास ये [अच्छे] गुण हैं, वह मेरे अच्छे (पवित्र/धार्मिक) कर्म हैं। इसके बाद [दृढ़ संकल्प और जागरूकता], मैंने अपने अच्छे कर्मों को अपना प्रिय बना लिया ताकि वह मेरे साथ मेरी कब्र में चले [जब मैं मर जाऊं], मुझे अपनी कंपनी प्रदान करे, मेरी कब्र में एक प्रबुद्ध मोमबत्ती बन जाए, जीवन के सभी चरणों में मेरा साथी बनेगा, और कभी भी मुझसे अलग नहीं होगा।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने कहा:

"शाबाश ओ हातिम! आपने बहुत अच्छी बात कही है। अब दूसरा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **<u>दूसरा लाभ</u>** यह है कि मैंने दुनिया के लोगों पर नज़र डाली और देखा कि हर कोई *नफ़्स* (निचला स्व जो किसी को बुराई करने का निर्देश देता है) के सुखों और इच्छाओं का अनुसरण कर रहा था और [हर कोई] निचले स्व की इच्छाओं के अधीन है। यह देखने के बाद, मैंने निम्नलिखित पवित्र आयत (कुरान से) पर विचार-विमर्श किया:

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفْسَ عَنِ ٱلْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾
فَإِنَّ ٱلْجَنَّةَ هِىَ ٱلْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

"लेकिन जो अपने पालनकर्ता की उपस्थिति के डर में खड़ा था, और अपने आंतरिक स्व को आधार (निम्न और बुराई) इच्छाओं से रोक रहा है, स्वर्ग [इस व्यक्ति के लिए] आराम का स्थान होगा। (कुरान, अध्याय 79, आयत 40-41)

मैंने यह निश्चितता विकसित की कि बुद्धिमान कुरान सही है और ईश्वर की पुस्तक सत्य है। फिर मैंने अपने *नफ्स* (निचले स्व) के खिलाफ एक मोर्चा स्थापित किया और इसका विरोध करने के लिए दृढ़ हो गया। मैंने इसे (यानी, मेरे निचले स्व) को इस तरह से ढाला कि मैंने इसकी किसी भी इच्छा को तब तक पूरा नहीं किया जब तक कि इसे भगवान, महान की पूजा में शांति [और संतुष्टि] नहीं मिलनी शुरू हो गई।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने जवाब दिया:

"भगवान, परम प्रभु, आपके अच्छे कामों में अपना आशीर्वाद प्रदान करें। अब तीसरा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **<u>तीसरा लाभ</u>** यह है कि जब मैंने लोगों की ओर देखा तो मैंने देखा कि हर व्यक्ति बड़े कष्ट और परिश्रम के साथ इस नश्वर दुनिया की संपत्ति (धन, धन, सामान) को जमा करने में व्यस्त है और बहुत खुश है कि उसके पास बहुत सारी वस्तुएं और भौतिक संपत्ति है। लेकिन जब मैंने भरपूर कुरान की निम्नलिखित पवित्र आयत पर विचार किया:

مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ بَاقٍ ۗ

"जो कुछ तुम्हारे पास है वह सब समाप्त हो जाएगा, जबकि जो कुछ परमेश्वर के पास है, वह अनन्त है। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 96)

फिर मैंने दुनिया में जो कुछ भी [भौतिक संपत्ति] जमा की, मैंने उसे पवित्र गरीबों और भिखारियों के बीच वितरित करके परमेश्वर के मार्ग में खर्च किया ताकि यह (भौतिक संपत्ति जिसे मैंने परमेश्वर के मार्ग में वितरित किया था) मेरे विश्वास के रूप में ईश्वर, उच्च के पास जमा हो जाए और अपार भलाई और छुड़ौती का स्रोत बन जाएगा (यानी, उद्धार) के बाद के जीवन में।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने कहा:

"ऐ हातिम! भगवान आपको अपना मुआवजा (अपने तरीके से खर्च करने के लिए इनाम) प्रदान करें! आपने बहुत अच्छी बात कही और बहुत अच्छा काम किया है। अब चौथा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **चौथा लाभ** यह है कि मैंने दुनिया के लोगों को देखा और देखा कि उनमें से कुछ सोचते हैं कि भव्यता और सम्मान उस राष्ट्र या जनजाति (समूह) का है जो बड़ा और शक्तिशाली है, इसलिए वे अपने कबीले (राष्ट्र या समूह) पर गर्व व्यक्त कर रहे हैं। उनमें से कुछ ऐसे हैं जो सोचते हैं कि वैभव धन, [भौतिक] संपत्ति, परिवार और रिश्तेदारों की प्रचुरता के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, इसलिए [कुछ] लोग अपने धन और बच्चों पर गर्व व्यक्त कर रहे हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो सोचते हैं कि उनकी भव्यता और सम्मान क्रोध दिखाने, मारने, हत्या, लूटपाट करने में है और वे इस पर गर्व व्यक्त करते हैं। कुछ [लोग] ऐसे होते हैं जो सोचते हैं कि उनकी भव्यता फिजूलखर्ची में है, इसलिए वे अपने फिजूलखर्ची को सम्मान का स्रोत मानते हैं और उस पर गर्व व्यक्त करते हैं। लेकिन मैंने इस श्लोक पर विचार-विमर्श किया जिसमें भगवान, महामहिम, कहते हैं:

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ

"वास्तव में, परमेश्वर की दृष्टि में तुम में से सबसे महान वह है जो उसके प्रति सबसे अधिक सचेत [और डरता] है। (कुरान, अध्याय 49, श्लोक 13)

इसलिए, यह सही है और सत्य है और रचनाओं के विचार झूठे और गलत अनुमान हैं। इसलिए मैंने *तक़्वा* (पवित्र श्रद्धा, चेतना, विस्मय और ईश्वर का भय) को अपनाया ताकि मुझे ईश्वर की दृष्टि में सर्वोच्च पद वाले व्यक्ति के रूप में गिना जा सके।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने कहा:

"ऐ हातिम! भगवान आपसे प्रसन्न हों। आपने बहुत अच्छी बात कही है। अब पांचवां लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **पांचवां फायदा** यह है कि मैंने उन लोगों को देखा जो एक-दूसरे के बारे में शिकायत कर रहे थे। यह पाया गया कि वे यह सब ईर्ष्या, ईर्ष्या और शत्रुता के कारण कर रहे थे और इसका मुख्य कारण महानता, भव्यता, [भौतिक] संपत्ति, धन और ज्ञान के लिए [इच्छा और प्रतिस्पर्धा] है। मैंने पवित्र कुरान की निम्नलिखित आयत पर विचार किया जिसमें यह कहा गया है:

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ

"यह हम ही हैं जो इस दुनिया के जीवन में उनके बीच आजीविका (जीविका) के साधन वितरित करते हैं। (कुरान, अध्याय 43, श्लोक 32)

तब मैंने सोचा कि भगवान, धन्य और उच्च, ने [सृष्टि की] पहली शुरुआत से ही संपत्ति और रैंक नियुक्त किए हैं और इस मामले में किसी का कोई नियंत्रण नहीं है। इसलिए, मैंने किसी के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं की या ईर्ष्या नहीं की और परमेश्वर के वितरण [दुनिया के सभी लोगों के बीच सांसारिक उपहार] और [उसकी नियुक्त] नियति के लिए सहमत रहा और पूरी दुनिया के साथ मिल गया [परमेश्वर की सभी रचनाओं के खिलाफ सभी ईर्ष्या और शत्रुता को त्यागकर]।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने कहा:

"ऐ हातिम! आप सच कह रहे हैं और आप सही काम कर रहे हैं। अब छठा लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **छठा लाभ ये** है कि जब मैंने लोगों की तरफ नजर दौड़ाई तो मैंने देखा कि हर व्यक्ति किसी न किसी कारण से किसी न किसी से दुश्मनी कर रहा है। फिर मैंने निम्नलिखित श्लोक पर विचार-विमर्श किया:

إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ

"वास्तव में, *शैतान* (शैतान) आपका दुश्मन है, इसलिए उसे अपने दुश्मन के रूप में मानें। (कुरान, अध्याय 35, श्लोक 6)

उसके बाद, मुझे यह विश्वास हो गया कि परमेश्वर का कथन सत्य है, मुझे शैतान (शैतान) के अलावा किसी और से कोई दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए । तब से, मैंने शैतान को अपना दुश्मन माना और उसके किसी भी आदेश का पालन नहीं किया। इसके बजाय, मैंने [परमेश्वर की] आज्ञाकारिता विकसित की और परमेश्वर, उच्च परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया और केवल उसकी आराधना और दासता को अपनाया। सही तरीका है *सीरत अल-मुस्तकीम* (ईश्वरीय मार्गदर्शन का सीधा मार्ग जिसमें कोई कुटिलता नहीं है) जैसा कि भगवान, महानुभाव, ने स्वयं कहा है:

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ

"क्या मैंने तुमसे यह प्रतिज्ञा नहीं पाई कि ऐ आदम की सन्तानों! कभी भी शैतान (शैतान) की आज्ञा का पालन *न करें* । इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह आपका घोषित (खुला) शत्रु है और केवल मेरी ही पूजा करता है [क्योंकि] यह सीधा मार्ग है। (कुरान, अध्याय 36, श्लोक 60)

शेख शाक़ीक बल्खी (ईश्वर उन पर अपनी दया बरसाएं) ने कहा: "हे हातिम! आपने बहुत अच्छा काम किया और बहुत अच्छी बात कही। अब सातवां लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **सातवां लाभ** यह है कि मैंने लोगों को देखा और देखा कि हर व्यक्ति अपनी आजीविका और जीविका की तलाश में व्यस्त है और एक गहन प्रयास में शामिल है। इस संबंध में, वह *हलाल* (अनुमेय) और *हरम* (निषिद्ध) के बीच अंतर भी नहीं कर रहा है, बल्कि इसके बजाय, संदिग्ध और *हरम* (निषिद्ध) कमाई के साथ अपमानित हो रहा है। फिर मैंने निम्नलिखित श्लोक पर विचार-विमर्श किया:

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي ٱلْأَرْضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزْقُهَا

"और पृथ्वी पर ऐसा कोई जीवित प्राणी नहीं है जिसका भरण-पोषण परमेश्वर की जिम्मेदारी नहीं है। (कुरान, अध्याय 11, श्लोक 6)

तब मुझे यह विश्वास हो गया कि बुद्धिमान कुरान सत्य है और सही है और मैं भी उन जीवित प्राणियों में से हूं जो पृथ्वी पर मौजूद हैं। इसलिए मैं ईश्वर की आराधना में लग गया और मुझे यह विश्वास हो गया कि वह मेरे लिए (मेरा) भरण-पोषण लाएगा क्योंकि उसने मुझे जीविका प्रदान करने का वादा किया है।

शेख शाकीक बल्खी (भगवान उन पर अपनी दया बरसाएं) ने कहा:

"आपने बहुत अच्छा काम किया और बहुत अच्छी बात बताई। अब आठवां लाभ सुनाओ।

"हे मेरे गुरु! **आठवां लाभ** यह है कि जब मैंने लोगों को देखा, तो मैंने पाया कि हर व्यक्ति की निर्भरता [या विश्वास] किसी न किसी पर या किसी चीज पर होती है। कुछ को अपनी [भौतिक] संपत्ति पर भरोसा है [या भरोसे], कुछ अन्य लोगों पर भरोसा करते हैं [या भरोसे]। इसलिए, मैंने इस पवित्र श्लोक पर विचार किया जिसमें भगवान, धन्य और उच्च कहते हैं:

وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ

"और हर कोई जो परमेश्वर पर भरोसा करता है, उसके लिए वह [अकेला] [उसके लिए] पर्याप्त है। (कुरान, अध्याय 65, श्लोक 3)

'*मैं हुस्बी और मैं नहीं हूं*।

"और वह मेरे लिए पर्याप्त है और वह सबसे अच्छा सहायक है।

[इसलिए, मैंने हर मामले में भगवान पर पूरी तरह से भरोसा अपनाया।

जब शेख शकीक बल्खी (ईश्वर उन पर अपनी दया बरसाएं) ने इन [आठ] लाभों को सुना, तो उन्होंने कहा:

"ऐ हातिम! भगवान आपको अपना *तौफीक* प्रदान करें (यानी, आपको नेक कर्म करने और उनके मार्ग पर चलने में सक्षम बनाएं)। आपने बहुत अच्छी बातें बताई हैं। मैंने *तौरात* (तोरा), *इंजील* (पैगंबर यीशु का सुसमाचार), *ज़बूर* (भजन), और सही और गलत (यानी, पवित्र कुरान) के बीच प्रशंसनीय अंतर में देखा है, कि इन सभी पुस्तकों [ईश्वर की] इन आठ लाभों का उल्लेख करती है, अर्थात, उनकी शिक्षाओं में सभी चार पुस्तकों ने [हमें] इन आठ लाभों को बताया है। जो कोई भी इन आठ सिद्धांतों पर कार्य करता है, वह ऐसा है जैसे कि उसने सभी चार [पवित्र] पुस्तकों पर कार्य किया है।

जीवन के उद्देश्य और शाश्वत सुख को प्राप्त करने के मार्ग पर चलने के लाभ

इस बिंदु पर, यह स्पष्ट है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर के ज्ञान ("मारिफा") को प्राप्त करना है जो बदले में शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाता है। अब सवाल उठता है, "इस लक्ष्य के लिए कड़ी मेहनत करने और उस मार्ग पर चलने के क्या लाभ हैं जो शाश्वत सुख की ओर ले जाता है?" फिर से, इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देने के लिए ग़ज़ाली के कार्यों से मदद मांगी जाएगी। ग़ज़ाली ने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने और अंत में शाश्वत आनंद की प्राप्ति के प्रयास के लाभों को संक्षेप में प्रस्तुत किया है: उनकी अंतिम पुस्तक "*मिन्हाज अल-अबिदीन इला जन्नतु रब अल-अलमीन*" या "भगवान के उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग: उन्हें सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान के स्वर्ग की ओर ले जाना" या लघु शीर्षक "भगवान के उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग"। वह लिखते हैं [13]:

आपको पता होना चाहिए कि यह मार्ग [जीवन के वास्तविक उद्देश्य और शाश्वत सुख की प्राप्ति और प्राप्ति] अपनी चौड़ाई और लंबाई में, दुनिया के उन रास्तों की तरह नहीं है जो ताकत या कमजोरी के साथ चलने

से तय होते हैं। यह एक आध्यात्मिक यात्रा है जो दिलों (आत्माओं) के साथ की जाती है। यह ज्ञान और चिंतन, विश्वास और अंतर्दृष्टि की मदद से पूरा होता है। इसका आधार आकाशीय प्रकाश और दिव्य दृष्टि है। अगर वे किसी पर गिरते हैं, तो दो लोकों के रहस्य उसके सामने स्पष्ट रूप से उजागर हो जाते हैं।

कभी-कभी सौ साल तक खोजने के बाद भी प्रकाश उपलब्ध नहीं होता है, क्योंकि इसकी खोज के दौरान कई गलतियां और कमियां की जाती हैं। कभी यह प्रकाश पचास साल में प्राप्त होता है, तो कभी दस साल में। कुछ भाग्यशाली व्यक्ति इसे केवल एक घंटे में प्राप्त करने के बजाय एक घंटे में प्राप्त करते हैं, जो प्रकाश के स्वामी हैं। इन सबके बावजूद, परमेश्वर के सेवक को इस मार्ग पर प्रयास करने की आज्ञा दी गई है और उसे इस आदेश का पालन करना है। अंतिम परिणाम भाग्य और भाग्य पर निर्भर करता है। तुम्हारे हृदय में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर न्यायी है, वह वही करता है जो वह चाहता है और वह कैसे चाहता है।

आप कह सकते हैं कि यह एक बहुत ही कठिन मामला है और परमेश्वर के सेवक को कई चीजों की आवश्यकता है। इस सारे परिश्रम और कड़ी मेहनत का उद्देश्य क्या होगा? मैं मानता हूं कि यह बिल्कुल सच है कि रास्ते में भयानक जोखिम हैं। यही कारण है कि पवित्र कुरान में ईश्वर ने कहा है:

إِنَّا عَرَضْنَا ٱلْأَمَانَةَ عَلَى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱلْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَن يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا
وَحَمَلَهَا ٱلْإِنسَٰنُ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

"वास्तव में, हम ने स्वर्ग, पृथ्वी और पहाड़ों को भरोसा चढ़ाया, परन्तु वे उसे धारण करने से पीछे हट गए और उससे डर गए और मनुष्य ने उसे मान लिया। निश्चित रूप से, वह एक अत्याचारी और मूर्ख साबित हुआ है। (कुरान, अध्याय 33, श्लोक 72)

पवित्र पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी एक हदीस (एक भविष्यद्वाणी कथन) में कहा है:

لَوْ تَعْلَمُونَ ما أعلم لبكيتم كثيراً ولضحكتم قليلاً

"यदि आप जानते हैं कि मैं क्या जानता हूं, तो आप बहुत रोएंगे और कम हंसेंगे।

अबू बक्र अस-सिद्दीक (एक महान भविष्यद्वक्ता साथी) (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) कहा करते थे:

"मुझे यह पसंद है कि मुझे घास का एक ब्लेड होना चाहिए था जिसे किसी जानवर ने खाया होगा।

यह [सांसारिक मामलों में गलत कामों के लिए] दंड के डर के कारण था कि उसने यह कहा। उमर (एक और महान भविष्यद्वाणी साथी) (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) से वर्णित है कि उन्होंने किसी को पवित्र कुरान की इस आयत का पाठ करते हुए सुना:

هَلْ أَتَىٰ عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ حِينٌ مِّنَ ٱلدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْـًٔا مَّذْكُورًا ﴿١﴾

"मनुष्य पर एक समय आ गया है जिसमें वह उल्लेख करने योग्य कुछ भी नहीं था। (कुरान, अध्याय 76, आयत 1)

यह सुनकर उमर (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) ने कहा:

"काश जीवन उसी स्थिति में पूरा हो गया होता!"

[उसने ऐसा परमेश्वर के भय से कहा]। अबू उबैदा बिन जर्राह (एक और महान भविष्यद्वाणी साथी) (ईश्वर उनसे प्रसन्न हो) कहा करते थे:

"मुझे यह पसंद है कि मैं अपने घर में एक मेढ़ा होता; मेरा मांस वितरित किया गया होगा और मेरा सूप खा लिया गया होगा और मैं बिल्कुल भी पैदा नहीं हुआ था।

उन्होंने (भगवान उनसे प्रसन्न हों) यह भी कहा:

"मैं उन लोगों से ईर्ष्या करता हूं जो [यहां तक] पैदा नहीं हुए थे।

आप सोच रहे हैं कि यह बहुत कठिन कार्य है। वास्तव में, यह आपकी कल्पना से कहीं अधिक कठिन और जोखिम भरा है। किसी भी दर पर, यह कार्य सृष्टि की शुरुआत में ही परमेश्वर के ज्ञान में नियुक्त किया गया था और यह चीजों का वह महान ज्ञाता है जिसने इस कार्यक्रम और प्रक्रिया को जारी किया है।

इसलिए, परमेश्वर के सेवक के पास परमेश्वर की सेवा और आराधना में कड़ी मेहनत करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उसे परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और उसकी उपस्थिति में हमेशा विनम्र और विनम्र रहना चाहिए, ताकि वह उस पर दया कर सके और उसे असफलता और बर्बादी से बचा सके।

मैंने इस विषय पर गहराई से विचार किया कि जब एक सेवक [परमेश्वर का] परमेश्वर के प्रति भक्ति और सेवा करता है और अपने पूरे जीवनकाल में इस मार्ग पर चलता रहता है, तो महान परमेश्वर, उसे लगभग चालीस प्रकार के एहसान [और आशीषें] प्रदान करता है। इस लोक में बीस और परलोक में बीस। ये [ईश्वर के ज्ञान के मार्ग पर चलने के लिए दिव्य उदारता] इस प्रकार हैं:

पहला: उच्च परमेश्वर स्वयं मनुष्य की स्तुति करता है। तुम आसानी से उस व्यक्ति की धार्मिकता की कल्पना कर सकते हो जो परमेश्वर की स्तुति का विषय है।

दूसरा: महान परमेश्वर उसे धन्यवाद देता है और उसे ऊँचा उठाता है। अब सोचिए कि परमेश्वर की स्तुति और उत्कर्ष का लक्ष्य बनना सम्मान और लाभ का कितना बड़ा स्रोत है!

तीसरा: महान परमेश्वर उससे प्रेम करता है। एक आदमी के लिए परमेश्वर का प्रिय होना कितना बड़ा वरदान और सम्मान है!

चौथा: उच्च परमेश्वर अपनी सभी समस्याओं और कठिनाइयों को हल करने की जिम्मेदारी लेता है।

पांचवां: महान ईश्वर व्यवस्था करते हैं कि उनका भरण-पोषण बिना किसी काम के उन तक पहुंचे, उनकी ओर से चिंता की तलाश करें।

छठा: महान ईश्वर हर विरोधी और शत्रु के खिलाफ उनके सहायक और रक्षक बन जाते हैं।

सातवां: महान ईश्वर मनुष्य के हृदय को अच्छी तरह से प्रसन्न और संतुष्ट रखता है [यही वह है जो व्यक्ति को सच्ची आंतरिक शांति और शांति, और हृदय की संतुष्टि और खुशी देता है]।

आठवां: परमेश्वर उसे ऐसा सम्मान और दर्जा प्रदान करता है कि वह दुनिया और दुनिया के लोगों की सेवा करने के अपमान से बच जाता है। इसके अलावा, वह दुनिया के शासकों और गणमान्य व्यक्तियों को भी उसकी सेवा करना पसंद नहीं करता है।

नौवां: भगवान उसे उदार और साहसी बनाते हैं। वह दुनिया या उसके लोगों की गंदगी और प्रदूषण से दूषित नहीं होता है, न ही वह उनके आचरण और नकारात्मक और बेकार गतिविधियों पर ध्यान देता है, जैसे बुद्धिमान पुरुष बच्चों, पुरुषों और महिलाओं की मूर्खतापूर्ण गतिविधियों को नजरअंदाज करते हैं।

दसवां : सर्वशक्तिमान ईश्वर उसे हृदय की संतुष्टि प्रदान करता है। वह दुनिया में बहुत उच्च स्तर के आत्म-सम्मान [और इसके साथ आने वाली गरिमा] के साथ रहता है। उसकी उदारता किसी दुर्घटना या किसी भी चीज़ से वंचित होने से प्रभावित नहीं होती है।

ग्यारहवां: महान ईश्वर उसे हृदय का प्रकाश प्रदान करता है जिससे उसके पास मामलों के रहस्यों तक पहुंच होती है [और उनके पीछे आंतरिक ज्ञान] जो दूसरों के प्रयासों और कड़ी मेहनत के बावजूद तक नहीं पहुंच पाती है।

बारहवाँ: परमेश्वर उसे दूरदर्शिता और महत्वाकांक्षा प्रदान करता है। वह समय के उतार-चढ़ाव से बिल्कुल भी विचलित नहीं है, न ही वह लोगों के दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार से घृणा करता है, न ही उनके बुरे इरादों से [क्योंकि वह बाहरी और आंतरिक रूप से दिव्य रूप से संरक्षित है]।

तेरहवां: महान परमेश्वर दूसरों के दिलों में उसका भय और भय स्थापित करता है। सभी अच्छे और बुरे लोग उसका सम्मान करते हैं और उस समय के निरंकुश उससे डरते रहते हैं।

चौदहवां: परमेश्वर लोगों के दिलों में अपना प्रेम पैदा करता है। पवित्र कुरान में ईश्वर कहते हैं:

سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَٰنُ وُدًّا

"दयालु (परमेश्वर) उनके लिए [पृथ्वी पर और दुनिया के लोगों के दिलों में] प्रेम नियुक्त करेगा। (कुरान, अध्याय 19, श्लोक 96)

पंद्रहवाँ: उसकी सारी संपत्ति में आशीषें पैदा की जाती हैं, अर्थात्, उसकी वाणी, उसके कर्म, उसके कपड़े और उसका घर। लोग उस जमीन को बहुत पवित्र मानते हैं जिस पर वह चलता है या वह स्थान जहां वह एक या दो दिन के लिए रहता है।

सोलहवा: दुनिया की पूरी भूमि, समुद्र और महासागर उसके आज्ञाकारी और अधीन हो जाते हैं। यदि वह पानी पर या अंतरिक्ष में चलना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है। वह केवल एक घंटे में पूरे विश्व को कवर करने की क्षमता रखता है।

सत्रहवां: सभी जीवित जानवर, जानवर, पक्षी आदि उसके आज्ञाकारी और अधीन हो जाते हैं, भले ही वे खतरनाक जंगली जानवर या कीड़े और रेंगने वाले जीव हों। जंगली जानवर उससे प्यार करते हैं और खतरनाक जानवर उसे चाटते हैं।

अठारहवां: वह दुनिया के खजाने का मालिक बन जाता है। वह जहां भी हाथ डालता है, उसे खजाना मिलता है और जहां भी वह पैर रखता है, वहां से पानी निकलता है। वह जहां भी मुड़ता है, उसे [अपने रब से] जीविका मिलती है।

उन्नीसवां: भगवान ने उसे अपने दरबार में ऐसा स्थान दिया कि लोग उसे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक मध्यस्थ (या मध्यस्थ) के रूप में लेते हैं [भगवान से]।

बीसवां: उसकी प्रार्थनाओं को दिव्य न्यायालय में स्वीकार किया जाता है और वह जो प्रार्थना करता है वह उसे मिलता है। यदि वह किसी के लिए मध्यस्थता करता है, तो उसकी मध्यस्थता स्वीकार की जाती है। इसी तरह, यदि वह शपथ लेता है, तो उच्च परमेश्वर उसकी शपथ को सही ठहराता है। यहां तक कि पहाड़ भी उसके इशारे पर अपने आधार से हिलता है। जब भी उसके दिल में कोई इच्छा उठती है, तो परमेश्वर उसकी ओर से उसे मांगे बिना भी पूरा कर देता है।

ये [ऊपर] बीस आशीर्वाद सांसारिक आशीर्वाद, सम्मान और अनुग्रह के उदाहरण हैं [भगवान के ग्नोसिस ("मारिफा") के मार्ग पर चलने के लिए]। नीचे उल्लिखित शेष बीस आशीर्वाद परलोक से संबंधित हैं:

इक्कीस: मृत्यु की पीड़ा, जिसमें से [यहां तक] पैगंबर [ईश्वर के] (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन सभी पर हो) ने भी शरण मांगी, उनके लिए आसान बना दी गई है। कुछ लोगों के लिए, मृत्यु का स्वाद इतना स्वागत योग्य है जैसे कि पानी का एक ड्राफ्ट प्यासे व्यक्ति के लिए होता है। यह पवित्र कुरान में होता है:

تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ . (سورة النحل : ٣٢)

"स्वर्गदूत अपनी आत्मा को बाहर निकालते हैं, जबकि वे पवित्रता और धर्मपरायणता की स्थिति में होते हैं। (कुरान, अध्याय 16, श्लोक 32)

बाईस: दिव्य ज्ञान (ग्नोसिस या "*मारिफा*") और विश्वास ("ईमान") का आशीर्वाद उनके लिए सुरक्षित और सुरक्षित है। ये उन आशीर्वादों की प्राप्ति के लिए हैं जिनकी प्राप्ति के लिए सभी प्रकार की कठिनाइयाँ, संकट, कष्ट और दुःख सहते हैं। पवित्र कुरान में महान ईश्वर ने कहा है:

يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ
(سورة ابراهيم : ٢٧)

"परमेश्वर उन लोगों को दृढ़ करता है जो एक दृढ़ वचन के द्वारा, संसार के जीवन और परलोक में विश्वास करते हैं। (कुरान, अध्याय 14, श्लोक 27)

तेईस: मृत्यु के समय उसे आराम और शांति प्रदान की जाती है और उसे शांति और संतुष्टि के साथ स्वर्ग में प्रवेश की खुशखबरी दी जाएगी। पवित्र कुरान में कहा गया है:

لَاتَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ . (سورة الصافات : ٣٠)

"न डरो और न ही शोक करो, परन्तु स्वर्ग की खुशखबरी सुनो, जिसका वादा तुमसे किया गया था। (कुरान, अध्याय 41, श्लोक 30)।

अब, उसे परलोक के कष्टों के बारे में कोई डर नहीं होगा, न ही दुनिया की आशीषों और सुख-सुविधाओं को पीछे छोड़ने का दुःख होगा।

चौबीसवां: उसे स्वर्ग में अनन्त जीवन का आनंद मिलेगा।

पच्चीसवां: मृत्यु के समय, उसकी आत्मा प्रकाशित होगी और स्वर्गदूतों की उपस्थिति में उसका सम्मान और उच्च किया जाएगा। जहां तक उनकी स्पष्ट स्थिति का संबंध है, उनके शरीर को उचित सम्मान और सम्मान के साथ संभाला जाएगा और उनके अंतिम संस्कार के सम्मान में एकत्र हुए लोगों के कंधों पर कब्रिस्तान में ले जाया जाएगा। बड़ी संख्या में मुसलमान मृतकों के साथ-साथ खुद के लिए सम्मान के प्रतीक के रूप में उनके अंतिम संस्कार की प्रार्थना में भाग लेंगे। लोग उसके अंतिम संस्कार में अपने कंधों को समतल करने के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं।

छब्बीसवां: उसकी कब्र को विशाल और रोशन किया गया है [भगवान द्वारा]। वह कयामत के दिन तक स्वर्ग के बगीचों में से एक में रहता है।

सत्ताईसवां: वह कब्र में [स्वर्गदूतों द्वारा] पूछताछ के मुकदमे से सुरक्षित रहेगा। [उनके सवालों के] सही जवाब उन्हें प्रेरित करेंगे।

अट्ठाईस: उसकी आत्मा परमेश्वर के साथ अंतरंगता की स्थिति में होगी। यह स्वर्ग के एक हरे रंग के पक्षी में डाला जाता है और अपने पवित्र भाइयों के साथ रहता है।

उनतीसवां: पुनरुत्थान के दिन वह बड़े सम्मान के साथ और मुकुट और सिंहासन के साथ पुनर्जीवित किया जाएगा। वह "*बुर्राक*" (उस पर स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए एक स्वर्गीय सवारी) पर सवारी करेगा।

तीसवां: उसका चेहरा रोशन और चमकदार हो जाएगा। यह पवित्र कुरान में होता है:

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ. (سورة عبس:٣٨–٣٩)

"उस दिन, चेहरे उज्ज्वल होंगे, हंसेंगे, [अपने प्रभु की ओर से] खुशी की खबर पर आनन्दित होंगे। (कुरान, अध्याय 80, श्लोक 38-39)

थर्टीस: वह कयामत के दिन की भयावहता और पीड़ाओं से सुरक्षित रहेगा। यह पवित्र कुरान में होता है:

أَفَمَنْ يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ (سورة : ٤٠)

"क्या वह जो नरक में फेंक दिया जाता है वह बेहतर है या वह जो पुनरुत्थान के दिन सुरक्षित आता है?

बत्तीस: कर्मों का रजिस्टर न्याय के दिन उनके दाहिने हाथों में सौंप दिया जाएगा। उनमें से कुछ ऐसे होंगे जिन्हें गणना से छूट दी जाएगी और उन्हें अपने कर्मों के रजिस्टर की आवश्यकता नहीं होगी।

तैंतीस: कुछ ऐसे होंगे जिनका हिसाब लगाना उनके लिए आसान हो जाएगा और कुछ ऐसे भी होंगे जिन्हें किसी भी हिसाब के अधीन नहीं किया जाएगा।

चौंतीस: कर्मों को तौलते समय अच्छे कर्मों का पैमाना बुरे कर्मों की तुलना में भारी होगा।

पैंतीसवां: उन्हें पवित्र पैगम्बर मुहम्मद (ईश्वर की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के "कौथर" के कुंड से शुद्ध पानी दिया जाएगा, जिसे पीने के बाद, उन्हें फिर कभी प्यास नहीं लगेगी।

छत्तीसवां: वह "सीरात" *के पुल को सुरक्षित* और सुरक्षित पार करेगा और नरक से बचाया जाएगा।

सैंतीसवां: उसके पास पुनरुत्थान के मैदान पर दूसरों के लिए मध्यस्थता करने का अधिकार होगा, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता (परमेश्वर उन सभी से प्रसन्न हो)।

अड़तीस: वह स्वर्ग के अनन्त राज्य और अनन्त आशीषों में प्रवेश करेगा।

उनतीसवां: उसे परमेश्वर की खुशी और प्रशंसा का आनंद लेने के सम्मान के साथ अनुग्रहित किया जाएगा और उसे ईश्वरीय स्वीकृति और अनुमोदन प्राप्त होगा।

चालीसवां: उसके पास अनंत काल से अनंत तक पूरी सृष्टि की पूजा की वस्तु महान ईश्वर को देखने का सबसे बड़ा आशीर्वाद होगा, जिसका न तो भौतिक आकार है और न ही रूप।

मैंने यहां इस संख्या को सूचीबद्ध किया है [चालीस की राशि में आशीषों की] मेरी खराब समझ के अनुसार प्रत्येक के बहुत संक्षिप्त विवरण के साथ इसके लिए विस्तार की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, मैंने अनन्त राज्य को एक आशीर्वाद के रूप में वर्णित किया है। अगर मैं इस एक आशीर्वाद का विस्तार से वर्णन करूं, तो यह अकेले चालीस आशीर्वादों से अधिक हो जाएगा। फिर से, इनमें से प्रत्येक का विवरण इतना विविध और विशाल है कि अदृश्य के ज्ञाता के अलावा कोई नहीं, परमेश्वर उन्हें जानता है। पवित्र कुरान की घोषणा

فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٌ مَّآ أُخۡفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعۡيُنٖ جَزَآءَۢ بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ

"कोई भी आत्मा नहीं जानती कि उनके लिए आनंद के लिए क्या छिपाया जाता है, जो वे करते थे उसके प्रतिफल के रूप में। (कुरान, अध्याय 32, श्लोक 17)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक हदीस (पैगम्बर कथन) में कहा है : "स्वर्ग को सुसज्जित और आशीर्वाद से सुसज्जित किया गया है जिसे न तो किसी आंख ने देखा है और न ही किसी कान ने उनके बारे में सुना है, और न ही उनके बारे में किसी के दिल में कोई विचार आया है।

पवित्र कुरान में ईश्वर ने कहा है:

قُل لَّوۡ كَانَ ٱلۡبَحۡرُ مِدَادٗا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّي لَنَفِدَ ٱلۡبَحۡرُ قَبۡلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّي وَلَوۡ جِئۡنَا بِمِثۡلِهِۦ مَدَدٗا ﴿١٠٩﴾

"यदि मेरे प्रभु के शब्दों को [लिखने] के लिए समुद्र स्याही बन जाता है, तो मेरे भगवान के शब्दों के समाप्त होने से पहले समुद्र समाप्त हो जाएगा, भले ही हम इसे पूरक के रूप में लाएं। (कुरान, अध्याय 18, आयत 109)

पवित्र कुरान के टिप्पणीकारों ने कहा है कि इस आयत में उल्लिखित शब्द वे हैं जो महान ईश्वर स्वर्ग के निवासियों से उनकी खुशी और खुशी के लिए बात करेंगे। जब स्वर्ग की यह स्थिति है, तो किसी के लिए भी इसके आशीर्वाद का दस लाखवां हिस्सा भी जानना संभव नहीं है।

इस महान आशीर्वाद को प्राप्त करना आवश्यक है कि जिनके पास साहस है उन्हें प्रयास करना चाहिए और जिनके पास ज्ञान और कमाई है उन्हें उनके लिए काम करना चाहिए। आपको पता होना चाहिए कि एक नौकर को चार गुणों की आवश्यकता होती है:

एक. ज्ञान
दो. कार्य और प्रयास [अर्जित ज्ञान के अनुसार],
तीन. ईमानदारी [किसी के अर्जित ज्ञान के अनुसार प्रयासों में], और
चार. [ईश्वर का भय जो विभिन्न कमियों के कारण ईश्वर की दृष्टि में कम पड़ सकता है और इस प्रकार ईश्वरीय स्वीकृति के योग्य नहीं हो सकता है]।

ईश्वर के सेवक के लिए, सबसे पहले, कार्रवाई की दिशा निर्धारित करना आवश्यक है [किसी के जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, जैसा कि पहले समझाया गया है, जो बदले में शाश्वत खुशी और अनन्त विजय की ओर ले जाता है] और यह केवल ज्ञान की सहायता से ही संभव है। ज्ञान के बिना कार्रवाई की तलाश करना अंधेरे में टटोलने से ज्यादा कुछ नहीं होगा। इसलिए, उसे ज्ञान की मांगों पर कार्य करना चाहिए, लेकिन कार्यों के बिना [और प्रयास] वह कोई प्रगति नहीं करता है। वह जो भी कार्य करता है, वह केवल ईश्वर की प्रसन्नता की तलाश के लिए होना चाहिए [बिना किसी भौतिकवादी या गुप्त उद्देश्यों के]। ईमानदारी के बिना कार्रवाई से उसका कोई भला नहीं होगा, लेकिन उसे नुकसान हो सकता है [इसके बजाय]। इसके बाद, उसे हमेशा अपने कार्यों की स्वीकार्यता या अन्यथा के बारे में भय में रहना

चाहिए। भय की खुराक के बिना [भगवान की, यानी, "*तकवा*"], वह धोखे के लिए अतिसंवेदनशील होगा [भगवान के सामने विनम्रता के विपरीत आत्म-धार्मिकता के कारण]।

तीसरा भाग: मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य तक पहुंचने और शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय की प्राप्ति के लिए ज्ञान के स्रोत

इस ग्रंथ में, कुछ विवरणों में, जीवन के वास्तविक उद्देश्य और इसे प्राप्त करने के मार्ग से संबंधित है जो बदले में शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाता है। यह विषय वस्तु बहुत अधिक और गहन है कि पिछली शताब्दियों में सार्वभौमिक सत्य या ज्ञानवादियों के महान जानकारों द्वारा खंड लिखे गए हैं, ताकि इस पर व्याख्या की जा सके और मानवता के लिए मार्ग को रोशन किया जा सके। इस लघु ग्रंथ ने मानवता द्वारा निर्मित इस ज्ञान के सबसे महान प्रतिपादकों में से एक - इमाम मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (ईश्वर उन पर अपनी अपार दया बरसाएं) की आध्यात्मिकता और लेखन के प्रकाश में इसकी विशालता की एक झलक प्रदान करने का प्रयास किया है। इस विषय पर सभी के लिए अत्यधिक प्रासंगिकता और लाभ के कुछ महानतम कार्यों को सूचीबद्ध करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे सभी सत्य साधक लाभान्वित हो सकते हैं। इस बिंदु पर, यह पूछना उचित है, "जीवन के उद्देश्य और शाश्वत सुख और अंतहीन सफलता प्राप्त करने के तरीकों का प्रासंगिक ज्ञान कहां से प्राप्त किया जा सकता है ताकि जो व्यक्ति इसे चलना चाहता है उसके लिए मार्ग स्पष्ट, प्रकाशित और चौड़ा हो जाए और इस ज्ञान पर कार्य करने पर, कोई वास्तव में अपने जीवन के उद्देश्य तक पहुंच सकता है और इस प्रकार शाश्वत आनंद और अंतहीन सफलता की स्थिति में डूब सकता है?" सौभाग्य से, यह महान ज्ञान, हालांकि आमतौर पर ज्ञात नहीं है, किसी के लिए भी उपलब्ध है जो इससे लाभ उठाना चाहता है। जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के मार्ग का ज्ञान और परिणामस्वरूप शाश्वत सुख और अंतहीन विजय का ज्ञान, निम्नलिखित अद्‌भुत कार्यों से प्राप्त किया जा सकता है जो सत्य के सभी ईमानदार साधकों के लिए मार्ग को रोशन करते हैं:

एक. कुरान के गहन अध्ययन के माध्यम से, एक अच्छी व्याख्या की सहायता से, कुरान के दस उद्देश्यों के प्रकाश में, जैसा कि ग़ज़ाली ने अपनी पुस्तक "*जवाहिर अल-कुरान*" या "कुरान के गहने" में समझाया है, जो इस ग्रंथ में भी बताए गए हैं। इन दस उद्देश्यों का अध्ययन करें, उन्हें समझें और आत्मसात करें, इन दस उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कुरान का अध्ययन करें और इसके अलावा, इन दस सिद्धांतों और उद्देश्यों के प्रकाश में निम्नलिखित पुस्तकों का अध्ययन करें।

दो. ग़ज़ाली की पुस्तक "*मिन्हाज अल-अबिदीन इला जन्नतु रब अल-अलमीन*" या "भगवान के उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग: उन्हें सभी ब्रह्मांडों और अस्तित्वों के भगवान के स्वर्ग की ओर ले जाना" या लघु शीर्षक "उपासकों के लिए सर्वश्रेष्ठ मार्ग"। यह पुस्तक संक्षेप में जीवन के उद्देश्य और शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता प्राप्त करने के तरीके के बारे में बताती है। इस उल्लेखनीय पुस्तक के कई चयनों को इस ग्रंथ में शामिल किया गया है।

तीन. ग़ज़ाली की पुस्तक "*किमिया-ए-सादत*" (या "*किमिया अस-सादा*") का उल्लेखनीय परिचय, जिसे उन्होंने फ़ारसी में लिखा था या "शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के लिए परिवर्तन का कीमिया या परिवर्तनकारी एजेंट", जो शाश्वत खुशी और अमरता और मनुष्य की सच्ची सफलता की व्याख्या करता है। इस पुस्तक के शेष भाग को इस पथ पर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक चालीस

चरणों को संक्षेप में जानने के लिए भी पढ़ा जा सकता है। इस पुस्तक का उल्लेखनीय परिचय इस ग्रंथ के पहले भाग में प्रमुखता से दिखाया गया है।

चार. ग़ज़ाली द्वारा ज्ञान के चार खंडों के संग्रह का नाम "*इहया अल-उलूम अद-दीन*" या "ईश्वर के मार्ग के ज्ञान का पुनरुद्धार" है, जिसे "धार्मिक विज्ञान का पुनरुद्धार" भी कहा जाता है। चालीस छोटी पुस्तकों में विभाजित यह विशाल पुस्तक - प्रत्येक ज्ञान या ईश्वर के "मारिफा" के आध्यात्मिक मार्ग में एक कदम का प्रतिनिधित्व करती *है*, मानव जीवन के उद्देश्य और शाश्वत आनंद प्राप्त करने के मार्ग की एक विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करती है।

पाँच. अंतिम लेकिन कम से कम, पूर्व और पश्चिम दोनों के सबसे अधिक बिकने वाले कवि, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, जिन्हें "रूमी" के नाम से जाना जाता है, ने पूरे मानव इतिहास में ईश्वर की सूक्ति पर सबसे बड़ी कविता लिखी, जिसे "*मथनवी-ए-मनावी*" या "गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" कहा जाता है। कृपया एक अच्छे अनुवाद और विद्वतापूर्ण व्याख्या के साथ इसका अध्ययन करें। यह शानदार पुस्तक कुरान के गहरे आंतरिक ज्ञान को सामने लाती है और इसकी मदद से, व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है और इसके परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता प्राप्त कर सकता है।

अनुशंसित पुस्तकों की सूची बहुत बड़ी हो सकती है, क्योंकि ज्ञान के कालातीत खजाने, शाश्वत सुख के स्वामी - ज्ञानवादी या सार्वभौमिक सत्य और ईश्वरीय ज्ञान के ज्ञाता - द्वारा छोड़े गए बहुत बड़े हैं। हालाँकि, दस लाख मील की यात्रा कहीं न कहीं शुरू होनी है और यह छोटी सूची, शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की खोज के लिए इस महान यात्रा का शुरुआती बिंदु और परिणति दोनों होगी। आप शाश्वत सत्यों के इस अथाह और विशाल महासागर के तूफानी पानी में नेविगेट करने में, सच्चे आत्म-साक्षात्कार और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति और परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अनन्त विजय की ओर अपनी यात्रा में दैवीय रूप से संरक्षित और निर्देशित हों।

आगे के अध्ययन के लिए अनुशंसित पुस्तकें

तफ़सीर अल-तुस्तारी (पवित्र कुरान की महान टिप्पणियाँ) साहल इब्न अब्द अल्लाह अल-तुस्तारी (लेखक), यूसुफ मेरी (संपादक), एनाबेल कीलर (अनुवादक), अली कीलर (अनुवादक) द्वारा
प्रकाशक: फोंस विटे (13 अप्रैल, 2011)
आईएसबीएन-10: 1891785192; आईएसबीएन-13: 978-1891785191
चुनिंदा छंदों की कुरान की यह व्याख्या ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के गहरे अर्थों में जाती है और भीतर गहराई में निहित रत्नों को सामने लाती है।

कुरान का संदेश: मुहम्मद असद (संपादक, अनुवादक) द्वारा समानांतर लिप्यंतरण के साथ प्रकट अरबी पाठ का पूरा विवरण
प्रकाशक: द बुक फाउंडेशन; संशोधित संस्करण (1 दिसंबर, 2008)
आईएसबीएन-10: 1904510353; आईएसबीएन-13: 978-1904510352
यह कुरान की पूरी व्याख्या या व्याख्या है।

इमाम ग़ज़ाली द्वारा सभी दुनियाओं के भगवान (मिन्हाज अल-अबिदीन) के बगीचे के लिए पूजनीय सेवकों का मार्ग
प्रकाशक: अल-बाज़ पब्लिशिंग यूएसए (2011)
आईएसबीएन-10: 1882216261; आईएसबीएन-13: 978-1882216260
इमाम ग़ज़ाली की आखिरी किताब आध्यात्मिक पूर्णता और रोशनी के लिए एक कदम मार्ग की रूपरेखा तैयार करती है।

अल-ग़ज़ाली अल्केमी ऑफ़ हैप्पीनेस 2 वॉल्यूम इमाम मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (लेखक), जे आर. क्रुक (अनुवादक), लालेह बख्तियार (परिचय) द्वारा सेट किया गया है
प्रकाशक: काजी प्रकाशन, इंक (1 जनवरी, 2007)
आईएसबीएन-10: 1567446744; आईएसबीएन-13: 978-1567446746
इमाम ग़ज़ाली की उत्कृष्ट कृति "*किमिया-ए-सआदत*" शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता के परिवर्तनकारी एजेंट को रेखांकित करती है।

धर्म के विज्ञान का पुनरुद्धार (इह्या उलूम अद-दीन) 4 खंड इमाम मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (लेखक), मुहम्मद महदी अल-शरीफ (अनुवादक) द्वारा सेट किया गया
प्रकाशक: दार अल-कोतोब अल-इल्मियाह, बेरूत, लेबनान (2011)
एसकेयू 1010021; आईएसबीएन: 9782745159458
http://jamalon.com/en/1010021.html
इमाम ग़ज़ाली के ज्ञान के 4-खंड संग्रह आध्यात्मिक मार्ग के हर पहलू का विश्लेषण करते हैं जो किसी के जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने और परिणामस्वरूप अनन्त खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाते हैं।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी द्वारा मसनवी (6 खंड) / आर.ए. निकोलसन (अनुवादक)
http://www.dar-al-masnavi.org/about_nicholson.html
अमेरिका *में सबसे ज्यादा बिकने वाले कवि "मथनवी-ए-मनावी*" या "गहरे आध्यात्मिक अर्थों के दोहे" जिसे रूमी के नाम से जाना जाता है, एक शानदार 6-खंड की पुस्तक है जो कुरान के गहरे आंतरिक ज्ञान, किसी के जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य और परिणामस्वरूप शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता को सामने लाती है। यह अब तक की सबसे अच्छी आध्यात्मिक कविता है जो सूक्ति और दिव्य प्रेम पर लिखी गई है।

चिंता, अशांति और उथल-पुथल के युग में लचीलापन, सकारात्मकता, आशावाद, आंतरिक शांति, शांति, खुशी, शाश्वत आनंद और अंतहीन विजय

मुफ्त पीडीएफ: https://archive.org/details/resilience-positivity-inner-peace-and-happiness-in-an-age-of-turmoil-synopsis/page/43/mode/2up

मुद्रित पुस्तक: https://www.amazon.com/Resilience-Positivity-Tranquility-Happiness-Turbulence/dp/B09B5HTJ4T

ग्रंथ सूची

[1]अबू हमीद अल-ग़ज़ाली की कार्रवाई की कसौटी से एक अध्याय का अनुवाद (*मिज़ान अल-अम्मल*) एस. दुन्याह द्वारा (दार अल-मरैफ प्रेस, काहिरा, प्रथम संस्करण, 1964) पृष्ठ 180-181। मुहम्मद होज़िएन द्वारा अनुवाद। से लिया गया http://ghazali.org/works/mizan-en.htm

[2] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी XV-XXIII।

[3] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 1-47।

[4] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 48-68।

[5] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 77-90।

[6] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 91-140।

[7] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: बिलाल, मुहम्मद आसिम। *किमिया-ए-सादत* (अनन्त आनंद की कीमिया)। लाहौर, पाकिस्तान: काजी प्रकाशन, 2001। पीपी 141-142।

[8] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: अंसारी, इकबाल हुसैन। *मिन्हाज अल-आबिदीन* (उपासकों के लिए सबसे अच्छा तरीका)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशात, 1998। पीपी 8-20।

[9] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: अबुल कासेम, मुहम्मद। *जवाहिर अल-कुरान* (कुरान के गहने)। कुआलालंपुर, मलेशिया: मलाया प्रेस विश्वविद्यालय, 1977। पीपी 19-33।

[10] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: अल-शरीफ, मुहम्मद महदी। *इह्या उलूम अद-दीन* (धर्म के विज्ञान का पुनरुद्धार)। बेरूत, लेबनान: दार अल-कोतोब अल-इल्मियाह, 2011। खंड 3, पीपी 22-28, 35-38।

[11] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: अंसारी, इकबाल हुसैन। *मिन्हाज अल-आबिदीन* (उपासकों के लिए सबसे अच्छा तरीका)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशात, 1998। पीपी 363-369।

[12] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद (उर्दू अनुवाद से): हसन, इरफान। *अयुहाल वलाद* (मेरा प्यारा बेटा या बेटी)। *मज्मूआ रस-इल इमाम ग़ज़ाली* (इमाम ग़ज़ाली की लघु पुस्तकों का संग्रह): कराची, पाकिस्तान: दारुल इशात, 2004। खंड 1, पृष्ठ 13-17। अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया: http://www.ghazali.org/books/My%20Dear%20Beloved%20Son.doc

[13] अल-ग़ज़ाली, मुहम्मद। अंग्रेजी अनुवाद: अंसारी, इकबाल हुसैन। *मिन्हाज अल-आबिदीन* (उपासकों के लिए सबसे अच्छा तरीका)। कराची, पाकिस्तान: दारुल इशात, 1998। पीपी 401-411।



यह ग्रंथ पाठकों को महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाने और मानव उपलब्धि के शिखर की ऊंचाइयों तक पहुंचने की चुनौती देता है, जीवन में सच्चे उद्देश्य और दिशा की कमी के कारण निराशा और कम उपलब्धि की गहराई में डूबने के बजाय, सांसारिक के प्रति अवचेतन समर्पण और सामान्य के साथ संतोष। यह ग्रंथ, जैसे-जैसे प्रगति होती है, मनुष्य की संभावित और वास्तविक क्षमता और मूल्य की कला को दिखाती है, जो बदले में अमर अनंत काल के जीवन में शाश्वत खुशी और अंतहीन सफलता की ओर ले जाती है। मानव शरीर, मन और बुद्धि की सीमाएं, समय और स्थान के आयामों की बाधाओं में फंसी हुई हैं, इसके दिल और आत्मा की ऊंचाई से, एक बार इसे पकड़ने वाली बेड़ियों से मुक्त होने के बाद, मुआवजे से अधिक हैं। यह ग्रंथ व्यक्ति को शाश्वत सुख और कभी न खत्म होने वाली सफलता के अथाह सागर की ओर ले जाता है, जो व्यक्ति को शाश्वत आनंद के मार्ग पर मजबूती से आगे बढ़ाता है, जागरूकता और आध्यात्मिक रोशनी के नए पहले से अज्ञात रास्ते खोलता है और शाश्वत सत्य के उदय में परिणत होता है।